संवेदना

हृदयस्पर्शी भक्तिगीत

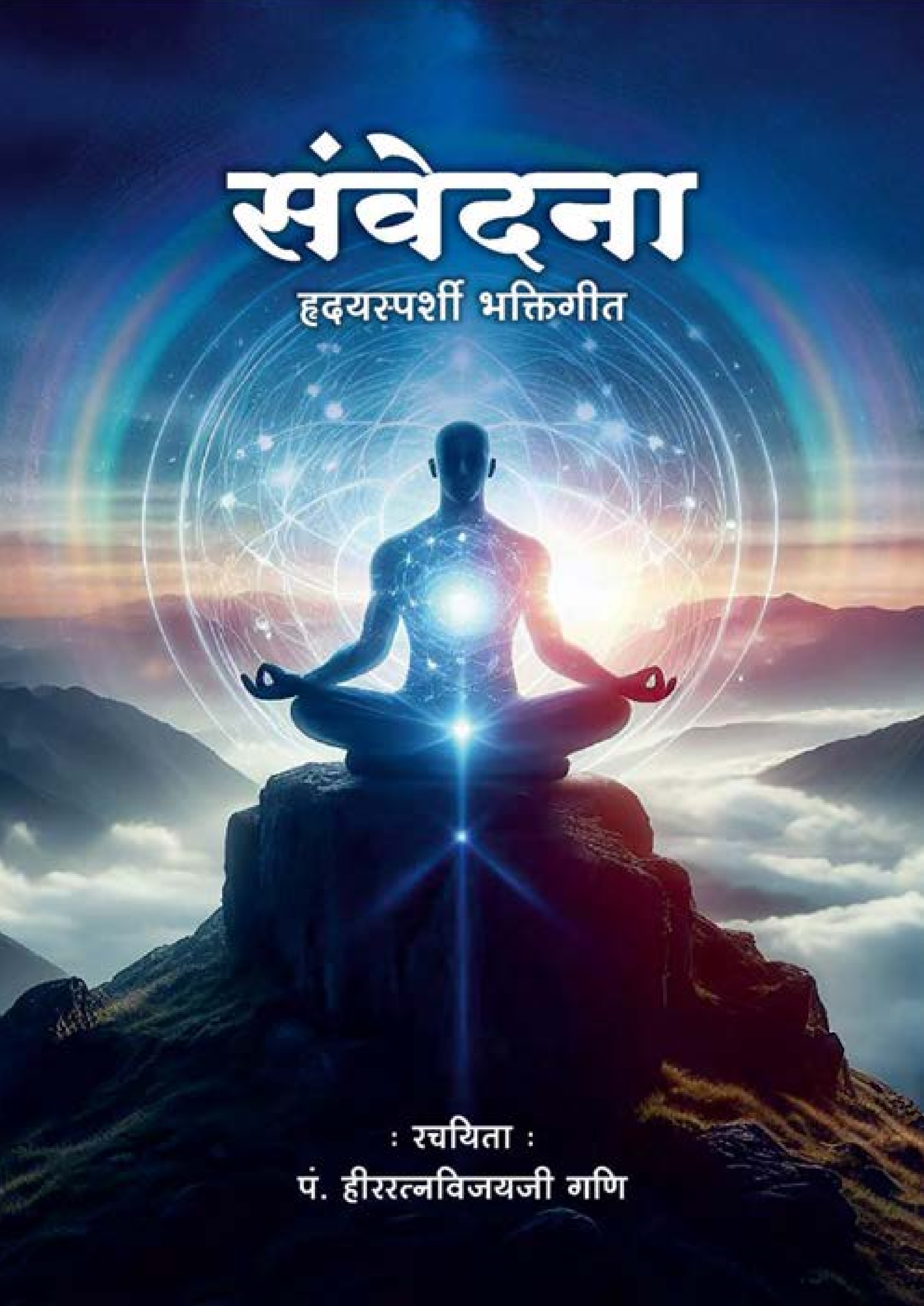

: रचयिता :

पं. हीररत्नविजयजी गणि

जपकोटीसमं ध्यानं, ध्यानकोटीसमो लयः ।
लयकोटीसमं गानं, गानात् परतरं न हि ॥

अर्थात् करोड़ों जाप के जितना मूल्य ध्यान का है, करोड़ों ध्यान के समान मूल्य लय का है, करोडों लय के समान मूल्य गान का है और गान से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है । ऐसे भक्तिगीत भक्तों को – श्रोताओं को समाधि दशा प्राप्त करवा सकते हैं ।

आत्मा को परमात्मा बनाने का मार्ग बताने वाली तथा भक्तियोग और ज्ञानयोग के नीचोड़ समान हृदय स्पर्शी भक्तिगीतों से भरपूर पुस्तक 'संवेदना' के गीतों को संगीत के साथ सुनना चाहते हो एवं इन गीतों पर बने हुए Video को देखना चाहते हो...

इस संसार में आरोग्य सुख–शांति–समृद्धि और सफलता प्राप्त करने के वास्तविक रहस्यों को समझना चाहते हो...

आपके मन में रहे हुए जीवन तथा अध्यात्म संबंधित सवालों का तर्कपूर्ण तथा संतोषकारक समाधान पाना चाहते हो तो हमारी वेबसाईट तथा यु ट्युब चेनल पर रखे हुए सभी विडीयो को अवश्य देखें...

Website : www.Bhagwankajawab.com

E-mail : bhagwankajawaab@gmail.com

Join us with : Bhagwan ka jawab

To JOIN our Whatsapp Group :

(M) 88663 55762 - Good Life के नाम से नंबर **Save** करे तथा अपना नाम एवं शहर का नाम लिखकर मेसेज भेजे ।

Join me in "bhagwan ka jawab"

॥ ॐ ह्रीँ अर्हं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष जितेन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ ऐं नमः ॥

संवेदना

(हृदयस्पर्शी भक्ति गीत, धुन एवं स्तुतियां)

*** आशीर्वाददाता ***

दीक्षा दानेश्वरी आचार्य भगवंत

श्रीमद् विजय गुणरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

प्रवचन प्रभावक आचार्य भगवंत

श्रीमद् विजय रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

रचयिता : पंन्यास श्री हीररत्न विजयजी गणि

*** प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान ***

परम प्रीत परिवार

मितेश भाई – अहमदाबाद

मो. :- 9426593189

कीमत: 100/- रुपये ई. स. २०२५ आवृत्ति – सप्तम

वि. सं. २०८१ वीर सं. २५५१

प्रस्तावना...

अनादि काल से इस संसार में सुखी बनने के लिये हमारी आत्मा ने आज तक अनगिनत प्रयत्न किये फिर भी स्थाई सुख नहीं मिला और बार-बार नया-नया दुःख आये बिना रहा नहीं। इसका मूल कारण यहीं है कि सुख की खोज ऐसे स्थान पर है जहाँ पर सुख का नामोनिशान भी नहीं है।

अगर वास्तव में शाश्वत् सुख को पाने की तीव्र आकांक्षा है और इस संसार के दुःखों से हमेशा के लिये मुक्त होना ही चाहते हैं तो ऐसा कौनसा काम करें कि हमारी यह इच्छा पूरी हो ?

उसका जवाब है, "आत्मज्ञान प्राप्त करके अपनी आत्मा के भीतर रहे हुए परमात्म तत्त्व को प्रकट करना।" हमारे जीवन में आने वाले समस्त दुःखों को हमेशा के लिये अलविदा कैसे करे ? अपनी आत्मा को परमात्मा कैसे बनाए ? भगवान बनने के लिये हमारा वर्तमान जीवन कैसा होना चाहिए ? यहीं बात इस पुस्तक में संवेदनात्मक भक्तिगीत एवं स्तुतियों के माध्यम से बताई गई है।

योगग्रंथों के अनुसार जिसके जीवन में परमात्मा के प्रति अतिशय प्रीति और अहोभाव युक्त भक्ति हो ऐसा व्यक्ति ही परमात्मा के निकट पहुँच सकता है। परमात्मा के प्रति प्रीति और भक्ति बढ़ाने के लिये यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। इसके नित्य उपयोग द्वारा हम सभी शीघ्र ही परमात्म पद को प्राप्त करके अनंत शाश्वत सुख के भोक्ता बनें यही शुभाभिलाषा.....!

पंन्यास हीररत्नविजय

(1) प्रभु भक्ति संबंधित हिंदी गीत :-

1. अनंत भवों में दुर्लभ जो (11)
2. हर आफत आशीष बन जाए (12)
3. भव समंदर का किनारा तू (13)
4. सुनो ना मेरे प्रभुवर (14)
5. केसरिया मेरे आदिनाथजी (15)
6. ना लेना जनम अब रे (16)
7. मैं हूँ बस वहीं (17)
8. आया तेरी शरण (18)
9. जैसे अंधे को नज़र (19)
10. चलना है अब मुझे (20)
11. प्रभु अब तुझको जाना (21)
12. जीना-जीना (22)
13. मैं नित करता गलती (23)
14. Reply of God to PK (24)
15. तेरा संग प्यारा (25)
16. भगवान मुझे भूल ना जाना (26)
17. प्रभुवर तेरा परचा बड़ा है (27)
18. तेरा प्रभु हो साथ सदा (28)
19. मैंने प्रियतम तुझे मेरा माना (29)
20. ओ प्राण प्यारे मेरे नाथ (30)
21. अर्पण कर दुं सब तुझको (31)
22. मुझे मुक्ति दो (31)
23. शासन गीत – (जैन एंथम) (32)
24. जैन जागृति गीत (33)

25. जय हो जिनशासन (शासन वंदना) (34)
26. जिनशासन वंदना गीत (35)
27. प्रभु तेरा ये कैसा रहम (36)
28. तू ही तू ही अब दिल ये पुकारे (37)
29. आज प्रभु मोरे घट आओ (38)
30. मुझको सुख इस जहाँ में (39)
31. प्रभु अब तुझसे दिल लगाना है (40)
32. ओ मेरे भगवान (41)
33. मेरे भगवान ओलवेज उपकारी (42)
34. जब सबने ही मुझे ठुकराया (43)
35. मुझको प्रभु बस तेरी याद आई (44)
36. अरिहंत परमात्मा की आरती (45)
37. हे परमेश्वर... हे जगनाथ... (46)
38. पार्श्व शंखेश्वर मेरो (46)
39. महावीर की बातों को (47)
40. जब अपना यहाँ नजर (48)
41. नित्यं णमो नवकार मंत्रं (49)
42. बस ऐसी हो मेरी आरजु (50)
43. मेरी आरजु (51)
44. परमेश्वरा तु ही मेरा प्राणेश्वरा (52)
45. धर्म ही सुखदायी (54)
46. ये दुर्गुण ही हमें भटकाते है (55)
47. दिया जनम जिसके लिये (56)
48. चार दिनों की चांदनी (57)
49. भगवान का जवाब (58)

50. प्रभु की चिट्ठी (59)
51. कोई तेरे खातिर है मर रहा.. (61)
52. भगवान बनने का मार्ग (62)
53. दुर्लभ मिला है तुझको (64)
54. अंतर यात्रा (65)
55. होता है उसका जय-जयकारा (66)
56. जागो रे... जागो रे... (67)
57. विश्व शांति गीत (अहिंसा गीत) (68)
58. End of the Love (Part-1) (69)
59. आया कोरोना, अब तो जागो ना (70)
60. प्रजा के मन की बात (देश भक्ति गीत) (71)
61. कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम् (देश भक्ति गीत) (72)
62. आओ भारत को ना बनाए. (देश भक्ति गीत) (73)
63. वंदे मातरम् .... वंदे मातरम् (देश भक्ति गीत) (75)
64. भारत माता के वीरो (देश भक्ति गीत) (76)
65. कोमेडी सोंग (77)
66. ग्रंथ विमोचन गीत (78)
67. श्रुतज्ञान गुणगान (79)
68. एवा छे आ ज्ञान भंडारो. (80)

(2) प्रभुभक्ति संबंधित गुजराती गीत :-

69. भगवाननो जवाब (82)
70. प्रभु वीरनुं नवु हालरडुं (83)
71. एवुं दे वरदान...... (85)
72. फरी लेवो पडे ना जनम (86)

73. जगना तारणहार (87)
74. प्रभु तुं तो मारो छे जीवन आधार (88)
75. ओ करुणाना सागर प्रभु (90)
76. आत्म संवेदना (91)
77. स्मरणमां ने सुपनामां (92)
78. सामु जुओने मारी (93)
79. करुणासागरनुं बिरुद (95)
80. श्री आदिनाथ धुन (96)
81. आत्मनिंदा (97)
82. आ संसार छे असार (सज्झाय) (98)
83. अमे सुखी थवाना (99)
84. मारा जीवननी आश तमे (100)
85. अमे नरके जवाना (कोमेडी सोंग) (101)
86. वर्षीतप पारणा गीत – लेता नथी (102)
87. वर्षीतप पारणानुं गीत – ४०० उपवासना (103)
88. रसना देवीने वश न थनारा (तपश्चर्या) (104)
89. प्रतिष्ठा वधामणा गीत (105)
90. पर्युषण पर्व क्षमापना गीत (106)
91. उपधान तप वधामणा गीत (107)
92. End of the love (Part-2) (108)

(3) अन्य गीत :-

93. 14 स्वप्न नृत्य गीत (110)
94. अरिहंत वंदना धून..... (119)
95. तपो वंदना धून ... (122)

96. आत्म स्मरणावली (धून) (125)
97. प्रभु पार्श्वनाथ स्तुति (128)
98. संवेदना पच्चीसी (129)
99. श्री महावीर + कल्पसूत्र वंदनावली (140)
100. पंचसूत्र परिभावना (150)
101. भारत विश्वगुरु था पहले (155)
102. नवकार अष्टक (156)
103. आंतर प्रार्थना (158)
104. भावश्रामण्य झंखना .. (159)
105. भाव श्रमण के सप्तगुण की संवेदना (161)
106. वर्षीतप के पारणा का गीत – आज वर्षीतप का पारणा (164)

(4) गुरु गुण गंगा :-

107. गुरु तुम कहाँ गए ? (166)
108. गुरु मोरे मन आयो (166)
109. नहीं देखा भगवान को मैंने (168)
110. वंदे गुरुवरम् (169)
111. तुम रखना ध्यान मेरा, गुरुवरा (170)
112. गुरुभक्ति गीत (171)
113. आचार्य पद गुण गरिमा (172)
114. आचार्य पद स्तवना (173)
115. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरि गुणगान-1 (174)
116. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरि गुणगान-2 (175)
117. श्री प्रेमसूरीश्वरजी यशोगाथा (176)
118. सूरिप्रेम भक्ति गीत (178)

119. भुवनभानुसूरि गुणगान (179)
120. जितेन्द्रसूरि गुणगान (180)
121. सूरिजितेन्द्र वंदनावली (181)
122. दीक्षा दानेश्वरी प्यारा (183)
123.पंन्यास चंद्रशेखर विजयजी विरह गीत (184)
124. श्री रश्मिरत्नसूरि यशोगाथा (185)

(5) दीक्षा संबंधित गीत :-

125. संयम उपकरण वंदना – 1 (188)
126. दीक्षा मन को सुहाई (189)
127. संयम उपकरण वंदना – 2 (190)
128. कर रहे हम विदा (191)
129. मुमुक्षु विदाई गीत (192)
130. महाभिनिष्क्रमण (193)
131. दीक्षा महोत्सव के महत्त्वपूर्ण गीत (194)
132. आओ ऐसा संयम जीवन (195)
133. भाव संयमी की जीवनचर्या (196)
134. दीक्षार्थीनो जय जयकारा (198)
135. संयम अभिलाषा (199)
136. दीक्षा लेवी दीक्षा (200)
137. अब तो मुझे भी बनना है बस (201)

(6) अन्य निर्मित गुजराती गीतों की हिंदी रचना

138. साधु बने वो महान् (202)
139. ओघा है अनमोला (203)
140. जा संयम पंथे दीक्षार्थी (204)

141. साधना का पंथ (205)
142. मां की ममता (206)
143. संयम झंखना (207)

अगर आप अपना जीवन शांति से पूरा करना चाहते हैं तो आपको **Telrgram App** में नीचे दिखाए गए चैनल और ग्रुप और उनमें रखी गई चीजों को जरूर देखना चाहिए।

(1) भविष्य में क्या परेशानियां आने वाली हैं इसकी जानकारी के लिए :- **Better Life For You.**

(2) घातक टीकों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए :- **Detox All Toxin.**

(3) वर्तमान में होने वाली बीमारियों के देशी इलाज के लिए :- **Treatment Of Human Body.**

(4) टीवी और न्यूज पेपर में जो बताया जाता है वह कितना गलत है यह जानने के लिए :- **Agenda 21.**

(5) वर्तमान शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार फर्जी है यह जानने हेतु :- **Dangerous Education System.**

(6) अपने बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए संस्कारवर्धक वीडियो का संग्रह :- **Bhagwan Ka Jawab.**

(7) जैन भूगोल किस प्रकार से सच्चा है उसके सबूत देखने के लिये :- **The Real Shape Of World.**

(8) जीवन को उपवन बनाना हो तो :- **Life Development Session.**

(9) अगर आप धार्मिक कार्यक्रमों का संचालन कर सको ऐसे विशिष्ट वक्ता बनना चाहते है तो :- **Speech Power Workshop**

प्रभुभक्ति संबंधित हिंदी गीत विभाग

1. अनंत भवों मे दुर्लभ जो

(तर्ज : महोब्बत बरसा देना तू)

अनंत भवों में दुर्लभ जो, जन्म वो पाया है,
प्रभु अब तुम सम बनने का, मौसम आया है,
सबको भूला के अब, तुझको मनाना है,
इश्क में तेरे पागल बन जाना है,
तेरी ही बात में मुझको, ऐतबार आया है... अनंत भवो में...

अब तो एक पल की भी जुदाई सही जाए ना,
जब तक ना मिले तू यहाँ चैन मुझको आए ना,
आना है अब तेरे पास दुनिया सारी छोडकर,
अब ना और भटकना है, जग के पीछे दौडकर,
हुए सभी यहाँ अवतार है मेरे,
जहाँ सुख से भी ज्यादा दुःख पाया है
मरण को शरण में करने का जन्म ये पाया है... प्रभु अब... १

दुनिया कहे पागल मुझे तो भी उसे कहने दो,
तेरे ही खयालों में प्रभुवर मुझे रहने दो,
जब-जब तुझको भूला हूँ मैं, खाई मैंने मार है,
जग को जीता है पर मैंने, पाई खुद से हार है,
गैरो की क्या यहाँ बात करुं मैं,
मुझे अपनोने भी ठुकराया है,
आत्म का '**हीर**' जगे ऐसा, जन्म ये पाया है... प्रभु अब... २

2. हर आफत आशिष बन जाए

(तर्ज - मैं और तुम गर हम हो जाते)

हर आफत आशिष बन जाए
तु जो प्रभु मेरे दिल में आए²
जग की सब इच्छा मिट जाए...
तू जो प्रभु...

तेरे बिना, मैं जाऊ कहाँ ?
ना कोई मेरा है यहाँ
जीवन का मकसद मिल जाए...
तु जो प्रभु....

भवोभव भटका सुख ना पाया, हार के तेरे द्वार पे आया
तुझमें जो खो जाए, मन की शांति पाए,
दुःख के दिन में भी वो हंसता है यहाँ ,
जन्म-मरण का भय न सताए,
तू जो प्रभु मेरे दिल में आए²,
जग की सब...१

कौन है अपना, कौन पराया,
तुझसे ही जग का सार है पाया
सजना तुझको बनाऊं, तुझ पर मैं मर जाऊं
तुझको ही पाने अब रहुं मैं जिंदा,
तेरा '**हीर**' मुझे मिल जाए,
तू जो प्रभु मेरे दिल में आए²,

जग की सब...२

3. भव समंदर का किनारा तू

(तर्ज - मुस्कुराने की वजह तुम हो)

भव समंदर का किनारा तू, मेरे आतम का सहारा तू
प्रभु तू ही है, तू ही है, तू ही है, मेरा राहबर[2]
छोडा मुझको, क्यों अकेला यहाँ , आना चाहुं , रहता है तू जहाँ
प्रभु तू ही है, तू ही है, तू ही है, मेरा राहबर[2]

तुने बतलाया, स्वार्थी जग सारा,
सुख के बदले, दुःख ही पाए, गर लगे प्यारा,
बात तेरी सुने, फिर भी पाप करे,
ऐसे जीवों ने यहाँ पर, भव अनंत धरे,
प्रभु तू ही है, तू ही है, तू ही है, मेरा राहबर[2]
राहबर...१

ना रुचि फिर भी, तुझसे प्रीत करे,
चौरासी के चक्र में वो, फिर ना जन्म धरे,
तेरी बात सुनुं, सद्‌बुद्धि तू दे,
तेरे सम मैं भी बनुं, यह '**हीर**' मुझको दे
प्रभु तू ही है, तू ही हैं, तू ही है, मेरा राहबर[2]
राहबर...२

दुनिया को सुधारना असंभव है, स्वयं को सुधारना संभव है।
जो असंभव का त्याग
कर संभव कार्य करता है, वहीं बुद्धिमान कहलाता है।

4. सुनो ना मेरे प्रभुवर

(तर्ज - सुनो ना संगेमरमर)

सुनो ना मेरे प्रभुवर जग रखवाले, जीवन ये मेरा तेरे हवाले
आज से दिल में मेरे स्थान तुम्हारा, गान तुम्हारा,
सुना है मैने तू ही जग को संभाले,
कहुं मैं इतना ही मुझको बचा ले,
थामा है अब तो मैंने हाथ तुम्हारा, साथ तुम्हारा,
सुनो ना मेरे प्रभुवर...
बिन तेरे जीवन पूरा, लगता था मुझको अधूरा,
जब से सुना है तुझे, लगता है अब युं मुझे, सब मिल गया है,
सुना है तेरी बातें जो अपना ले, धन तो क्या तेरा पद वो कमा ले,
बन जाए तत्क्षण ही वो किसमत वाला, सबसे निराला
सुनो ना मेरे प्रभुवर जग रखवाले... (१)

आंखों में तू ही मेरे, सपने भी आए तेरे,
रातो में रोता रहूँ , किसको ये बातें कहूँ , तू ही बता दे
सुना है तुझको जो लक्ष्य बना ले,
जग में यहाँ फिर जन्म वो ना ले,
'**हीर**' कहे वो बने जग का सहारा, तारणहारा,
सुनो ना मेरे प्रभुवर जग रखवाले... (२)

मरते दम तक दुःखी ना होना पड़े ऐसा जीवन जीये

वह 'बुद्धिमान' ऐसा नहीं, परंतु मरने के बाद में भी दुःखी

ना होना पड़े ऐसा जीवन जीये उसे 'बुद्धिमान' कहते हैं ।

5. केसरीया मेरे आदिनाथजी

(तर्ज - केसरीया तेरा इश्क है...)

प्रभु तेरा दर्श दिखा दे जरा, प्रभु तेरे नजदीक ला दे जरा,
आया हूँ मैं शरण तेरी, ना फिरना है मुझे लाख चौरासिया,
पाना है तेरा ही पद मुझे और करना है अब मुझको भी केसरिया
केसरिया मेरे आदिनाथजी, तेरे रंग से मैं खुद को रंगाऊ
मन लागे मेरा तेरी बात में, तेरी ईच्छा को मैं सर पे चढाऊ

(अंतरा)

पतझड सा मन ये मेरा, सावन सा तू है मिला
मानव का जन्म मेरा, तुझको पाने से खीला
आतम तरसे ये मेरा, तेरे स्पर्शन को सदा
मैं हूँ अर्जुन और कृष्ण तू मेरा....
शत्रुंजय तीरथ है तेरा, तू '**हीर**' मेरा अब तो प्रगटा
पाना है तेरा ही पद मुझे, और करना है अब मुझको भी केसरिया
केसरिया मेरे आदिनाथजी, तेरे रंग से मैं खुद को रंगाऊ
मन लागे मेरा तेरी बात में, तेरी ईच्छा को मैं सर पे चढाऊ

‘मरने के बाद पीछे वालों का क्या ?’
इसकी जितनी चिंता करते है उतनी ही चिंता
‘ मरने के बाद मेरा क्या ?’
उसकी हम करने लगे तो आगे जाकर बार-बार मरना ही नहीं

6. ना लेना जनम अब

(तर्ज - सनम रे, सनम रे)

भीगी भीगी आँखो से मैं, तेरा इंतजार करुं
होठों से नहीं दिल से, बस तेरा ही नाम धरुं,
तुझको मैं यु खोजुं, के तुझमें ही खो जाऊं,
होले-होले जीवन मेरा, प्रभु तेरे हवाले करुं,
जनम रे, जनम रे, ना लेना जनम अब रे^{2}
शरण रे, शरण रे, आया तेरी शरण अब रे... जनम रे....
तेरी कृपा जो मुझको मिले तो, मिटे मेरे मरण रे... जनम रे...

जो मिला मुझको यहाँ , संतोष उसमें नहीं है,
खोजता मैं रहा यहाँ , पर सुख तो और कहीं है,
सुख को पाने की आशा में, बस यातनाए सही है,
मेरे ये भ्रम सब तोड दिये, कहा धरम तुने मेरे लिये,
प्रभु तुने ही बदला है मुझको, इसमें ना वहम रे,

जनम रे, जनम रे...१

पागलों की तरह ही तो, मैने जीवन ये बिताया है,
भव अनंत घुमाए जो, उन दोषों को बढाया है,
सब सुखों का आधार जो, उस धर्म को भूलाया है,
मेरा अब एक सहारा है तू, आतम को मेरे जगाया है तू,
तेरा '**हीर**' ही अब तू दे मुझे, मैने माना तुझे सनम रे,
जनम रे, जनम रे, ना लेना जनम अब रे,
शरण रे, शरण रे, आया तेरी शरण अब रे

जनम रे, जनम रे...२

मृत्यु से नहीं परंतु जन्म से जो डरते है, उनके ही जन्म-मरण बंद होते हैं।

7. मैं हूँ बस वहीं

(तर्ज - तू है के नहीं ?)

मुझको प्रभु तू इतना बता दे, मेरे हृदय के भीतर तू है के नहीं ?
तुझको जहाँ में ढूंढता फिरा मैं, मठ और मंदिरो में तू है के नहीं ?
पर तुने ही बताया तेरा पता
जहाँ हिंसा नहीं, जहाँ इच्छा नहीं,
मैं हूँ बस वहीं, मैं हूँ बस वहीं,

ना ही सोचा, ना ही समझा, पाने जैसा क्या यहाँ ?
ना ही खोजा, दुःखरहित जो, वो ठिकाना है कहाँ ?
धन के खातिर, खुद को बेचा, दुर्गुणों को ही भरा,
तुझको पाने का ही नाटक, करता भवोभव में फिरा,
पर तूने ही बताया तेरा पता, जहाँ माया नहीं,जहाँ ममता नहीं,
मैं हूँ बस वहीं, मैं हूँ बस वहीं...१

इस जीवन में, जो खुशी है, उसकी तू ही है वजह,
तू जो मुझ पे, खुश हुआ तो, देता तेरी ही जगह,
सोच मेरी, है अधूरी, पर तमन्ना ये रहे,
खोज मेरी, अब हो पूरी, '**हीर**' इतना ही कहे
पर तुने ही बताया तेरा पता
जहाँ ईर्ष्या नहीं, जहाँ निंदा नहीं,
मैं हूँ बस वहीं, मैं हूँ बस वहीं... २

भाग्य से अधिक और समय से पहले
ना कभी किसी को मिला है और ना कभी मिलेगा...

8. आया तेरी शरण

(तर्ज - सुन रहा है ना तू)

तेरी कृपा मुझ पे बहा दे...
भगवन्... भगवन्... भगवन्···

मुझको सद्बुद्धि दे, मन की विशुद्धि दे,
आतम से छलके ऐसी गुणों की समृद्धि दे,
जग से विरक्ति दे, तेरी ही भक्ति दे,
तेरी ही राहों पे मैं, चलुं ऐसी शक्ति दे,
तेरी कृपा मुझ पे बहा दे, मेरा सोया आतम जगा दे,
आया तेरी शरण^2 , कर दे तू रहम^2
आया तेरी शरण^2 , कर दे तू अब रहम...

मंजिले भूला हूँ , भटका हूँ रासता,
मुझको अब ले जा, जहाँ तू है शाश्वता,
तू मेरा भगवन है, तू मेरा जीवन है,
तेरी कृपा मुझ पे बहा दे, मेरा सोया आतम जगा दे...
आया तेरी शरण... १

दर्शन मिला तेरा, दूर हुए सब भरम,
स्पर्शन भी देकर, कर धन्य मुझ जनम,
तू काल अनंते मिला, अब तेरा '**हीर**' दिला,
तेरी कृपा मुझ पे बहा दे, मेरा सोया आतम जगा दे...
आया तेरी शरण...२

जो अंदर से गुणवान नहीं बन सकता ,
वह कभी महान भी नही बन सकता ।

9. जैसे अंधे को नजर

(तर्ज - जैसे बंजारे को घर)

जिसे पाने मैं भवोभव भटका, उस शाश्वत सुख का ठिकाना,
जहाँ भव भ्रमणा रुक जाए, उस मोक्ष में है अब जाना,
जहाँ फिर कभी दु:ख ना आए, सब जन्म-मरण मिट जाए,
परमातम खुद बन जाए, दुर्गुण जो दूर हो जाए,
हम्.... इस बात से बेखबर, मैं भटकता था मगर,
प्रभु मुझको तू मिला है, जैसे अंधे को नजर2
तेरी अमृत सम असर, जो कर देती अमर, प्रभु मुझको...

तू ही भव का किनारा, आतम का सहारा,
तुझसे रहा था दूर मैं मगर,
तेरी बात ना मानी, बस खुद की ही तानी,
अंधियारा किया जीवन में जानकर,
भव है भयानक भूल गया, बस पापों को किया,
दुर्गुण से मुझको तू छुडा रहा...
हम्.... जैसे रोगी को वैद्य घर, या रण में जल नहर,
प्रभु मुझको तू मिला है, जैसे अंधे को नजर... १

हर कोई दु:खी है, तन-मन या धन से,
पर सुख की आशा तो सबकी है अमर,
ना किसका यहाँ पर कोई सुख टिकता है,
बस रेत में ही बांधे है अपने घर
अब समझा हूँ सभी मैं यहाँ के खेल में खतरा बडा,
प्रभु तूने दिया है ज्ञान पूरा,
मैं आऊं तेरी डगर, तेरा '**हीर**' मिले अगर, प्रभु मुझको... २

10. चलना है अब मुझे

(तर्ज - क्यारे बनीश हुं साचो रे संत)

चलना है अब मुझे प्रभु तेरे पंथ,
करना है अब मेरे जन्मों का अंत...

जो भी मिला वो लेने में दौडा ,
जन्मा हूँ क्यों मैं , सोचा ना थोडा ,
लिखना नहीं फिर भूलों का ग्रंथ ,
करना है अब मेरे जन्मों का अंत
चलना है अब...१

बहुत सहा जब समझ नहीं थी,
सहा नहीं जब समझ सही थी,
सहने में ही अब पाना आनंद,
करना है अब मेरे जन्मो का अंत
चलना है अब ... २

भटका था अब तक सुख को पाने,
दुःख ही मिला मुझे सुख के बहाने,
पाना है अब निज '**हीर**' अनंत,
करना है अब मेरे जन्मो का अंत
चलना है अब...३

अगर आप पेंसिल बनकर
किसी का 'सुख' नहीं लिख सकते तो
रबर बन कर दूसरों का 'दुःख' तो जरूर मिटा सकते हैं।

11. प्रभु अब तुझको जाना

(तर्ज - कभी जो बादल बरसे)

प्रभु अब तुझको जाना, बना तेरा मैं दीवाना,
मिले अब गम या खुशियां, ना भूलुं तुझे
तुझे मुश्किल से पाया, तू बन जा मेरा साया,
जुदा ना होना मुझसे प्रभुवरा...

पहले कभी तुझे मैने देखा नहीं,
और तेरी बात भी तो सुनी नहीं,
मिला है मुझको अब तू यहाँ ,
तेरे बिना भटका मैं जहाँ ,
पाया था मैने दुःख ही बस वहाँ ,
ओ प्रभुवरा...
तू मेरा... तू मेरा नाथ है, तू मेरे... तू मेरे साथ है
प्रभु अब तुजको जाना... १

तू जो मिले, मेरे दुर्गुण टले,
और मुझे शांति सद्गति मिले,
ना चाहुं तूझे फिर भी तू मुझे,
तेरे ही चरणों में स्थान दे
तेरे ही सम '**हीर**' से मैं बनुं, तुझ समा...
प्रभु अब तुझको जाना... २

जो पसंद है उसे पाने के लिए व्यर्थ प्रयास करने के बदले ,
जो मिला है उसे ही पसंद करना सीख लो तो खुशी आपके हाथ में ही है।

12. जीना-जीना

(तर्ज - जीना – जीना)

पतझड सा था मेरा तन-मन, तुने किया सावन,
अब धन तो क्या, पूरा जीवन, कर दूं तुझे अर्पण,
सिखाया तुने जीना-जीना, कैसे जीना,
सिखाया तुने जीना मुझे भगवन्...

ना और कहीं जाना-जाना, कहीं जाना,
ना तेरे बिना जाना कहीं भगवन्

जो साथ ना कभी छोडे, वो मिला है अब साजन,
तेरी प्रीत से करुं मैं भी, परमात्म पद अर्जन,
है अब तुझे माना-माना, तुझे माना,
है अब तुझे माना मेरा प्रीतम,

ना और कहीं जाना-जाना, कहीं जाना,
ना तेरे बिना जाना कहीं भगवन्

अब मैने अनुभव पाया, तेरी ही बात खरी है,
अवसर ने समझाया, दुनिया ये स्वार्थ भरी है,
तेरे ही पास में आने, हुआ मेरा सर्जन,
ओ तेरे '**हीर**' से मेरी हर क्षण वन से बने उपवन,
अब धन तो क्या पूरा जीवन कर दूं तुझे अर्पण,
सिखाया तुने जीना-जीना कैसे जीना
सिखाया तुने जीना मुझे भगवन्

ना और कहीं जाना-जाना, कहीं जाना,
ना तेरे बिना जाना कहीं भगवन्

13. मैं नित करता गलती

(तर्ज - मैं तेनु समझावा की)

तू प्रभु उपकारी, तू प्रभु तू प्रभु[4]...

मैं नित करता गलती, ना सुनी तेरी मरजी[2],
तू रखे नित ध्यान मेरा, मैं भूला उपकार तेरा,
तू कर भूल माफ मेरी, मैं नित करता गलती...

तेरी कृपा से आज ये मैने, दुर्लभ जन्म है पाया,
तुने जो छोडा उसको पाने, जीवन व्यर्थ गंवाया,
मुझे प्रभु... हाय... इतना बता, मैं जाऊं कहाँ ?
तू है आधार मेरा, मैं भूला उपकार तेरा,
तू कर भूल माफ मेरी, मैं नित करता गलती...१

तू प्रभु कहाँ चला गया ?[2] मुझे यूं छोड के,
मुझे भी बुला दे वहाँ ,[2] आऊं मैं दौड के,

पापी अधम भी, तुझको पाकर तेरे सम बन जाए,
जैसा भी हूँ , पर तेरा हूँ , मुझको क्यों न बचाए,
तेरी दया... हाय... '**हीर**' मेरा, है प्राण मेरा,
तू हरे संसार मेरा, मैं भूला उपकार तेरा,
तू कर भूल माफ मेरी, मैं नित करता गलती... २

अगर आपको दु:ख पसंद नहीं है तो दोषों से दूर ही रहना होगा क्योंकि दु:ख का मूल ही दोष है और दोषों को कम करने के लिए दुष्ट तत्त्वों से दूर रहना जरूरी है।

14. Reply of God to PK

(तर्ज - भगवान है कहाँ रे तू)

तेरी हर गलती मैं हरदम माफ करता हूँ ,
मेरा पद देने तुझे तैयार करता हूँ ,
भगवान कह रहे हैं युं, इन्सान सुन ले मेरी तू...

तुझको सारे सुख यहाँ पर मैं दिलाता हूँ ,
आफतों में भी तुझे हंसना सिखाता हूँ ,
भगवान कह रहे हैं यूं, इन्सान सुन ले मेरी तू....

धन पाने मरे, यम से तू डरे, ना पता है क्यों जन्मा यहाँ ?
जो मिला है तुझे, वो कम ही लगे, ले जाएगा साथ में क्या ?
ले जाएगा साथ में क्या ? ले जाएगा साथ में क्या ?
सुख में भूले, दुःख में ही क्यों मुझे बुलाता है ?
जानकर क्यों दु:खभरे अवतार पाता है ?
भगवान कह रहे है यूं, इन्सान सुन ले मेरी तू.... १

भव अनंत धरे, हर बार करे, सुख पाने पुनरावर्तना,
सुख बिंदु मिला, दु:ख सिंधु मिला, अब कर दे तू परिवर्तना,
अब कर दे तू परिवर्तना, अब कर दे तू परिवर्तना,
फिर ना जन्म हो, ऐसा मैं आराम देता हूँ ,
मेरा '**हीर**' मिले तुझे ये इनाम देता हूँ ,
भगवान कह रहे है यूं, इन्सान सुन ले मेरी तू २

खाना, पीना, सोना, मिलना, वचन विलास ,
ज्यों ज्यों पाँच घटाइए, त्यों त्यों आत्मप्रकाश ।

15. तेरा संग प्यारा

(तर्ज - तेरे संग यारा)

तेरा संग प्यारा, है तारणहारा,
तु जो मिल जाए, मैं छोडुं जग सारा

मेरा भाग्य सवाया है, तेरा दर्शन पाया है,
तेरी बात सुनी तब से, मुझे जीना आया है,
ओ तेरा संग प्यारा, है तारणहारा,
तू जो मिल जाए, मैं छोडुं जग सारा,
तू प्राण आधारा, है सबका सहारा,
प्रभु तुने ही मुझे है सुधारा ...

तेरे बिना यहाँ पर भटका मैं,
दुःख को सुख मान के अटका मैं,
अब मिला है मुझको सुखभरा, वो मार्ग तू,
मेरे चारो तरफ अंधकार है, मुझ पर बस तेरा उपकार है,
मेरे जीवन में प्रगटा ज्ञान का वो तेज तू...
मेरा भाग्य सवाया है... तेरा दर्शन १

अब करुंगा ना कभी गलतियां, तू दे दे प्रभु मुझे माफियां,
मैने पकडा है तेरा हाथ अब, तू जान ले,
अब रहना है तेरे साथ ही, ना होंगे जुदा हम फिर कभी,
बन जाऊं मैं तेरे सम यही, दे '**हीर**' तु...
मेरा भाग्य सवाया... तेरा दर्शन ....
तू प्राण आधारा, है सबका सहारा,
ना लेना अब फिर, मुझे अवतारा... २

16. भगवान मुझे भूल ना जाना

(तर्ज – नई धुन)

भगवान मुझे भूल ना जाना
तेरे सिवा मेरा कोई यहाँ ना ,
भगवान मुझे भूल...

देखी जब से मूरतीया तेरी, उडी आंखों से निंदिया मेरी,
सुनी जब से बाते मैने तेरी, लगी तब से लगन मुझे तेरी,
जागुं सारी-सारी रात, करुं तुझको ही याद²,
और सपनो में गाऊं मैं तेरा गाना...
भगवान मुझे भूल...१

करे तुझसे जो प्रीत सगाई, लगे सुख भी उसे दुःखदाई,
रहे दुःख भी जो जीवन में स्थाई, पर मन में तो शांति सदाई,
करे कर्मों की हान, घटे तृष्णा महान²,
बने तेरे ही जैसा वो तेरा दीवाना...
भगवान मुझे भूल...२

सारा संसार लगता है खारा, लगे तू ही मुझे सबसे प्यारा,
लिया जिसने भी तेरा सहारा,
बना आखिर वो दुनिया से न्यारा,
करे तुझसे जो प्यार, पाए फिर ना अवतार²,
मिले आतम गुण-रश्मि का '**हीर**' खजाना...
भगवान मुझे भूल...३

जब हम भगवान को फल-फूल-प्रसाद चढ़ाते हैं,
उस समय ऐसी भावना रखनी चाहिये कि ,
" हे भगवान ! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं खुद को भी चढ़ा सकुं "

17. प्रभुवर तेरा परचा बडा है

(तर्ज-झिलमिल सितारों का आंगन होगा)

प्रभुवर तेरा परचा बडा है, दुनिया में तेरा नाम बडा है,
भक्त हृदय में आज तुम्हारा धाम बडा है...
प्रभुवर तेरा...

तेरे द्वार पे जो भी आए, खाली हाथ वो जाए ना,
भक्त तुम्हारा दुर्गतियों में, भूल से भी जाए ना,
दोषों से तेरा झगडा बडा है...
दुनिया में तेरा... १

भवसागर के खारे जल में, मीठा तेरा साथ है,
इस दुनिया में सबसे ज्यादा, मीठी तेरी बात है,
मार्ग तुम्हारा सुंदर बडा है....
दुनिया में तेरा...२

स्वारथ की इस दुनिया में बस, तू ही सबसे न्यारा है,
सभी जीव शाश्वत सुख पाए, ऐसा भाव तुम्हारा है,
तेरा ही पद तू देने खडा है...
दुनिया में तेरा...३

तेरे प्यार में जो पागल है, उसने सब कुछ पाया है,
तेरी आतम गुण-रश्मि का, '**हीर**' उसमें आया है,
मोहराज तेरे चरण पडा है...
दुनिया में तेरा...४

मन को जितना ज्यादा " शुभ " में लगाएंगे
उतना ही अधिक " लाभ " मिलेगा।

18. तेरा प्रभु हो साथ सदा

(तर्ज - तेरा मेरा प्यार अमर)

तेरा प्रभु हो साथ सदा, ऐसा मुझे तू स्थान बता,
मिलने तुझे मैं तडपु सदा, अब तो बता दे तेरा पता...

पाप करके नित मैं हँसा, कर्म के कीचड में फंसा,
चाहुं पर निकल ना सकुं, ऐसी है अब मेरी दशा,
जाऊं कहाँ मैं तेरे सिवा ? किसको कहुं मैं मेरी व्यथा ?
तेरा प्रभु हो... १

जानकर मैं सोता रहा, धर्मक्षण को खोता रहा,
भोगसुख को पाने सदा, मैं बहुत ही रोता रहा,
तुझको ही पाने मैं रोऊं सदा, ऐसी मुझे दे रागांधता,
तेरा प्रभु हो... २

सुख में तुझे मैं भूलुं सदा, दुःख में ही ढूंढु मैं तेरा पता,
पाप से ही दुःख जानुं सदा, पर पाप को मैं ना छोडता,
सुख में भी तुझको ना भूलुं कदा, दुःख में भी मुझको दे आनंदिता,
तेरा प्रभु हो... ३

सुख से मुझे दे निःस्पृहता, जग से मुझे दे वैराग्यता,
मुझमें भी प्रगटे वीतरागता, ऐसी मुझे दे सामर्थ्यता,
'**हीर**' कहे प्रभु दर्श दिखा, अब ना मुझे तू और सता,
तेरा प्रभु हो...४

यदि हम सभी जीवों को अपने हृदय में स्थान देंगे तो ही प्रभु भी हमें अपने हृदय में स्थान देंगे।

19. मैने प्रियतम तुझे मेरा माना

(तर्ज – इतनी शक्ति हमें देना दाता)

मैने प्रियतम तुझे मेरा माना, तेरे पीछे ये छोडा जमाना,
मांगू इतना ही तुझसे प्रभु मैं, तेरे जैसा ही मुझको बनाना
आ... हो...

प्रीत तुझसे जो मेरी जुडे ना, मेरे दुःख भी तो मुझसे मुडे ना,
मैं भटकता रहा इस जहां में, मेरी दृष्टि भी तुझ पर पडे ना,
आज सन्मुख है तू मेरे फिर भी, मुझको तू ही लगे ना सुहाना,
मांगू इतना ही तुझसे प्रभु में...१

मैने संसार का सार जाना, स्वार्थ का है ये सारा घराना,
मारकर खुद के मुंह पर तमाचा, अपने गालों को लाल बताना,
मेरे आंसू यहाँ पर सूखे ना, कौन सुनता यहाँ मेरा रोना ?
मांगू इतना ही तुझसे प्रभु मैं...२

तेरी हस्ती भी मैने न मानी, माना तुझको ना मेरा सुकानी ,
नाव मेरी यहाँ डूब रही है, भव समंदर बना है तूफानी ,
मेरी डूबती ये नैया बचा ले, बन के नाविक किनारा दिखाना ,
मांगू इतना ही तुझसे प्रभु मैं...३

तेरी प्रीति जो मुझको मिले तो, बादशाहत की इच्छा मुझे ना ,
भवभ्रमण से मैं अब थक गया हूँ , बंद कर दे तू मेरा भटकना ,
तेरी गुणरश्मि का '**हीर**' पाऊं, मेरी इच्छा को पूरी तू करना ,
मांगू इतना ही तुझसे प्रभु मैं...४

20. ओ प्राण प्यारे मेरे

(तर्ज - आ लौट के आजा मेरे मीत)

ओ प्राण प्यारे मेरे नाथ, मुझे तेरा साथ अब दे तू,
मेरा कोई नहीं संगाथ,[2] मुझे तेरा साथ अब दे तू,
ओ प्राण प्यारे मेरे नाथ...

समझा था अपना, निकला पराया, कैसी है जग की ये माया,
मूरख बना मैं, मुझसे ही जग में, खुद को समझ नहीं पाया,
मेरे कितने कहुं अवदात, मुझे तेरा साथ अब दे तू...
मेरा कोई नहीं संगाथ,[2]...१

हंस ना सकु मैं, रो ना सकु मैं, ऐसा जीवन मैने पाया,
कह ना सकु मैं, सह ना सकु मैं, कर्मों ने ऐसा नचाया,
मेरी कौन सुने यहाँ बात, मुझे तेरा साथ अब दे तू...
मेरा कोई नहीं संगाथ,[2]... २

पाया ना परखा, तुझको भी मैने, व्यर्थ नयन मेरे पैने,
जाना ना माना, तेरा ही मैने, जिससे पडे दुःख सहने,
मेरे दुःख का कर प्रतिघात, मुझे तेरा साथ अब दे तु...
मेरा कोई नहीं संगाथ,[2]... ३

भाव बिना करुं भक्ति मैं तेरी, पर माफ भूल मेरी,
चार गति के चक्कर से छूटने, आया हूँ शरण मैं तेरी,
कहे '**हीर**' यही दिन रात, मुझे तेरा साथ अब दे तू...
मेरा कोई नहीं संगाथ,[2]... ४

21. अर्पण कर दुं सब तुझको

(तर्ज - दुनिया में कितना गम है)

आज प्रभु तू मिला मुझको, अर्पण कर दूं सब तुझको,
चाहे तारे के मारे तू, सौप दिया जीवन तुझको....

काल अनंत से भटक रहा हूँ , जान के भी ना अटक रहा हूँ ,
मार्ग से तेरे दूर रहा, पाप में ही चकचूर रहा[2],
सद्बुद्धि दे तू अब मुझको, अर्पण कर दूं सब तुझको...
चाहे तारे के मारे तू... १

मेरा विषय बनी जग की माया, जान के तुझको मैने भूलाया,
जानुं जग तो सपना है, मानुं तू ही अपना है[2],
फिर भी न सूझे यह मुझको, अर्पण कर दूं सब तुझको...
चाहे तारे के मारे तू... २

खाइ है अब तक कर्म की लातें, समझा हूँ अब मैं तेरी बातें,
योगदशा को पाना है, जीवन सफल बनाना है[2]
ऐसा '**हीर**' तू दे मुझको, अर्पण कर दूं सब तुझको
चाहे तारे के मारे तू...३

22. मुझे मुक्ति दो

(तर्ज - क्योंकि तुम ही हो)

बिन मांगे जब इतना दिया है, थोडी कृपा प्रभु और करो [2]
तेरे ही जैसा मैं बन जाऊ, बस इतना वरदान भी दो...
मुझे मुक्ति दो, बस मुक्ति दो, कर्मों से, मुझे मुक्ति दो...
जन्म से, और मरण से, मेरे दुर्गुणों से मुक्ति दो...

जन्म ना ऐसा जो मैने न धारा, दुःख ही वहाँ हर बार मिला,
बन के अनाथ मैं भवोभव भटका, नाथ तेरा अब साथ मिला,
अब समझा तुझे, दे वो स्थान मुझे, जहाँ पाऊं ना दुःख मैं जरा...
मुझे मुक्ति दो...

तेरे ही मार्ग पर जो चला है, तेरे ही जैसा वो भी बना है,
तुझसे जिसने दिल ना लगाया, सारे दुःखों को उसने बुलाया,
तेरे जैसा **'हीर'** मुझे अब दे, तू ही दानी है सबसे बडा...
मुझे मुक्ति दो...

23. शासन गीत - जैन एंथम

(तर्ज - जन-गण-मन अधिनायक)

जग हितकर जिनशासन जय हो,
भविजन शिवसुख दाता....

त्रैलोक्य जीवगण योगक्षेमकर,
भीषण भव भय त्राता,

विघ्न निवारक, मंगल कारक,
निज गुण **'हीर'** बढाता,

तव शुभ नाम जो स्मरता, तव आज्ञा जो धरता,
परमातम पद पाता,

जग हितकर जिनशासन जय हो,
भविजन शिवसुख दाता...

जय हो... जय हो... जय हो...
जय - जय - जय - जय हो...

24. जैन जागृति गीत

(तर्ज - ए मेरे वतन के लोगो)

ओ जिनशासन के सपूतों, तुमको जो धर्म है प्यारा,
वो जैनधर्म कहलाए, जग में सबका जो सहारा,
इस धर्म की ज्योत टिकाने, लाखों ने है प्राण गंवाए
कुछ काम करो तुम ऐसा, इतिहास ही जो बन जाए[2]

ओ वीरप्रभु के पुत्रों, क्यों भूल गए मर्दानी ?
जो जैनधर्म है हमारा, उसकी गरिमा है बढानी,
संकट है जिनशासन पर, दे दो खुद की कुरबानी,
जो जैनधर्म...१

अब घायल हुआ है शासन, खतरें में पडा है भावि,
जो सोते रहे तो हम पर[2], हो जाएंगे दुर्जन हावी,
पथभ्रष्ट है अपना युवाधन, कोई तो बनो रे सुकानी,
जो जैनधर्म...२

जो विश्व का है हितचिंतक, जीवमात्र का जो है रक्षक,
भगवान का पद जो दिलाए[2], दुःखमात्र का जो है भक्षक,
पाया हमने वो शासन, छोडो अब तो नादानी,
जो जैनधर्म...३

श्वेतांबर हो या दिगंबर[2], स्थानक या तेरापंथी[2],
जो पापों से डरता हो, वो जैन जो मोक्ष का पंथी
जो एक हुए ना हम तो, मिट जाएगी अपनी निशानी,
जो जैनधर्म...४

प्रतिमा पर और तीर्थों पर, जनसंख्या और श्रमणों पर,
आक्रमण है भीषण आया, श्रद्धा और संस्कारों पर
जो जिनशासन मिट जाए, तो जग को कौन उगारे ?
जागो रे जैनो जागो[2], अब सारा जग ये पुकारे[2],
तुम '**हीर**' दिखा दो अपना, छोडो सब आनाकानी,
जो जैनधर्म...५

जय हो... जय हो... जय हो... जिनशासन.. (२)
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो (४)

25. जय हो जिनशासन

(तर्ज - हम हिन्दुस्तानी)

आनंद अवसर आया, सबके मन को भाया,
काल अनंत के बाद ये हमने, जिनशासन है पाया,
जय हो जिनशासन[4]
शाश्वत सुख को पाने का जो मार्ग जताए
भवभ्रमणा अटकाने की जो बात बताए
क्यों तू लाख चौरासी के दुःख को सहता है ?
सुख तो तेरे अंदर है ये जो कहता है
जिसने ये शासन ना पाया, उसने बहुत गंवाया... जय हो... १

भोग के पीछे भटका तो क्या खाक जिया तू ,
दुर्लभ मानव जन्म को फिर से राख किया तु,
पुनरावर्तन छोड के परिवर्तन करना है
फिर ना जन्म हो सके वैसे अब मरना है
'**हीर**' कहे प्रभु वीर का शासन, पाने जग ललचाया... जय हो...२

26. जिनशासन वंदना गीत

(तर्ज - जय जय गरवी गुजरात)

हे... तीर्थंकर - गणधर आदि को[2], देता जो अवतार
सबसे महान... जग की शान... जिनशासन मेरा प्राण...
जिनशासन सबसे महान... जिनशासन जग की शान,
बने शासन मेरा प्राण, मांगु ऐसा वरदान...

वंदन-वंदन-वंदन-वंदन, जिनशासन को वंदन,
वंदन-वंदन-वंदन-वंदन, जिनशासन को वंदन,

जहाँ सत्य-अहिंसा-ब्रह्मचर्य की महिमा अपरंपार
जहाँ त्याग-तपस्या-दीक्षा धर्म की होती है बौछार
करो जीव मात्र सन्मान, ऐसा जिसका आह्वान[2]
जिनशासन सबसे महान...१

करे चौसठ इंद्र भी मन से निरंतर जिसका निशदिन ध्यान,
धरे चक्रवर्ती और वासुदेव भी सिर पर जिसकी आण,
जो बढाए इसकी शान, वो बनता है भगवान[2],
जिनशासन सबसे महान...२

जहाँ जीवन के अति गुढ रहस्यों का मिलता है ज्ञान,
जो सुख-शांति और सद्गति का भी एकमात्र है स्थान,
जहाँ विश्व की सारी समस्याओं को सुलझाना आसान,
करे सर्व दुःख अवसान, जहाँ अमर बने इन्सान,
जिनशासन सबसे महान...३

भले आए मिटाने जिनशासन को आंधी या तुफान,
नहीं मिटने देंगे हम कभी इस जिनशासन की शान,
कर देंगे रक्त की बुंद-बुंद को शासन पर कुरबान,
करे '**हीर**' यही अरमान, सभी जीव बने भगवान,
जिनशासन सबसे महान...४

27. प्रभु तेरा ये कैसा रहम

(तर्ज - ये तो सच है कि भगवान है)

प्रभु तेरा ये कैसा रहम ? मैं भटकता था जनमो जनम,
अति भारी हैं मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम...

आर्य देश-सुकुल, निरोगी ये शरीर, पंचेंद्रिय पूर्णता, दीर्घायु भी,
तीव्रबुद्धि भी दी, शुभ संयोग भी, धर्म की बात भी, मैने सुनी सभी,
पर श्रद्धा है मेरी नरम, नहीं करता मैं मन से धरम,
अति भारी हैं मेरे करम...१

शुद्ध देव-गुरु-धर्म मुझको दिया,शुभ संस्कार से,मुझे वासित किया,
अति दुर्लभ है जो, इस संसार में, ऐसे कल्याण मित्रों का योग दिया,
पर मोह का है आवरण, पडे उलटे ही मेरे चरण,
अति भारी हैं मेरे करम...२

धर्म की आड में, ठगा मैंने जगत, निज स्वार्थ के हेतु, बढाए भगत,
निज दोष कभी, नहीं साफ किये, धर्म के नाम पर, बडे पाप किये,
आई मुझको न तेरी शरम, धर्म को मानता मैं भरम,
अति भारी है मेरे करम...३

खुब भटका हूँ मैं, इस संसार में, अब चाहुं नहीं, फिर अवतार मैं,
नहीं करता भले, तुझसे प्यार मैं, पर ले ले मुझे, तेरे परिवार में,
'**हीर**' की है ये विनति चरम, तेरी गुणरश्मि देना परम,
अति भारी है मेरे करम...४

पाप के कार्यों में जिसे ना आए शरम,
वह कैसे कर सकेगा इस संसार में धरम ?

28. तू ही तू ही अब दिल ये पुकारे

(तर्ज - कहीं दूर जब दिन ढल जाए....)

तू ही तू ही, अब दिल, ये पुकारे,
मिलना है तुझसे, प्रभु तू कहाँ रे, मुझको बता दे,
तेरी ही छाया, की माया में,
रहना है मुझको, अब तो सदा रे, अब तो सदा रे...

गाउ कैसे, शब्द मेरे, निकल न पाए,
हर्ष से ये आंखे तुझे, आंसु चढाए,
मिला है मुझको, काल अनंते,
अब नहीं होना तू, मुझसे जुदा रे, मुझसे जुदा रे...

तू ही तू ही अब... १

नाम रटूं, तेरा पर, तू ही क्यों न भाए ?
पहेली ये मन मेरा, सुलझा न पाए,
मिले जो सुख वो, तेरी बदौलत,
फिर भी मैं तुझसे, दूर रहा रे, दूर रहा रे...

तू ही तू ही अब...२

तू जो मिले, तो ये भव, सफल हो जाए,
भवोभव का ये मेरा, फेरा मिट जाए,
तेरे ही जैसा, मैं बन जाऊं,
'**हीर**' तू ऐसा, मुझमें जगा दे, मुझमें जगा दे.

तु ही तू ही अब...३

अत्यंत मूल्यवान समय को जो बरबाद करता है,
वह खुद भी कुछ ही समय में बरबाद हो जाता है।

29. आज प्रभु मोरे घट आओ

(तर्ज - चौक पूराओ-माटी रंगाओ)

मुझको बचाओ, भव से तिराओ, आज प्रभु मोरे घट आओ[2],
मुझको जगाओ, मार्ग दिखाओ, मुक्ति का मुझमें रस प्रगटाओ[2],

हा रे.... काल अनंते तू मिला,
हा रे... तुझसे ही सुख है मिला,
तुझसे ही पाई है मैने भलाई,
हा रे...... तेरे बिना भटका जहाँ ,
हा रे... दुःख ही पाया है वहाँ ,
अब ना चाहुं मैं तुझसे जुदाई...
सुख में ना अटकुं, और ना भटकुं,

आज प्रभु मोरे घट आओ...१

हा रे... मेरा आतम राम है तू,
हा रे... मैं हूँ राधा, श्याम है तू ,
तुझसे ही की है अब मैने सगाई,
हा रे....... तुझमें ही खोया रहुं ,
और किसे अपना मैं कहुं ,
तुने ही मुझको अब मुझसे मिलाई,
दोष घटाओ, '**हीर**' बढाओ,

आज प्रभु मोरे घट आओ...२

भगवान उन्हें नहीं मिलते, जो भगवान को खोजते हैं,
भगवान तो उन्हें मिलते हैं, जो भगवान में खो जाते हैं।

30. मुझको सुख इस जहां में

(तर्ज - आसरा इस जहां का)

मुझको सुख इस जहां में मिले ना मिले,
तेरे चरणों की सेवा मुझे चाहिये,
मुझको मुक्ति में डेरा मिले ना मिले,
तेरे दिल में बसेरा मुझे चाहिये....

पाया पुण्योदये मैने मानव जनम,
फिर भी तुझको बनाया ना मेरा सनम,
मेरी पुण्य की राशि बढे ना बढे,
तुझसे प्रीति बढे ये मुझे चाहिये... १

मिला सुख जो जीवन में तो लीन बना,
और दु:ख में अतिशय मैं दीन बना,
मेरे दु:ख के ये पर्वत घटे ना घटे,
मेरे दोष घटे ये मुझे चाहिये... २

पाप में रस धरुं, तुझपे शंका करुं,
तेरी आज्ञा का मन से ना पालन करुं,
मेरा सद्भाग्य भी जो बढे ना बढे,
तुझपे श्रद्धा बढे ये मुझे चाहिये...३

एक विनती करुं तुझसे हर बार मैं,
मेरे परमेश्वरा तेरे दरबार में,
मेरी सत्ता जगत में बढे ना बढे,
मेरा '**हीर**' बढे ये मुझे चाहिये... ४

31. प्रभु अब तुझसे दिल लगाना है

(तर्ज - धीरे-धीरे प्यार को बढाना है...)

प्रभु अब तुझसे दिल लगाना है, प्यार तेरा पाना है,
धीरे - धीरे पास तेरे आना है, तुझमें समा जाना है[2]

तू भी था मेरे जैसा, आचरण किया ऐसा,
जिससे तुने पाया है, सुख भरपूर,
मुझको भी कहा तुने, बात ना सुनी मैने,
पाया दु:ख अनंता मैं, रहके तुझसे दूर,
अब तो सुख अनंत पाना है, तुझमें समा जाना है,
प्रभु अब तुझसे... १

भव अनंत भटका हूँ, भोग सुख में अटका हूँ,
जानकर भी खोले हैं, दुर्गति के द्वार,
खुद को ही में भूला हूँ, बस अहं में फूला हूँ,
जीत के समय में भी, पाई मैने हार,
बस अब खुद को ही जिताना है, तुझमें समा जाना है,
प्रभु अब तुझसे ... २

दौड में जीवन खोया, बाद में बहुत रोया,
पर ये पुनरावर्तना, की मैने हर जनम,
अब तेरा वचन पाया, मुझको होश है आया,
ऐसा '**हीर**' मुझको दे, फिर ना हो जनम,
प्रभु तेरा स्थान मुझको पाना है, तुझमें समा जाना है,
प्रभु अब तुझसे...३

जो भगवान को दिल देते हैं,भगवान उसे दिल से देते हैं।

32. ओ मेरे भगवान

(तर्ज - ए दिले नादान)

ओ मेरे भगवान... ओ मेरे भगवान...
अब तो पार लगा... बस यही अरमान
ओ मेरे भगवान...

सुख की आशा में... तू न याद रहा...
दु:ख बहुत ही सहा
की है मैने खता... मुझको सब है पता...
तू ना और सता...
सुख से डरता रहुं... दुःख को हंसते सहुं...
और क्या में कहुं... इतना कर एहसान...
ओ मेरे भगवान...१

मोह छूटे ना... पाप खूटे ना...
भोगों से मेरा... मन ये उठे ना...
तेरे बिन ओ प्रभु... कौन मेरा यहाँ ?
जन्म होगा कहाँ ?
करुणा सागर तू, करुणा कामी हूँ,
मेरा '**हीर**' बढे, इतना दे वरदान...
ओ मेरे भगवान...२

'रास्ता गलत है' यह पता चलते ही रास्ता बदलने वाले हम,' संसार में सच्चा सुख है ही नहीं ' यह पता होते हुए भी संसार छोडने तैयार क्यों नहीं ?

33. मेरे भगवान ओलवेज उपकारी

(तर्ज - व्हाय दिस कोलावेरी[3] डी)

संकेत - स्पीच : **(S)**

(S) चलो भगवान को प्रेयर करते हैं, हार्टली प्रेयर-सिंगिंग के साथ,
(S) आज करना है दिल से प्रभु को याद, मुनि हीररत्न विजय Says
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी **(S)** कायम सुख देते है यार....
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी(**S**)याद करते ही दुःख दूर कर देते हैं
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी(**S**)सबके कल्याण की चिंता करते हैं
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी **(S)** भूल हो तो भी माफ कर देते हैं।

दुनिया में रोज टेंशन-टेंशन, दुःख का है ये स्टेशन,
पुण्य का तू करना क्रियेशन, ऐसा देते सजेशन,
बातें जिसकी हैं सबसे प्यारी,
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी...१

आत्मा मेरा ब्लेक-ब्लेक, करते उसको व्हाईट,
धर्म का देकर मुझको ट्रेक, करते फ्युचर ब्राईट,
मार्ग है जिसका ओलवेज हितकारी,
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी...२

(S) अरे ! टाईम क्यों वेस्ट करते हो ?
(S) अरे ! ऐसा चांस फिर कब मिलेगा ?
(S) अरे ! थोडा तो समझो यार...
कर लो-कर लो, कर लो-कर लो, थोडा धरम कर लो

(S) मांगने में तो बहुत Expert हूँ, भगवान ये दे दो, वो दे दो,
(S) करना कुछ भी नहीं...

(**S**) तुम्हारी भी यही हालत होगी ना ? गति १-२-३-४
(S) चल भाई संसार में बहुत भटका, अब अजन्मा बन,
(S) दूसरों को दुःख न दे, नहीं तो फिर भटकना पडेगा...

मिला है मानव[2], जन्म दुर्लभ, टाईम ना कर तू **Waste**,
साधना को, दिल से कर ले, पापों को दे **Rest**,
फिर मुक्ति-मुक्ति, और शांति-शांति, **Never** रिटर्न आना,
अनंत सुख, अनंत ज्ञान, भगवान बन जाना,

पता है सब कुछ, तो भी करुं ना, आलस छूटे ना,
होगा क्या मेरा ? मुझे पता ना, प्रभु तू मुझको बचा,
क्योंकि मैं हूँ पक्का संसारी
(S) क्यों भाई सच है ना...?
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी...
(S) फिर भी कोई सुधरता नहीं है यार...
मेरे भगवान ओलवेज उपकारी...३
कर लो-कर लो, कर लो कर लो, थोडा धरम कर लो

34. जब सबने ही मुझे ठुकराया

(तर्ज - दिल हुम हुम करे)

जब सबने ही मुझे ठुकराया, तब तुने ही मुझे अपनाया,
मैं निर्गुण फिर भी तूने, मुझ पर करुणा को बहाया,
जब सबने ही मुझे ...
सब तुमसे है पाया, पर तेरे दर मैं न आया,
पर तू है दयालु, अब तक न मुझे विसराया,
जब सबने ही मुझे... १

इस जग में जो भी शुभ है ... वो तेरी कृपा से है
सब जीवों को जो सुख है... वो तेरी दया से है
तेरे पास जो आए, वो तेरा ही बन जाए
तुझे याद करे जो, वो तुम सम **'हीर'** को पाए

जब सबने ही मुझे...२

35. मुझको प्रभु बस तेरी याद आई

(तर्ज – झीणा²-झीणा उडा गुलाल)

जब-जब मेरा हुआ बेहाल, मुझको प्रभु बस तेरी याद आई²
जहाँ विश्वास था, जो भी मेरा खास था,
उनसे ही मैने मार खाई, खाई, खाई,
जब-जब दु:ख बढा, जब संकट पडा,
जब काया ने की रोग से सगाई.
हो... जब जीवन में उठा भूचाल,
मुझको प्रभु बस तेरी याद आई

जब-जब मेरा हुआ बेहाल...
मुझको प्रभु बस तेरी याद आई...

मेरा ना कोई यहाँ पर, मैं भी ना अमर यहाँ ,
लाख चोरासी के अंदर, दुःख ही मिला है यहाँ ,
प्रभु रे...... प्रभु रे... तेरे बिन मैं तो भटकता रहा,
प्रभु रे... प्रभु रे... तेरी ही बात जब मैने अपनाई,
हो... **'हीर'** कहे तब हुआ कमाल,
बजी शाश्वत सुख की शहनाई

जब-जब मेरा हुआ बेहाल....
मुझको प्रभु बस तेरी याद आई...

36. अरिहंत परमात्मा की आरती

(तर्ज - जय गणेश, जय गणेश)

जय, जय, जय, जय, अरिहंत देवा,
माता जाकी करुणा और पिता धर्मदेवा,
अष्टलक्ष्मी, सरस्वती करे तेरी सेवा,
करुं तेरी आरती मैं मांगु मोक्ष मेवा...

सर्व जीव सुखी बने ऐसे भावधारी,
नित्य शांति पाए जो है तेरे आज्ञाकारी,
राग नहीं, द्वेष नहीं, नहीं कोई खेवा,
चक्रवर्ती, वासुदेव इंद्र करे सेवा.... जय, जय...१

जरासंघ जराविद्या दूर निवारी,
सुलसा को पुत्र मिले तेरी ही बलिहारी,
नमि-विनमि राज्य-विद्या, फली तेरी सेवा,
नाग को बनाया तुने धरणेन्द्र देवा.... जय, जय... २

सप्तभय, अष्टकर्म दूर निवारे,
सर्व आधि, व्याधि, उपाधि से तारे,
नवग्रह, नवनिधि मांगे तेरी सेवा,
अचिंत्य चिंतामणी तू देवाधिदेवा... जय, जय... ३

रजत, स्वर्ण, रत्न के तीन गढ पे बिराजे,
सर्व शोक नाशक अशोक सिर पे छाजे,
कोटी देव साथ तेरी करे नित्य सेवा,
भक्तों के वांछितों को पूरते सदैवा... जय, जय... ४

नाम ग्रहे तेरा वो भव से तिर जाए,
जन्म-जरा-मृत्यु यहाँ फिर से न पाए,
आत्म गुण रश्मि का **'हीर'** प्रगटेवा,
अरिहंत पद मिले करते जो सुसेवा... जय, जय... ५

37. हे परमेश्वर... हे जगनाथ...

(तर्ज - हे दीनबंधु, हे दीनानाथ)

हे परमेश्वर... हे जगनाथ... तेरे बिना हम सब है अनाथ[2]
कर तू करुणा... हम पर करुणा[2]...
सबसे सुंदर... तेरा संगाथ... तेरे बिना हम सब है अनाथ[2]
कर तू करुणा... हम पर करुणा[2]...

मैंने जग को ही समझाया, पर खुद को समझ ना पाया,
पर जबसे तुझको पाया, तब जग भी समझ में आया[2]
तु जो मिला तो बना मैं सनाथ, तेरे बिना हम सब है अनाथ....
हे परमेश्वर... हे जगनाथ... तेरे बिना हम सब है अनाथ
सिर पर, तेरा हाथ, रखना मेरे नाथ...१

मेरे जीवन में अंधेरा, तू कर दे उसमें सवेरा,
ना चाहूँ मैं भव में फेरा, तू स्थान मुझे दे तेरा[2] ...
'**हीर**' कहे पकडो मेरा हाथ, तेरे बिना हम सब है अनाथ[2]
सिर पर, तेरा हाथ, रखना मेरे नाथ
हे परमेश्वर... हे जगनाथ... तेरे बिना हम सब है अनाथ[2]
कर तुं करुणा, हम पर करुणा...२

38. पार्श्व शंखेश्वर मेरो

(तर्ज - पार्श्व चिंतामणी मेरो...)

पार्श्व शंखेश्वर मेरो, मेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...
करुणानंदन, भवदुःखभंजन, समता रसनो सेरो
सेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...१

काल अनंत के बाद में पायो, दुर्लभ दर्शन तेरो
तेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...२

भवसागर अब सूक गयो है, अद्‌भुत परचो तेरो
तेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...३

आतम तत्त्व का भेद बतावे, तोडे कर्म को घेरो
घेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...४

चिंतामणी सम चिंता चूरे, पारसनाथ हमेरो
मेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...५

'**हीर**' कहे प्रभु पार्श्व से टालो, जनम मरण को फेरो
फेरो प्रभु... पार्श्व शंखेश्वर मेरो...६

39. महावीर की बातों को

(तर्ज - भगवा लहेराएंगे)

महावीर की बातों को, जग में फेलाएंगे
अहिंसा को सब के, दिल में प्रगटाएंगे... १

जीओ और जीने दो, ये वीर की वाणी है
जैन धर्म को अब तो हम, विश्व धर्म बनाएंगे...२

ना भेदभाव को हम, कही पर भी जगाएंगे
हम मानवता को ही, पहले अपनाएंगे...३

अशांत है जग सारा, हम शांत बनाएंगे
दुनिया को महावीर का, हम '**हीर**' बताएंगे... ४

40. जब अपना यहाँ नजर

(तर्ज - तेरी उम्मीद तेरा इंतजार करते है)

जब अपना यहाँ नजर न कोई आता है,
तब हरदम मुझे प्रभु तू याद आता है,
मेरी इच्छा विरुद्ध जब यहाँ पे होता है,
तब हरदम मुझे प्रभु तू याद आता है....

सुख में जरा भी तेरा नाम न लूं,
तूने ही दिया है सब ये बात भूलुं[2],
जब दुःख का पहाड मुझ पे टूट जाता है... तब हरदम...१

जब मेरा शरीर मस्त बने,
तब बांधु मैं रोज पाप घने[2],
जब काया में मेरी रोग फूट जाता है... तब हरदम...२

जब होता है मेरा नाम बडा,
तब मानुं मैं खुद को तुझसे बडा[2],
जब अपमान जहर मुझको पीना पडता है... तब हरदम...३

अब संसार भी असार लगे,
बस तुझमें ही एक सार लगे[2],
जब तुम जैसा '**हीर**' मुझमें नहीं आता है... तब हरदम...४

अगर आपका वर्तमान सुखमय है तो समझना
कि आपका भूतकाल धर्ममय था।
यदि आपका वर्तमान धर्ममय है, तो समझना कि
आपका भविष्य भी मंगलमय होगा ।

41. नित्यं[2] णमो[2] नवकार मंत्रं

(तर्ज - हर हर शंभु)

नित्यं नित्यं णमो... णमो... नवकार मंत्रं[4]
देवेंद्र पूज्यं, त्रिलोकनाथं, पुण्यभंडारं, अतिशयधारं,
अचिंत्य चिंतामणी समानं, सदैव शरणं, अर्हं नमामि,
नित्यं नित्यं णमो णमो अरिहंताणं[4]... १

जन्म रहितं, कर्म विमुक्त, विगत विकारं, संसार पारं,
विनष्ट द्वंद्वं, सदा सुखस्थं, शिव पूरस्थं, सिद्धं नमामि
नित्यं नित्यं णमो णमो सव्व सिद्धाणं[4]...२

सुवर्ण वर्णं, जन मनोहरणं, मर्यादारक्षं, युग प्रधानं,
दिव्य प्रभावं, महा गीतार्थं, सूरि पदस्थं, नमो आचार्यं
नित्यं नित्यं णमो णमो आयरियाणं[4]...३

गुण पंचविशं, हरित वर्णं, शासन उद्यानं समृद्धिकारं,
आगमधारं, दुरितापहारं, श्री उपाध्यायं नित्यं नमामि
नित्यं नित्यं णमो णमो उवज्झायाणं[4]...४

पंच महाव्रत पालन समर्थं, क्षमावतारं, माया रहितं,
अत्यंत धीरं, प्रवचन '**हीरं**', श्री क्षमाश्रमणं नित्यं नमामि
नित्यं नित्यं णमो लोए सव्वसाहूणं[5]...५

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

जिसके ह्रदय में श्री नवकार, उसका क्या करेगा संसार,
जिसके ह्रदय में है संसार, दुःखी होगा वह अपरंपार।

42. बस ऐसी हो मेरी आरजु

(तर्ज - तेरी मिट्टी)

साखी

चोरासी लाख अवतारों में, मर-मर के खुद को जलाया है,
तब जाके कही हमने सर पे, तुझे नाथ मुश्किल से पाया है...

ओ मेरे प्रभु तुझे पाने यहाँ , मैने जग में अनंत जन्म धरे,
महफुज हुआ मेरा आतम अब, बस जब से तेरे दर्श वरे,
ओ मेरे विभु मेरा जीवन तू, मेरी नस-नस में तेरी आण बहे,
मेरे चारो तरफ बस तू ही दिखे, बस तू ही मेरा लक्ष्य बने...
तेरी बातों को अपनावा, तेरे शासन पे मर जावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु,
तेरे रंगो में रंग जावा, तेरी धारा में बह जावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु,
वो... वो... वो... वो... वो... वो...

जितने भी यहाँ पर जन्म धरे, वहाँ बिंदु भी सुख पा न सका,
दोषों से भरा आतम ये मेरा, जो क्षणभर शांति पा न सका,
जो धर्म तेरा है सुख भरा, उसको मैं यहाँ ना समझ सका,
जब प्रेम हुआ तुझ पर ओ विभु, तब मेरा जन्म ये सफल भया,
तेरी ईच्छामय बन जावा, मेरी इच्छा को बिसरावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु
तेरे ख्वाबों में खो जावा, तेरी यादों में रो जावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु...१
प्रभुवरा...

मैं भटक रहा था दुनिया में, जब तक ना तेरा संग हुआ,
जब ज्ञान हुआ तेरी दुनिया का, तब मेरे मोह का भंग हुआ,
अब मेरी यहाँ ना फिकर मुझे, बस निज दोषों से डरता हूँ,
तेरा धर्म रूपी निधान मिला, बस उसका '**हीर**' समरता हूँ
मेरे सपनों में तू आवा, ना रातो में सो पावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु
बस पल-पल तू यादावा, तेरे बिना रह ना पावा,
बस ऐसी हो मेरी आरजु...२

43. मेरी आरजू...

(तर्ज – नई धुन)

तेरे रंगो में रंग जावा, तेरी धारा में बह जावा,
मेरे सपनों में तू आवा, ना रातों में सो पावा,
बस ऐसी है मेरी आरजू[4]

मेरी पल पल शुभ में जावा, तेरे बिना रह ना पावा,
तुझे पाने मैं खो जावा, तेरी यादों में रो जावा,
तेरी बातें मन में लावा, मिले सेवा मन हरखावा,
तेरी करुणा में भीग जावा, तेरी किरपा मुझ पर आवा,
बस ऐसी है मेरी आरजू[4].... १

घटे दोषों का गरमावा, निज गुणों को महकावा,
बने सुंदर मेरा स्वभावा, जीउ ऐसे जग बिरदावा,
मन पापों से घबरावा, ना गलती फिर दोहरावा,
तेरा दर्शन सबमें पावा, तेरा स्पर्शन नित अनुभावा,
बस ऐसी है मेरी आरजू[4]... २

ना सुख में कभी छलकावा, दुःख में भी आनंदावा,
सुख अंदर में ही पावा, ना बाहर मन ललचावा,
मेरी दुर्बुद्धि क्षय पावा, निज वैराग्य लहरावा,
मेरा सारथि तू बन जावा, मेरे अंदर तुझे प्रगटावा,
बस ऐसी है मेरी आरजू[4]...३

निज आतम नित समरावा, बढे गुरु पर मेरा सद्भावा
तेरी राहों पर चल पावा, हो कांटे हंसते जावा,
तेरी आज्ञामय बन जावा, निज इच्छा को बिसरावा,
भय मृत्यु का मिट जावा, तेरा शासन भवोभव पावा
बस ऐसी है मेरी आरजू[4]...४

भवसागर से तिर जावा, तेरे अंदर मैं डूब जावा,
मेरा आतम '**हीर**' विकसावा, तेरे जैसा मैं बन जावा,
बस ऐसी है मेरी आरजू[4]....

44. परमेश्वरा तू ही मेरा प्राणेश्वरा

(तर्ज – खामोशिया)

परमेश्वरा हो याद में, तुम दिल में तो आओ जरा,
पाकर तुम्हें मिल जाएगी, जन्नत की भी खुशिया यहाँ ,
इंतजार है, बस तेरा मुझे, दर्श दिखाओ जरा...
परमेश्वरा तू ही मेरा प्राणेश्वरा,
जगदीश्वरा तू ही मेरा हृदयेश्वरा

यहाँ सुख जहाँ भी, सभी में है दाग वहाँ ,
लगा उसको पाने मैं, तुझने जो थुका हुआ,

अनंत जनम से यहीं पर मैं अटका हुआ,
व लाख चौरासी के हर भव में भटका हुआ,

पाया सदा, दुःख ही वहाँ , मुझे अब ना भटकना यहाँ ,
रहा दूर ही तुझसे सदा, मुझे पास बुलाओ जरा....
इंतजार है, बस तेरा मुझे, होश में लाओ जरा...

परमेश्वरा तू ही मेरा प्राणेश्वरा,
जगदीश्वरा तू ही मेरा हृदयेश्वरा.... १

खीली चांदनी में छीपी गम की ज्वाला यहाँ ,
व ओस के बिंदु सा नश्वर है जीवन मेरा,
दुःखों से तडपता मैं है मेरा कौन यहाँ ?
सुलगते दिलों पर है चंदन सा तू आशरा,

तू ही मेरी अब आँख है, तेरे बिन हूँ मैं अंधा यहाँ ,
तू ही मेरा सर्वस्व है, मुझे अपना बनाओ जरा
इंतजार है, बस तेरा मुझे, मुझको सुधारो जरा....
परमेश्वरा तू ही मेरा प्राणेश्वरा,
जगदीश्वरा तू ही मेरा हृदयेश्वरा...
ज्ञानेश्वरा तू ही मेरा सर्वेश्वरा,
योगीश्वरा, '**हीर**' तेरा मुझमे जगा...२

(राग-हरिगीत छंद)
संतप्त छे आ विश्व कोरोना तणा संतापथी,
व्याकुळ छे लोको घणा आजीविकाना प्रश्नथी,
रोगो टळो, दुःखो टळो, सुख-शांति जगमां विस्तरो,
निर्भय बने आ विश्व प्रभु एवी तमे करुणा करो....

45. धर्म ही सुखदायी

(तर्ज - हे शुभारंभ, हो शुभारंभ)

हमारा भाग्य खिला, सत्य ज्ञान मिला, मन में हरख न माए, माए
सुख का राज खुला, शाश्वत मार्ग मिला,
निर्भय आतम हो जाए...जाए
स्वयं का परिचय पाए, परम स्पर्श मिल जाए,
रोम-रोम पावन हो जाए... जाए... जाए... जाए...
भव अनंत बाद में ये बात समझ है आई,
धन नहीं पर धर्म ही है विश्व में सुखदाई-सुखदाई[3]

चाहे जितना कर जमा ना साथ आना है,
साथ जो रहे उसे ही अब तो पाना है,
सुख की भ्रमणा में समय ना अब गँवाना है
दुःख ना आए फिर कभी वो स्थान पाना है... सुखदाई[3]

दु:ख भरा संसार है ये, सुख कहाँ है भाई,
सुखभरा समझा था जिसको, निकला वो दुःखदाई,

चौरासी लाख के, चक्र में हम, भटके यहाँ पे हाय-हाय
खुद के दोषों को, जीत लें तो,
बेडा पार हो जाए… जाए... जाए... जाए...
हाँ ...ना हो जनम कभी, ना मिले मरण कभी,
ऐसी हो जिंदगी, हो…
दुआ देंगे सभी, प्रगटेगा '**हीर**' भी, कर ले जो बंदगी...

मानव जन्म दुर्लभ ये अब ना खोना है,
जागने का ये समय है, अब ना सोना है,

जो चला गया है उसको अब ना रोना है,
हाथ में जो है उसे ही अब सजोना है, सुखदाई[3]

है कर लो थोडा धरम हो, हे करो...करो...

भव अनंत बाद में ये बात समझ है आई,
धन नहीं पर धर्म ही है विश्व में सुखदाई...

दुःख भरा संसार है ये सुख कहाँ है भाई
सुख भरा समझा था जिसको निकला वो दुःखदाई....

46. ये दुर्गुण ही हमें भटकाते है

(तर्ज - ये बंधन तो प्यार का बंधन है)

शाश्वत सुख को पाता है, ना फिर कभी दुःख आता है,
निज दुर्गुण को जो भगाए, भगवान वो बन जाता है,
ये दुर्गुण ही हमें भटकाते हैं, भवोभव में घुमाते है[2]

धर्मक्रिया सब करते, पर अंदर से डरते,
अगला जनम कैसा पाएंगे ? प्रश्न ये खुद से करते,
जो निर्भयता है पाना, तो खुद को ये समझाना,
सद्‌गुण को अब अपनाना, दुर्गुण को दूर भगाना,
ये दुर्गुण ही हमें भटकाते हैं...१

पंथ-ग्रंथ से हट के, धर्म समझ लो रट के,
निज दोषों का नाश हो जिससे, कार्य वो कर लो डट के,
जो आतम शुद्ध बनाए, वो खुद का '**हीर**' जगाए,
संसार में फिर वो यहाँ पर, अवतार कभी ना पाए,
ये दुर्गुण ही हमें भटकाते है... २

47. दिया जनम जिसके लिये

(तर्ज – हरिगीत छंद)

ना प्रार्थना करुं मैं प्रभु कि मेरी इच्छा पूर्ण कर
मेरे लिये चाहे तू जो वो तेरी ईच्छा पूर्ण कर
मेरी फिकर ना है मुझे पर ध्यान तू रखना सदा
दिया जनम जिसके लिये, मुझसे वहीं बस तू करा... १

ना वैर, ना हो वासना, ना दंभ, ना इच्छा अशुभ,
ना स्वार्थ, बस मन से सदा, जीव मात्र का मैं चाहुं शुभ,
ना नामना की कामना, ना हर्ष-शोक परंपरा,
दिया जनम जिसके लिये, मुझसे वहीं बस तू करा... २

वैराग्य नस नस में धरुं, विवेक हर क्षण आचरुं,
प्रतिकुलता में भी सदा, सुप्रसन्नता धारण करुं,
ना पाप में हो रुचि जरा, करता रहुं बस निर्जरा,
दिया जनम जिसके लिये, मुझसे वहीं बस तू करा... ३

निर्मल बने जीवन सदा, निःस्पृह हो मुझ मन सदा,
निज आत्म के गुण-रश्मि में ही, रमण करुं मैं सर्वदा,
ना जन्म हो वापस यहीं दे '**हीर**' मुझको सर्वथा
दिया जनम जिसके लिये, मुझसे वहीं बस तू करा... ४

...विश्व शांति प्रार्थना...

ना वैरभाव दिखे कही, ना हो अशांति विश्व में,
ना हो कतल किसी की कही, ना रोग फैले जगत में,
ना कुदरती आपत्ति आए, युद्ध ना कही पर चले,
हो विश्व हिंसामुक्त सारा भावना मेरी फले...

48. चार दिनों की चांदनी

(तर्ज - कसमे-वादे-प्यार-वफा सब)

चार दिनों की चांदनी ये, जग है सपने की माया,
साथ तेरे आए कुछ ऐसा, इस जग में तू क्या पाया ?
चार दिनों की चांदनी...

क्या लेकर के[2] आया तु बंदे, क्या लेकर के जाएगा,
पुण्य की गठरी जो ना बांधी, तो भवोभव पछताएगा
मौत छुडाए उसके पहले, छोडा उसने है पाया,
चार दिनों की चांदनी...१

सुख का खजाना[2] है तुझ अंदर, क्यों बाहर तू भटक रहा,
शाश्वत धन पाने के बदले, नश्वर धन में अटक रहा,
दुनिया को समझाता है पर, तू क्यों खुद ना समझ पाया,
चार दिनों की चांदनी पे...२

क्या पाने तू[2] जन्मा था और क्या पाने तू दौड रहा,
खुद की चिंता छोड के जग की, चिंता में सिर फोड रहा,
खुद का '**हीर**' बढे कुछ ऐसा, कर ले इतना बस भाया,
चार दिनों की चांदनी ये...३

भूतकाल में हम भगवान की इच्छानुसार जिए थे इसलिये वर्तमान में हमारी इच्छानुसार थोडा बहोत हो रहा है | वर्तमान में अगर हम हमारी इच्छानुसार ही जीएंगे तो भविष्य में हमारी इच्छानुसार कुछ भी नहीं होगा |

49. भगवान का जवाब

(तर्ज - तू मने भगवान एक वरदान आपी दे)

(भक्त की विनंती)

ओ ! मेरे भगवान यह वरदान मुझको दे,
तू जहाँ रहता वहाँ पर स्थान मुझको दे,

(प्रभु का जवाब)

भक्त को भगवान का संदेश है प्यारा,
मुक्ति उसे ही मिलती है जिसे लगता जग खारा,

जिस तरह मैने सहा, जो तू भी सहन करे,
तो भगत ! बस आज ही, तू स्थान मेरा ले...

(अंतरा)

साधना करनी नहीं, बस बात करनी है,
साधनों में जिंदगी बरबाद करनी है,
धर्म बस तन से नहीं, पर मन से भी पाले,
तो भगत ! बस...१

प्रीत इस संसार की जो तू नहीं तोडे ,
तो ये कातिल कर्म फिर कैसे तुझे छोडे ?
रक्त की हर बूंद में मुझको बसा तू ले,
तो भगत ! बस...२

भोग सुख में लीन बन मुझको स्मरे कब तू ?
मार पडती कर्म की तब ही जपे रब तू,
सुख भरा संसार भी जो त्याज्य ही माने,
तो भगत ! बस...३

जड के खातिर जीवगण को जो तू तडपाए,
तो बता कैसे तू मेरा स्थान तब पाए,
दु:खी जीवों को खुद से ज्यादा जो तू संभाले,
तो भगत ! बस...४

स्वप्न में भी पाप से जो तू नहीं धुजे,
धर्म की बातें भी फिर कैसे तुझे सुझे ?
ना मुझे माने तू फिर भी मेरा जो माने,
तो भगत ! बस...५

दुर्लभ ये मानव जनम फिर कब तू पाएगा ?
मोक्ष की बातें भी फिर कब तू सुन पाएगा ?
जिंदगी की हर घडी में '**हीर**' प्रगटा दे,
तो भगत ! बस...६

50. प्रभु की चिट्ठी

(तर्ज - चिट्ठी आई है)

चिट्ठी आई है, आई है, चिट्ठी आई है,
चिट्ठी आई है, प्रभु की चिट्ठी आई है,
बहुत जनम के बाद, लेकर प्रभु की फरियाद[2],
मुक्ति की मिट्टी आई है... चिट्ठी आई है...

ऊपर मेरा, नाम लिखा है, अंदर ये पैगाम लिखा है,
ओ ! संसार में, रहने वाले, कर्म की मार को, सहने वाले,
काल अनंत से, घूम रहा तू, नश्वर सुख को, चूम रहा तू,
शाश्वत सुख है, तेरे अंदर, क्यों भटके तू, बनकर बंदर ?

अंत में तेरे, साथ क्या आया ? मुझको छोडके, तुने क्या पाया ?
चिट्ठी आई है...१

धन के लिये तू , धर्म को त्यागे, मुझसे भी भोग की, भीख तू मांगे,
योग दशा को, तूने न पाई, भव की भ्रमणा, व्यर्थ बढाई,
मेरी ही बात में, करता दलीले, नाम को करने, जहर भी पी ले,
कल क्या होगा ? तू नहीं जाने, फिर भी तू खुद को ईश्वर माने,
सुख से डरे तू , दुःख को वरे तू , हंसते हुए जो, सहन करे तू ,
तो ही मुझसे, होगी सगाई, शुद्धि बिना सिद्धि नहीं भाई,
चिट्ठी आई है...२

दुःख देकर तू , सुख क्यों मांगे ? सुख के मार्ग से, दूर क्यों भागे ?
पाप में निशदिन, तू जगता है, अपनी ही जात को, क्यों ठगता है ?
दुर्लभ मानव, जनम तू पाया, अब तो सुधर जा, मेरे भाया,
अपने मन को, अब तू मना दे, शुद्ध स्वरूप को लक्ष्य बना दे,
तेरा स्वरूप भी, मेरे जैसा, जो पाना हो तो, छोड दे पैसा,
प्रीत पराई, छोड के आजा, कर्मों का पिंजरा, तोड के आजा[2],
आजा जग तो, दुःख से भरा है, मुक्ति नगर में, सुख पूरा है,
चिट्ठी आई है...३

हम ऐसा चाहते हैं कि
प्रभु सदैव हमारा ध्यान रखें।
परन्तु प्रभु तो उनका ही ध्यान रखते हैं
जो कोइ भी काम करने से पहले
इसमें मेरे प्रभु की आज्ञा क्या है ?
इस बात का ध्यान रखते हैं |

51. कोई तेरे खातिर है मर

(तर्ज - बातें ये कभी ना तू भूलना)

वाणी ये प्रभु की ना भूलना, कोई तेरे खातिर है मर रहा,
मुक्ति ना हो तेरी, तब तक यहाँ , कोई तेरे खातिर है मर रहा,
तेरी हंमेशा कद्र करे, तुझको हमेशा जिंदा रखे,
तेरे लिये वो शहीद हुआ....
वाणी ये प्रभु की...

जल और जमीं, वायु-अग्नि, कण-कण में इनके जिंदगी,
वनस्पति ये जीव सभी, बचने करे नित बंदगी,
तु जो महोब्बत रब से करे, बंदे ये उसके तुझसे कहे,
क्यों हमको कुचले बन अजनबी....
वाणी ये प्रभु की...१

देशप्रेमी लोगों ने दी, निज प्राणों की आहुति,
मर के बचाइ धर्मीजनो ने, भारत की ये संस्कृति,
अवतारों की ये भूमि सदा, अवतार फिर ना होगा यहाँ ,
जो ना जगेगा '**हीर**' तेरा...
वाणी ये प्रभु की...२

जिस वस्तु को हम शरीर से छोड़ते है उसे 'त्याग' कहते हैं और जिस वस्तु को हम मन से भी छोड़ते है उसे 'वैराग्य' कहते है

52. भगवान बनने का मार्ग

(तर्ज - चढता सूरज धीरे-धीरे ढलता है, ढल जाएगा)

: साखी :

हुए इस जहाँ में अवतार कैसे कैसे,
भटकता रहा तू हर बार कैसे कैसे...

तू प्रभु की इच्छा को जीवन में अपनाएगा,
चौरासी के चक्कर से तो ही छूट पाएगा,
प्रभु की भक्ति से ही भगवान तू बन जाएगा,
बन जाएगा²... बन जाएगा²...

भोगसुख में पागल बन धर्म को तू भूला है,
उजले वस्त्र में फिरता, जात से बगुला है,
साधना की बातें तू, करता लंबी चौडी है,
साधनों के पीछे ही, तेरी दौडा-दौडी है,
क्रोधी-मानी-मायावी, लोभी बन तू बैठा है,
आतमा के हित में ही, तू यहाँ क्यों रूठा है ?
छोटी-छोटी बातों में, क्यों यहाँ झगडता है,
कर्मयुद्ध में हरदम, नाक तू रगडता है,
मानव भव दुर्लभ तू, फिर कहाँ से पाएगा ?
पास आके गंगा के, प्यासा लौट जाएगा,
आज पी ले... हो.. आज पी ले धर्म का, अमृत यहाँ मिल जाएगा,

थोडा-थोडा पीकर भी, अमर तू हो जाएगा,
प्रभु की भक्ति से ही भगवान तू बन जाएगा... १

तु अकेला आया है, और अकेला जाएगा,
पाप-पुण्य के सिवा, क्या तेरे साथ आएगा ?
हंसते-हंसते पापों को, बांधता है दीवाने,
रोते-रोते भी कैसे, इनसे छूट पाएगा ?
ताश के महल जैसा, तेरा ये घराना है,
क्या तुझे पता है कि, कब यहाँ से जाना है ?
मृगजल की माया में, सार क्या तू पाएगा ?
रत्न जैसे भव को भी, व्यर्थ ही गवांएगा,
पशुओं जैसा जीवन क्या, इसको भी बनाना है ?
सोच तो जरा दिल में, क्या यहाँ पे पाना है ?
सद्‌गुणों को... हो... सद्‌गुणों को जीवन का लक्ष्य जो बनाएगा,
अर्क तेरी आतमा का हाथ तेरे आएगा,
प्रभु की भक्ति से ही भगवान तू बन जाएगा... २

जड का राग-जीवद्वेष, तेरी कमजोरी है,
इसको दूर कर दे तो, तू ही जग का धोरी है,
जिसको तूने पाया है, वह तो सुख का बिन्दु है,
झांक तेरे अन्दर ही, सुख का महासिंधु है,
यह भव समंदर है, तू यहाँ क्यों डूबा है ?
देख तेरे सन्मुख ही मुक्ति महबूबा है,
आंख बंद होने से, पहले आंख खुल जाए,
जिंदगी का मकसद भी, तो तेरा बदल जाए,
कर्मनाश का बीडा, तू भी जब उठाएगा,
मुक्ति के नगर का तब, राज्य तू भी पाएगा
आज जी ले... हो... आज जी ले ऐसा कि मौत फिर न आएगा,
आत्मगुण रश्मि का '**हीर**' तो बढ जाएगा,
प्रभु की भक्ति से ही भगवान तू बन जाएगा... ३

53. दुर्लभ मिला है तुझको

(तर्ज - आए हो मेरी जिंदगी में तुम बहार बनके)

दुर्लभ मिला है तुझको, मानव जनम ये प्यारा,
पाकर इसे जो खोया[2] ... हाय,
मुश्किल है फिर दुबारा... दुर्लभ मिला है...

नजदीक है यहाँ से, मुक्ति रुपी किनारा,
पाकर इसे जो खोया ... हाय,
मुश्किल है फिर दुबारा... दुर्लभ मिला है...

पशुओं के जन्म में भी, जो भोग तूने पाए,
उसके लिये ये मानव, का जन्म क्यों गंवाए ?
जीना था जो पशुवत्, तो जन्म क्यों ये धारा ?
पाकर इसे जो खोया...१

रोते है देवता भी, मानव जनम को पाने,
ईर्ष्या करे वो तेरी, पर तेरे ना ठिकाने,
रोना पडेगा तुझको, जो जन्म ना सुधारा,
पाकर ईसे जो खोया... २

भगवान बन सके ऐसी क्षमता को तू धारे,
इन्सान तो तू बन जा, बस '**हीर**' ये पुकारे,
कर काम ऐसा कि हो, अवतार ना दुबारा,
पाकर इसे जो खोया...३

मानव जन्म मिलता है बहुत कम को,
परंतु मानव जन्म फलता है किसी को ही।
जो न करने योग्य सभी कार्यों को छोड देगा, उसे ही फलेगा।

54. अंतरयात्रा

(तर्ज – कबीरा)

अंतर में ही अगर मिलता हो, शाश्वत सुख का सिंधु....
तो फिर क्यों भटके तू बाहर, जहाँ मिले ना बिंदु,
ओ भाया, जहाँ मिले ना बिंदु... १

देह विनाशी, हम अविनाशी, हम शिवपुर के वासी,
अजर-अमर हम बाकी यहाँ सब, अंत बिना के प्रवासी,
यहाँ सब, अंत बिना के प्रवासी... २

दुःख को ही सुख मान के पाया, लाख चोरासी फेरा,
तेरा नहीं तृण मात्र यहाँ पर, क्या करे मेरा-मेरा,
यहाँ पर क्या करे मेरा-मेरा... ३

आया अकेला, जाना अकेला, जग दो दिन का मेला,
क्षण में नष्ट हो जाएगा तन तो, है मिट्टी का ढेला,
ये तन तो है मिट्टी का ढेला... ४

धन-वैभव-सुत-स्त्री परिवारा, देख सुपन सम सारा,
आँख बंद होते ही यहाँ सब, हो जावेगा न्यारा,
यहाँ सब हो जावेगा न्यारा... ५

सग्गे-संबंधि मित्र व नाती, स्वारथ के संगाथी,
दुःख में नजर ना आए कोई, सुख के है बाराती,
ये सब सुख के है बाराती... ६

आधि-व्याधि-उपाधि भरा है, ये संसार हमेशा,
'**हीर**' कहे यहाँ जन्म ना हो फिर, काम करो कुछ ऐसा,
ओ भाया, काम करो कुछ ऐसा... ७

55. होता है उसका जय-जयकारा

(तर्ज - जय-जयकारा)

ना कभी अमर बना, जग में कोई यहाँ ,
ना कोई सुख पाया, क्यों न हो शाहजहा,
दु:ख ही दु:ख है मिला, जन्मो जन्म यहाँ ,
छुटे जो मोहमाया, फिर ना जन्म यहाँ ,
छोड के जाएंगे, सबको यहाँ पर हम,
बच ना सके कोई, कितना भी मारे दम,
ना है सहारा, कोई हमारा, कौन बने यहाँ तारण हारा,
कितना भी हो प्यारा...
होता है उसका जय-जयकारा, मृत्यु से जो पाए छुटकारा[2]

चाहे कोई भी उम्र न क्यों हो, इसने किसी को ना छोडा,
ये चाहे उसको उठाए परवा ना किसकी,
चाहे राजा या रंक ना क्यों हो, इसने सभी का दिल तोडा,
इसके आगे सब नाचे बनकर कठपुतली,
कितनी भी हो रखवाली, ले जाए करके खाली,
सब जीवों पर जो निशदिन बरसे
है बादल सी कातिल जहरीली धारा...
होता है उसका जय-जयकारा, मृत्यु से जो पाए छुटकारा[2] ... १

नहीं मृत्यु से पर जन्म से बचना चाहे वह ज्ञानी,
जब तक है जन्म तब तक मृत्यु है आनी,
जब तक इच्छा जीवित है तब तक जन्म धरे प्राणी

ना चाहो जन्म तो कर दो इच्छा की हानि,
होती जब इच्छा खाली, मिलती है तब खुशहाली,
ना होते जन्म, ना मिलती मृत्यु, मिट जाए सब
जीवन के दु:खों की धारा...
'**हीर**' कहे कर दो जयकारा, इच्छा से पा लो अब छुटकारा

होता है उसका जय-जयकारा, इच्छा से जो पाए छुटकारा
होता है उसका जय-जयकारा, जन्म से जो पाए छुटकारा
होता है उसका जय-जयकारा, मृत्यु से जो पाए छुटकारा...

56. जागो रे... जागो रे...

(तर्ज - लहरा दो...)

अपने हाथों में आज है, आगे क्या होगा ये तो किसको पता,
जागे उनकी ही जित है, सोने वालों पर आएगी आपदा...
जागो रे... जागो रे... आत्म कल्याण हेतु जागो रे...
पाया है... पाया है... दुर्लभ मानव का जन्म पाया है...

हो... छोडना जहाँ दुर्गुणों को, अपनो को क्यों छोड रहा ?
आत्म शुद्धि छोडकर समृद्धि पाने क्यों दौड रहा ?
जीना है महेमान सम क्यों बनने मालिक तडप रहा ?
छोड ही जाना है जिसको उसको पाने क्यों हडप रहा ?
जागो रे... जागो रे... आत्म... १

हो... एक एक क्षण है अमूल्य उसको जो बरबाद करे,
भव अनंत में भटके फिर वह दु:ख की ही फरीयाद करे,
साप जितना पाप का भी डर लगेगा जिसको यहाँ ,
'**हीर**' कहे वह सब दु:खों से मुक्त बन जाएगा यहाँ ,
जागो रे... जागो रे... आत्म... २

57. विश्वशांति गीत

(तर्ज - ए मेरे वतन के लोगों)

: साखी :

ओ मानव के अवतारों , तुमको जीवन है प्यारा,
जीव मात्र भी जीना चाहे, मरना ना किसीको है प्यारा
पर खुद के स्वार्थ के खातिर, जो करते हैं हिंसा पराई
वो मानव नहीं दानव है, जो पीडा न जाने पराई[2]

ओ मांस को खाने वालो, छोडो अब ये मिजबानी,
जो कत्ल हो रहे उनकी, सुनो दर्दभरी ये जुबानी,
मांगी थी प्रभुने बुराई, ना मांगी कोई जिंदगानी,
जो कत्ल हो रहे... १

जो तुमको दुःख नापसंद है, तो क्यों हमको तडपाओ ?
जो ताकत हो तो खुद को, एक सुई भी तो चुभाओ
दुःख दोंगे दुःख ही मिलेगा, यहीं सब ग्रंथों की है वाणी...
जो कत्ल हो रहे... २

हम घास ही तो खाते है, फिर भी काटे जाते है,
सोचो उनका क्या होगा ? जो अंडे व मांस खाते है
शरणागत को जो मारे, कहते है उसे हैवानी...
जो कत्ल हो रह... ३

जैसा भोजन वैसा मन[2], हिंसकता मांस से आए[2],
ना शांति मिले कभी उनको, आपस में ही लड मर जाए[2]
खुश होते प्रभु उस पर ही, खुद मर के बचाए जो प्राणी...
जो कत्ल हो रहे...४

हम मानव बिन जी सकते, पर हम बिन तुम संकट में
मारोंगे जितने हमको, उतने तुम भी आफत में
जो जीना हो तुमको तो[2], रक्षो तुम सारे प्राणी,
वर्ना वो तांडव होगा...[2], ना मिलेगी तुम्हारी निशानी[2],
जो सर्व जीव हितचिंतक, भगवान बने वहीं प्राणी

जो कत्ल हो रहे...५

करुणा... करुणा... जीव मात्र पे करुणा[2].....

करुणा... करुणा[4]...

58. End of the Love (Part-1)

(तर्ज - क्योंकि तुम ही हो...)

हम तुझको अब सह नहीं सकते, तुने बिगाडा दिमाग मेरा...
हम किसीको जो कह नहीं सकते, तुने किया वो हाल मेरा...
तुझसे जुदा गर हम ना हुए तो होंगे हम बरबाद यहाँ ....
क्योंकि तुम ही हो, बस तुम ही हो....
मेरा दर्द भी बस तुम ही हो...
मौत भी, यमराज भी, मेरा अंत भी अब तुम ही हो...

तेरा-मेरा रिश्ता है कैसा, एक पल साथ गंवारा नहीं,
तेरे ही कारण रोज है रोते, तुने दिखाई नरक यहीं,
मेरी सबसे बडी थी वो दुर्घटना, जिस दिन मैं तुझसे जुडा...

क्योंकि तुम...१

तुम ही हो... तुम ही हो... (आलाप)
मरते हुए, ही जिया मैं, तुझको जो यु, रख लिया है,
तेरी ही माँ ने तुझको निकाला, और मेरी माँ को तुने निकाला,
तेरे संग से मेरा नसीब फुटा, तुजे पाके कहीका ना रहा.. क्योकि..२

59. आया कोरोना, अब तो जागो

(तर्ज - युगो सुधी झळहळशे भुवनभानुना अजवाळा)

पैसे की अंधी दौड को अटकाने इन्सान की,
पोल खोलने आया है जो, विकास और विज्ञान की,
आया कोरोना, अब तो जागो ना...

हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, इससे ना कोई बच पाया,
राय-रंक का भेद मिटाकर, इसने सब को अपनाया,
साम्यवादी के देश में जन्मा, सबको एक समान गीने,
सबसे बडा आतंकवादी ये, आतंकी भी इससे डरे,
सबको एक दुजे में लगे अब प्रतिकृति शैतान की
पोल खोलने आया है जो...१

ना पैसा ना पद-प्रतिष्ठा, कोई यहाँ पर काम लगे,
ना पहचान ना रीश्वतखोरी, ना विज्ञान भी बचा सके,
कोई सुरक्षित नहीं यहाँ पर, किसी समय भी जाना पडे,
क्षणभंगुर है जग ये सारा, अनुभव अब बच्चे भी करे
नास्तिक और आस्तिक दोनो अब माला गिने भगवान की...
पोल खोलने आया है जो...२

प्रकृति और पशुओं पर जो अत्याचार किये हमने,
उनकी ही बद्दुआ के कारण कोरोना आया है ये,
विनाश ही अब होता रहेगा, अब भी गर हम ना सुधरे,
विकास नहीं विवेक बढाओं, ऐसा ये आह्वान करे,
'**हीर**' कहे सब में देखों बस, आकृति भगवान की
पोल खोलने आया है जो...३

60. प्रजा के मन की बात

(तर्ज - हे प्रभु ! आनंददाता)

भूखा न सोए मानवी, ना हो कतल पशु की कभी,
बेरोजगारी ना यहाँ , अपराध भी ना हो कभी,
ना हो प्रदुषित जल-जमीं, वायु कभी यह कीजिए,
ओ मोदी ! भारत को हमेशा विकास ऐसा दीजिए[2]... १

ना आत्महत्या ना कभी, अश्लीलता को स्थान हो,
करना पडे ना देह विक्रय, दिल से सब इन्सान हो,
बन जाए विश्व गुरु ये फिर से, मन से प्रण ये लीजिये
ओ मोदी ! भारत को हमेशा विकास ऐसा दीजिए[2]... २

है जीवन पर उपकार करने, ऐसी ही शिक्षा मिले,
डिग्री नहीं पर सद्‌गुणों का लक्ष्य बचपन से मिले,
ओ मोदी ! भारत की प्रजा की बात मन पर लीजिए,
ओ मोदी ! भारत को हमेशा विकास ऐसा दीजिए[2]... ३

ना आए अच्छे दिन भले पर कोई भी ना बूरा मिले,
है साथ सबका तो यहाँ क्यों विकास सबका ना मिले,
अब 'मेक इन इंडिया' नहीं पर 'मेड इन भारत' कीजिए,
ओ मोदी ! भारत को हमेशा विकास ऐसा दीजिए ... ४

प्रश्न : रुपये के अंदर गांधीजी का चित्र क्यों ?
उत्तर – जब भी क्रांति की आवश्यकता हो
तब भी भारतीय लोग अहिंसा - अहिंसा का नारा
लगाकर शांति से पड़े रहे | कहीं इसलिये तो नहीं ?

61. कर दे अर्पणम् , जीवन अर्पणम्

(तर्ज - आओ बच्चों तुम्हे दिखाए झांकी हिन्दुस्तान की)

देखो भैया नाजुक हालत आज के हिन्दुस्तान की,
इसे जरुरत आज बहुत है, तेरे ही बलिदान की,
कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम्...

रामभरोसे देश चल रहा, महाभारत है घर-घर में,
हर सीता को विश्वसुन्दरी, बनना है अब पल-भर में,
रावणराज्य ही इससे बेहतर, होगा ऐसा लगता है,
कुंभकरण सम जनता सोई, कौन यहाँ पर जगता है,
आज फंसी है भारतमाता, फौज खडी शैतान की,
इसे जरुरत आज बहुत है, तेरे ही बलिदान की,
कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम्...१

अहिंसा की हिंसा कर दी, महावीर की कौन सुने ?
चारो ओर जहाँ पर देखो, भ्रष्टाचार का भूत धुने,
नेता भी अभिनेता के सम, अपने आप को बेच रहे,
सरस्वती के मंदिर में ही, उसके चीर को खेंच रहे,
आज रखो तुम नीव यहाँ फिर, नेकी और ईमान की,
इसे जरुरत आज बहुत है, तेरे ही बलिदान की,
कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम्...२

विश्वगुरु भारत का देखो, कैसा बदल गया पहलू,
कृष्ण भी अब चिंतित है काफी, फिर अवतार कहाँ पर लुं?
जन्म से पहले मार ही देते, कंस यहाँ पर घर-घर में,
पापराज का तांडव चलता, मोबाईल के अन्दर में
लाओ क्रांति नहीं तमन्ना, और किसी वरदान की,

इसे जरुरत आज बहुत है, तेरे ही बलिदान की,
कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम्...३.

अब भी गर तुम ना जागे तो, शेष देश बंट जाएगा,
विश्वशांति फैलाने वाला, धर्म सदा मिट जाएगा,
पंथभ्रष्ट ये भारत कैसे, जग को पंथ पे लाएगा ?
अवतारों के देश में आखिर, अंधकार छा जाएगा,
आज तु अपना '**हीर**' जगा दे, बहा दे गंगा दान की,
इसे जरुरत आज बहुत है, तेरे ही बलिदान की,
कर दे अर्पणम्, जीवन अर्पणम्...४

62. आओ भारत को ना बनाए

(तर्ज - आओ बच्चों तुम्हे दिखाए)

आओ भारत को ना बनाएँ झांकी कब्रस्तान की,
हम सब मिलके क्यों करे, बरबादी हिन्दुस्तान की....
वंदे भारतम्, वंदे मातरम्...

हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई, निर्भय ना कोई दिख पाया,
देव-देवी भी दंग हो जाए, ऐसा दंगा करवाया,
यहीं छोड के जाना है सब, ऐसा क्यों ना रटवाया,
निज दोषों की कत्ल के बदले, औरो को क्यों मरवाया ?
सबको एक-दुजे में दिखे अब आकृति शैतान की...
हम सब मिलके क्यों करे... १

छोटे बच्चों के भी हाथ में स्मार्ट फोन क्यों पकडाया ?
उसमें सब कुछ देख सके ऐसा ईन्टरनेट डलवाया,
ऐसा देख जो गलत करे उसे फांसी पर ही लटकाया,

पर जो गलत सिखाए उनको सेलिब्रिटी क्यों दर्शाया ?
दिखाए क्यों ऐसा जिससे ना शरम रहे भगवान की...
हम सब मिलके क्यों करे...२

रसायनिक खादों से क्यों भोजन जहरीला बनवाया ?
G.M. फुड खीलवाकर सबको रोगों से क्यों घीरवाया ?
आत्महत्या करे क्षण-क्षण ऐसा शिक्षण क्यों दिलवाया ?
ड्रग्स-ड्रिंक्स-बेरोजगारी में युवाधन क्यों फंसवाया ?
लक्ष्य बिना का जीवन इनका, नकल करे सुलतान की
हम सब मिलके क्यों करे...३

उद्योगो के नाम पर कुदरत पर क्यों संकट लाया ?
जल-जमीं और वायु को क्यों अति जहरीला बनवाया ?
गेस चेम्बर बनी दुनिया क्यों ईतना प्रदुषण फैलाया ?
कच्ची उम्र में पकने लगे सब, घर घर में मातम छाया,
क्यों बने संतान सभी हम, रावण के खानदान की
हम सब मिलके क्यो करे...४

अपने ही हाथों से क्यों हम, अपना ही विनाश करे ?
स्वच्छ के साथ में स्वस्थ व सज्जन भारत भी रहने दे,
स्वर्गवासी भी भारतवासी बनने की इच्छा धरे,
विश्वगुरु फिर से बने ये ऐसी हम कोशिश करे,
'**हीर**' कहे भारत बने फिर जन्मभूमि भगवान की
हम सब मिलके क्यो करे...५

भा - प्रकाश, रत – प्रयत्नशील। जो सदैव ज्ञान रूपी प्रकाश प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है उसे 'भारत' कहते है ।

63. वंदे मातरम्

भारत में अब महाभारत हम नहीं चलाएंगे,
विश्वगुरु कहलाए ऐसा देश बनाएंगे....
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्...

सोने की चीडीया को अब तक सबने लुंटा था,
अहिंसक समझकर हमको सबने पीटा था,
अब तो अपने सैनिकों को हम ना गंवाएंगे
विश्वगुरु कहलाए... १

फुट डाल कर राज्य किया था उनको भगाया है,
लाखों का बलिदान देकर देश ये पाया है
रामराज्य को फिर से हम भारत में लाएंगे
विश्वगुरु कहलाए... २

महावीर और रामकृष्ण भी जहाँ पे जन्मे थे,
योग-ध्यान और लाखों ग्रंथ भी जहाँ से प्रगटे थे,
ऐसी पावन भुमि फिर से ना बटवाएंगे,
विश्वगुरु कहलाए...३

बेकारों की फौज को जिसने जन्माया है,
सारी समस्याओं का जहाँ पे मूल समाया है,
ऐसी पश्चिम की शिक्षा को हम बदलाएंगे,
विश्वगुरु कहलाए...४

'जीओ और जीने दो सबको' मंत्र हमारा है,
विविधता में एकता हमारा नारा है,
'**हीर**' कहे हम ही जग में शांति फैलाएंगे...
विश्वगुरु कहलाए...५

64. भारत माता के वीरो...

(तर्ज - लहरा दो : 83)

भ्रमणा में भारत है फंसा, आगे क्या होगा ये तो किसको पता ?
जागृत है वो ही जीएंगे, सोने वालों पर आएगी आपदा...
जागो रे... जागो रे... भारत माता के वीरों जागो रे....
आया है... आया है... भारत माता पर संकट आया है...

हो... देखते ही देखते अब देश सारा बिकने लगा,
महंगाई की मार से मध्यम वर्गी भी रोने लगा,
जिसको रक्षक माना था अब वो ही भक्षक बनने लगा,
भगतसिंह जैसा भी अब तो खुद ही फांसी चढने लगा
जागो रे...१

हो... रो रही भारत माता, कहे किसे अब खुद की व्यथा,
महाभारत के युद्ध से भी है भयंकर आज दशा,
राम मंदिर बन गया पर हर तरफ रावण ही दिखे,
गर्भ में ही है सुरक्षित कन्या अब तो ऐसा लगे,
जागो रे...२

हो... नकली रोगों में दवा के नाम खाए असली जहर,
बोल दे जो सच कोई तो टूटता है उस पे कहर,
सत्य और नैतिकता अब जी रही ओक्सिजन पर,
'**हीर**' अब अपना जगा दो, साफ ना होना हो अगर
जागो रे...३

भारतीय प्रजा वापस विश्वगुरु न बन जाएं इसलिए तरह-तरह की साजिशों से उसे खत्म किया जा रहा है।

65. कोमेडी सोंग

चातुर्मास के अंत में युवाओं की तरफ से म.सा.को समर्पित अनोखी भेट

(तर्ज - आओ बच्चों तुम्हे दिखाए)

देखो भैया चौमासे में जादुगर कोई आया है,
आकर इसने दिल में हमारे, ऐसा भाव जगाया है,
ले लो रजोहरण, कर लो कर्महरण[2]...

(भूतकाल)

रामभरोसे हम जीते थे, राम नाम ना लेते थे,
रावण सम हम सीता जैसी, कन्या भी छेड देते थे,
इन्टरनेट और ढाबे पर ही, अड्डा रोज जमाते थे,
प्रभावना लेने ही हम तो, धर्मक्षेत्र में आते थे,
पैसा मिले तो हमको लगता, मोक्ष का सुख पाया है...
आकर इसने दिल...१

(वर्तमान)

इस चौमासे इनाम खातिर, तत्त्वज्ञान का क्लास भरा,
पर जिनवाणी सुनकर जागा, आतम में विवेक जरा,
पता चला कि जो ना सुधरे, तो हम नरक में जाएंगे,
काल अनंते भी वापस ये, मानव भव ना पाएंगे,
अब तो व्रत नियमों से हमने, जीवन धन्य बनाया है
आकर इसने दिल... २

(संसार स्वरूप)

महामानव बनने के बदले, शादी करने जाएगा,
दो बच्चों का बाप तू घर की, घंटी में पीस जाएगा,
रुपया ना मिला तो घरवाली की गाली खाएगा,
कुत्ते जैसा जीवन जीकर, दुर्गतियों में जाएगा,
है संसार असार हमें अब, खुब समझ में आया है
आकर इसने दिल...३

आखिर हमने सोच लिया है, हमको अब क्या करना है,
कृष्ण के जैसा सारथि पाकर, अर्जुन हमको बनना है,
आतम के शत्रु कौरव सम, पापों से ही लडना है,
कर्मों के इस महाभारत में, जय केसरिया वरना है,
This is ogha, not for bogha '**हीर**'ने कहलाया है,
आकर इसने दिल...४

66. ग्रंथ विमोचन गीत

(तर्ज - छोडो कल की बातें)

आनंद अवसर आया, सबके मन को भाया ,
वीर की दुर्लभ वाणी का, जिसमें सार समाया ,
करो ग्रंथ विमोचन[4]...

शाश्वत सुख को पाने का जो मार्ग जताए...
भवभ्रमणा अटकाने की जो बात बताए....
सुख तो तेरे अंदर है ये जिसमें लिखा है...
जिसके आगे दुनिया का सुख भी फीका है...
ऐसे ग्रंथ को, जो ना जाने, उसने बहुत गवाया...
करो ग्रंथ विमोचन[4]...१

भोग के पीछे भटका तो क्या खाक जिया तू ,
दुर्लभ मानव जन्म को फिर से राख किया तू ,
पुनरावर्तन छोड के परिवर्तन करना है ,
फिर ना जन्म हो सके ऐसे अब मरना है ,
निर्ग्रंथो का, '**हीर**' है जिसमें, ग्रंथ वो जग में आया ,
करो ग्रंथ विमोचन[4]...२

**जिसे कवल ज्ञान नहीं है वह केवल ज्ञान तक
कोई हिसाब में नहीं पहुँच सकता।**

67. श्रुतज्ञान गुणगान

(तर्ज - जीना-जीना)

पतझड सा था मेरा तन मन, श्रुतने किया सावन
अब धन तो क्या पूरा जीवन, कर दूं इसे अर्पण
सिखाया मुझे जीना-जीना, कैसे जीना,
सिखाया मुझे जीना यहाँ श्रुतने
ना और कहीं जाना-जाना, कहीं जाना
ना श्रुत बिना जाना कहीं मुडके

जो साथ ना कभी छोडे, वो मिलाया है साजन
श्रुत प्रीत से करुं मैं भी, परमात्म पद अर्जन
है अब इसे माना-माना, इसे माना
है अब इसे माना मेरा प्रितम
ना और कहीं जाना-जाना, कहीं जाना
है श्रुत बिना सुना मेरा जीवन

अब मैने अनुभव पाया, प्रभु की बात खरी है,
अवसर ने समझाया, दुनिया ये स्वार्थ भरी है,
प्रभु के पास में जाने, हुआ मेरा सर्जन,
ओ... श्रुत '**हीर**' से मेरी हर क्षण वन से बने उपवन
अब धन तो क्या पूरा जीवन कर दूं इसे अर्पण
सिखाया मुझे जीना-जीना...

'अमृत' शब्द तो इस दुनिया में है, लेकिन वो कहाँ है वह किसी को नहीं पता । 'सम्यक् ज्ञान' ही वास्तव में अमृत है क्योंकि जिसने - जिसने भी इसका सेवन किया है वे सभी अमर हो गए।

68. एवा छे आ ज्ञान भंडारो...

(तर्ज – बस ऐसी है मेरी आरजु)

साखी

प्रभु वीरना मुखथी नीकळी जे, अमृत सरखी परावाणी जे
ते अमृत आजे पण ज्यां छे, वंदु ते ज्ञान भंडारोने...

जेमां शाश्वत ज्ञान प्रवाहने, झीलायो छे प्रत्येक क्षणे,
इतिहास अने वर्तमान तणो, संगम छे जेमां कणे-कणे,
छे सरस्वतीनी कर्मभूमि, विद्वानोनी विचरणभूमि,
संस्कारोनी आधारभूमि, महापुरुषोनी जे जन्मभूमि,
भारतने जे भव्य करे, विश्वगुरुनो ताज धरे,
एवा छे आ ज्ञान भंडारो...
जिनशासनने अमर करे, सुख अंतरनुं प्रगट करे,
एवा छे आ ज्ञान भंडारो...

बहोत्तेर अने चौसठ कला, संस्कृति तेमज परंपरा,
न्याय-व्याकरण-खगोळतणा, संग्रहथी जे दीपे छे खरा,
भूगोळ-गणित-विज्ञान अने लिपी भाषा-ज्योतिष तणा,
आगम अने वेद-पुराणतणा, शुभ ग्रंथो भर्या छे जेमां घणा,
सज्जनताने प्रसरावे, दुर्जनताने अटकावे,
एवा छे आ ज्ञान भंडारो...
'**हीर**' आतमनु प्रगटावे, गुण रश्मिने फैलावे,
एवा छे आ ज्ञान भंडारो...

वर्तमान में हम जो भी सुख भोग रहे हैं,
उसका एकमात्र कारण, यदि कोई है, तो वह है - सम्यक् ज्ञान

गुजराती
गीत
विभाग

69. भगवाननो जवाब

(तर्ज - तुं मने भगवान एक वरदान आपी दे...)

(प्रभुनो जवाब)

भक्तने भगवान बनवा मार्ग छे सारो,
भक्तिना पंथे जईने मोक्षने वरो,

जे रीते में सहन कर्युं, तिम तुं पण सही ले,
आज ने आजे भले, तुं स्थान मारुं ले...

साधना करवी नथी, बस वात करवी छे,
साधनोमां जिंदगी बरबाद करवी छे,
धर्म जे होठे वस्यो, ते हैये लावी दे,
आज ने आजे भले... १

प्रीत आ संसारनी, जो तुं नहीं तोडे,
क्रूर आ कर्मो पछी क्यांथी तने छोडे,
रक्तनी हर बुंदमां मुजने वसावी ले,
आज ने आजे भले... २

भोग सुखमां लीन तुं मुजने स्मरे क्यारे ?
मार पडता कर्मनी, मुजने तुं संभारे,
सुखभर्या संसारथी पण जो तुं कंटाळे,
आज ने आजे भले... ३

जड जगत खातर तुं जो जीवोने तरछोडे,
स्थान मारुं पामवा तो व्यर्थ तुं दोडे,
दुःखी जीवोने जोईने अंतरथी तुं जो रडे,
आज ने आजे भले...४

स्वप्नमां पण पापथी जो तुं नहीं ध्रूजे
धर्मनी वातो पछी क्यांथी तने सूझे ?
ना मने माने भले, पण मारुं जो माने,
आज ने आजे भले...५

दोहिलो मानव जनम क्यारे फरी मळशे ?
मोक्ष ने वैराग्यनी क्यां वात सांभळशे ?
जिंदगीनी हर घडीमां '**हीर**' लावी दे,
आज ने आजे भले...६

70. प्रभु वीरनुं हालरडुं

(तर्ज - श्याम तेरी बंसी)

त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे हो आज,
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज....
पारणामां झूले जुओ... त्रिभुवन शिरताज,
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...

हो... सोना रूपा केरुं पारणुं बंधावे,
रेशमनी डोरीथी प्रभुने झुलावे,
रत्न केरी घंटडीना थाय रणकार[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...१

हो... तारा जन्मे पामे सहु जीव शाता,
अंधारी नरके पण अजवाळा थातां,
इन्द्र सिंहासन पण करतो अवाज[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...२

हो... छप्पन दिक्कुमरी सहु दोडी-दोडी आवे,
देवेन्द्र जन्माभिषेक रचावे,

मेरुगिरी डोले तारा स्पर्शे हो राज[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...३

हो... तुजने नीरखवा देवताओ आवे,
नगरीना लोको सहु अचरज पावे,
जुग-जुग जीवो तमे नीसरे उद्गार[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...४

हो... पा-पा पगला भरता प्रभु तमे ज्यारे,
सिद्धार्थ राजा पण हरखाता त्यारे,
मोहराजा थया तुज जनमे नाराज[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...५

हो... वर्धमान-महावीर तारा छे नामो,
करतो जगत तने नित्य प्रणामो,
आत्म गुण-रश्मिमां '**हीर**' दे तुं आज[2],
गावे हालो-हालो मारा नंदने हो राज...६

हम सैकड़ों गलतियाँ करते हैं
फिर भी भगवान हमें माफ कर देंगे ऐसी हम अपेक्षा रखते है
तो जो लोग एकाध गलती करते हैं
क्या हमें उन्हें माफ नहीं करना चाहिए ?

★★★

धनवानों को देखकर जैसे धनवान बनने की इच्छा जगती है, वैसे भगवान की मूर्ति देखकर, यदि भगवान बनने की इच्छा न जगे तो समझो कि हम ‘ पक्के संसारी ’।

71. એવું દે વરદાન...

(તર્જ - એ મેરે પ્યારે વતન)

હું પ્રભુ તને ઓળખું, હું પ્રભુ તુજમાં ભળું, એવું દે વરદાન,
કર્મવશ ભવમાં રુળુ, પણ નહીં તુજને ભૂલું, એવું દે વરદાન,

ભવ અનંતા તુજ વિના, પ્રભુ માહરા નિષ્ફળ ગયા,
દર્શ તાહરું આજ પામી, નયન મુજ સફળા થયા,
મન થકી તું ના ખસે, સ્વપ્નમાં બસ તું દિસે...
એવું દે વરદાન...૧

માર્ગ તાહરો છે રૂડો, પણ લાગે મુજને આકરો,
વિષ સમો સંસાર આ, પણ લાગે મુજને મધપૂડો,
તૃષ્ણા માહરી વિરમે, તુજ વિના કશું ના ગમે....
એવું દે વરદાન...૨

પાપફળ જાણું છતાં, પણ પાપ ના છોડી શકું,
એવું દે તું બળ મને, નિજ કર્મ હું તોડી શકું,
તારી આણા શીર ધરું, તારા પંથે સંચરું...
એવું દે વરદાન...૩

ભવભ્રમણનો થાક લાગ્યો, છે ખરો મુજને હવે,
તુજ સરીખો નાથ પામી, કેમ હું ભટકું ભવે,
આત્મગુણ રશ્મિ વધે, **હીર** માહરું વિસ્તરે....
એવું દે વરદાન...૪

'आप कितना जिए' यह महत्त्वपूर्ण नहीं है,

लेकिन आप ' कैसे जिए ' यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

72. फरी लेवो पडे ना जनम

(तर्ज - जिंदगी की ना टूटे लडी)

फरी लेवो पडे ना जनम, नाथ आपी दे एवुं मरण,
बंद थाय आ भवना भ्रमण, नाथ आपी दे एवुं मरण,
शाश्वता काळ सुख आपनारी, थाय मुक्तिकन्यानुं वरण,
नाथ आपी दे एवुं मरण...

लाख चोरासी योनि फर्यो, नथी मरवुं छतां पण मर्यो,
हवे भीषण आ भवथी डरी, तने नाथ में मारो कर्यो,
हवे हर क्षण हो... हवे हर क्षण हो तारुं स्मरण,
नाथ आपी दे एवुं मरण...१

चांदनी चार 'दी'नी अहीं, पछी घोर अंधारु सदा,
आवा संसारमां सार तुं, तारो प्यार हुं झंखुं सदा,
थाय बुद्धिनुं... थाय बुद्धिनुं शुद्धिकरण,
नाथ आपी दे एवुं मरण... २

दु:खने दूर करवा भम्यो, पण सुखदाई तुं ना गम्यो,
बस मोह मायामां रम्यो, मारा मनडाने में ना दम्यो,
थाय आतममां... थाय आतममां '**हीर**' स्फुरण,
नाथ आपी दे एवुं मरण...३

प्रभुजी... तारा विना... लागे ना... रे मनवा....

वापस जन्म कहाँ लेना ? यह हमारे हाथ में नहीं है,
लेकिन वापस जन्म लेना या नहीं ? यह तो हमारे हाथ में ही है।

73. जगना तारणहार

(तर्ज - ना कजरे की धार)

जगना तारणहार, मुज दोषोने हरनार,
मांगु हुं वारं वार, मुजने सन्मति आपोने,
के मुजने सन्मति आपोने...

भीषण भव मोझार, भटक्यो हुं अनंतीवार,
थाकीने मांगु आज...
मुजने मुक्ति आपोने के मुजने मुक्ति आपोने,
हो... हो ...हो... आ... आ... आ...

हुं सूक्ष्म निगोदे बेठो, पण तुज दृष्टिमां पेठो,
तुज करुणा त्यारे वरसी, व्यवहारराशी में स्पर्शी,
भमी आव्यो गति चार[2], पाम्यो हुं मनुज अवतार...

जगना..१

संसार चक्रमां तुजने, में काल अनंते दीठा,
पण मोहतणा चक्करमां, ना लाग्या प्रभुजी मीठा,
तुज वाणी ना पीछाणी[2], दीधा में तुजने विसार...

जगना..२

निज-क्रोध-मान-मायादि, में धर्मना नामे पोष्या,
जे काळ अनंतथी वळग्या, ते कर्मोने नवि शोष्या,
गयो फोगट आज मारो[2], दुर्लभ मानव अवतार...

जगना..३

जे अढार पापस्थानो, ते में अति रसथी कीधा,
तुज धर्म तणां जे स्थानो, ते ध्यानमां ना लीधा,
संसारे जेथी पाम्यो[2], दुःखो तणी वणझार...

जगना..४

संसारथी कंटाळी, हवे तारा शरणे आव्यो,
ते मुजने शरणे राखी, करुणा रसथी नवराव्यो,
थयो पावन आज हुं तो[2], नथी भवभय मुजने लगार..

जगना..५

74. प्रभु तुं तो मारो छे जीवन आधार

(तर्ज - जमाने के देखे है रंग हजार)

प्रभु तुं तो मारो छे जीवन आधार,
नथी कोई तारा विना...

प्रभु तुजने पामी थयो हुं सनाथ,
नथी कोई तारा विना...

निगोदे ने नरके, रह्यां एक साथे,
ने भीषण आ भवमां, भम्या एक साथे,
गया केम मुगते, छोडी मुजने नाथ,
नथी कोई तारा विना...१

तारी वात भूल्यो, ना पापोथी अटक्यो,
विरह तारो मुजने, ना दिलमांही खटक्यो,
भवोभव हुं भटक्यो, बनीने अनाथ,
नथी कोई तारा विना...२

तारी आणने में, ना दिलमांही धारी,
विषय सुख माटे, बन्यो हुं भिखारी,
दु:खो पाम्यो भारी, ते बदले हुं नाथ,
नथी कोई तारा विना...३

धरमनुं फळ मांगु, धरमथी हुं भागु,
ने पाप प्रसंगे, हुं निशदिन जागु,
करुण छे कहानी, आ मारी ओ नाथ,
नथी कोई तारा विना...४

प्रभु मारी सुणजे, तुं अंतर अवाज,
करुं हुं विनंती, तारी पासे आज,
भवोभव मुजने, मळे तारो साथ,
नथी कोई तारा विना...५

तारी वात समजुं, समज एवी देजे,
तने ओळखुं एवी शक्ति तुं देजे,
आतम गुण रश्मिमां '**हीर**' दे नाथ,
नथी कोई तारा विना...६

वैज्ञानिक जितनी मेहनत पदार्थ को जानने के लिए कर रहे हैं
यदि उसका 10% भी प्रयास आत्मा को जानने के लिए करें
तो समस्त मानव जाति का कल्याण हो जाएगा |
साथ ही मौजूदा जितनी भी समस्याएं है
वह भी तुरंत ही समाप्त हो जाएंगी।
जितनी-जितनी सुविधाएँ बढ़ रही हैं
उतनी-उतनी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं,
इससे सिद्ध होता है कि विकास की दिशा ही ग़लत है।

जिसे खुद के शरीर की भी चिंता नहीं है वह है ‘ मूर्ख ‘। जिसे मात्र शरीर की ही चिंता है वह है ‘ नास्तिक ‘। जिसे परलोक की भी चिंता है वह है ‘आस्तिक ‘। और जिसे अपने अनंत काल की चिंता है वह है ‘ आध्यात्मिक ‘।

75. ओ करुणाना सागर प्रभु

(राग - ए मालिक तेरे बन्दे हम)

ओ करुणाना सागर प्रभु, तारी करुणाने वरसाव तुं,
मारी तृष्णा मरे, मारो आतम ठरे, मारा हैये हवे आव तुं.
ओ करुणाना सागर प्रभु...

हुं अनादिथी भटकी रह्यो, तारो साथ घणो में लह्यो,
तारी पाछळ भम्यो, पण तुं ना गम्यो, तेथी आजे य रखडी रह्यो,
तारा प्रेममां पागल बनुं, मने एवुं व्यसन आप तुं,
मारी तृष्णा मरे, मारो आतम ठरे... १

तारी वातो हुं ना सांभळुं, मारी इच्छा प्रमाणे करुं,
सुखमां राचतो, दुःखथी भागतो, बस पापोनो भार भरुं,
तारी इच्छा प्रमाणे जीवुं, मने एवुं जीवन आप तुं,
मारी तृष्णा मरे, मारो आतम ठरे... २

भवदाहथी सळगी रह्यो, तारा स्थानने झंखी रह्यो,
धर्म समजु छतां, नवि भावो थतां, तारा मारगथी फफडी रह्यो,
तारा मारगे हुं संचरुं, मने सामर्थ्य एवुं दे तुं,
मारी तृष्णा मरे, मारो आतम ठरे...३

हवे नाथ रडीने कहुं, मने तरछोड ना साव तुं,
बहु थाकी गयो, काळ पाकी गयो, मारा आतमने शणगार तुं,
तारा जेवो ज हुं पण बनुं, मने एवुं देजे '**हीर**' तुं,
मारी तृष्णा मरे, मारो आतम ठरे....४

नोकरी भी विचित्र चीज है, खुद के घर पर जाने के लिये दूसरों के पास परमिशन लेनी पडती है ।

76. आत्म संवेदना

(तर्ज - कर चले हम फिदा)

हुं प्रभु शुं कहुं, तुजने मारी कथा,
तुं हवे दूर कर, मारा भवनी व्यथा...

बहु पुण्ये हूँ पाम्यो छुं मानव जनम,
तेने एळे गुमावीने बांध्यां करम,
वळी तेहथी दुर्लभ जे तारो धरम,
पाम्यो पण न परख्यो में तेनो मरम,
माफ करजे विभु, मारी आ मूर्खता...१

हुं तो भाव विना, मात्र किरीया करुं,
मारा भवभ्रमणमां वधारो करुं,
पर उपदेशमां हुं परम पंडितो,
पण भाव धरमथी तो हुं भागतो,
मानुं ना हुं भले, तारी वातो छतां...२

तुं अचिंत्य चिंतामणी कल्पतरु,
तने पाम्यो छतां, जो हुं भवमां फरुं,
लाज तारी जशे, तारी हाँसी थशे,
तारो विश्वास लोकोने केम थशे ?
एवुं कर के वधे ताहरी आसथा...३

हुं तो पापो ने दोषोनो दरियो पूरो,
आ जगतमां मारा जेवो कोण बूरो ?
भवसागर तो तरवो छे कर्मो नडे,
तुं साथ रहे तो किनारो जडे,
मारा आतमने देजे तुं '**हीर**' सदा...४

77. स्मरणमां ने सुपनामां

(तर्ज - नयनने बंद राखीने में ज्यारे)

: साखी :

तारा मिलननी प्यासने बुझावी शक्यो नहीं,
तारा थवानी आशने टकावी शक्यो नहीं,
में मुक्ति काज जन्म धर्यो पुण्यना बळे,
संयोग पाम्यो ताहरो पण सेवी शक्यो नहीं...
हो... हो... आ... आ...

स्मरणमां ने सुपनामां आवता तमे मारा व्हाला छो[2],
स्वजन तन धन थकी अधिका प्रभु मने आप व्हाला छो,

अनादि काळथी हुं शोधतो तमने प्रभु क्यां छो[2],
हवे में जाणीयुं के आप तो मुगते पधार्या छो... स्वजन...१

तरसतो रात दिन जोवा तमोने आप केवा छो[2] ?
स्वरूप तारुं निहाळी जाणीयुं तमे मारा जेवा छो... स्वजन... २

विरहमां झूरता निशदिन मने शुं आप जुओ छो[2] ?
प्रीति जो होय साची तो मने क्यारे बुलावो छो ?... स्वजन...३

अधमथी पण अधम जीवोने प्रभुजी आप तारो छो[2],
हवे संसार सागरथी मने क्यारे उगारो छो ?... स्वजन...४

जगतमां सौ थकी मुजने प्रभु तमे प्राण प्यारा छो[2],
गुणोनी रश्मि केरा '**हीर**'ने प्रगटावनारा छो... स्वजन...५

संसार दावानळ बुझववा आप शीतळ नीर सम,
संमोह रूपी धूळने हरवा सुप्रबळ समीर सम,
घन कर्म रुपी पर्वतोने भेदवा छो वज्र सम,
छो भवसमंदरमां तमे तारण तरण सुजहाज सम...

78. सामु जुओने मारी

सामु जुओने मारी सामु जुओने,
एक वार नेम मारी सामु जुओने,
करुणा दृष्टिथी मारी सामु जुओने,
अमीदृष्टि थी मारी सामु जुओने,
सामु जुओने मारी सामु जुओने,
एक वार नेम मारी सामु जुओने..

निगोदना दिवसो, मने यादज आवता,
हुं अने तूं रह्यां एकज धाम मां
अनादिकाळ थी दुःखोने खमता,
आ चौराशी लाख योनिमां भमता,
भवोभव सुधी साथे रह्यां,
आजे मने केम छोडी गया ?
तारा विना दादा मने कोइ पूछे ना
मारी आंखीयोना आंसू कोइ लुछे ना
सामु जुओने मारी सामु जुओने,
एक वार नेम मारी सामु जुओने... १

संसार असार छे मोक्षज सार छे,
तारी वातों में, तो सुनी ना लगार छे,
मोह मायाना झूले हुं झुलियो,
राची माची ने कर्मो में बांध्या
हस्तां हस्तां कर्मो में बांध्या,
आत्मा मां कर्मोना ढगला भर्या,

रोता रोता आज मारा कर्मो छुटे ना,
दुःखोना डूंगर मारा आज तुटे ना,
सामु जुओने मारी सामु जुओने,
एक वार नेम मारी सामु जुओने... २

छेल्ली विनंती मारी दादा तू सुणजे,
अंत समये मुजने तुं मलजे
पीडा ज्यारे रगरगमां थी व्यापे,
तारा दर्शन नी ठंडक तुं आपजे,
जंजाल जगनी छोडी करी,
मन तारा ध्यानमां स्थिर करी,
समाधि मरण मले, एवुं हुं मांगु,
भवोभव ना फेरा टले एवुं हुं मांगु,
सामुं जुओने मारी सामु जुओने,
एक वार नेम मारी सामु जुओने... ३

जो मिला है उसका ही जो दीवाना बन जाता है उसे आगे जाकर कुछ भी नहीं मिलता है। जो देनेवाला है उसका जो दीवाना बनता है उसे आगे जाकर किसी भी वस्तु की जरूरत ही नहीं पडती है।

वितराग तारा दर्शने, मुज राग-द्वेषनी जड हले,
सर्वज्ञ तारा स्मरणथी अज्ञान मुज दूरे टळे,
जिनराज तारा स्पर्शथी, मुज कामसंज्ञा ओगळे,
भगवंत मुजने आश छे, तुज भक्तिथी मुक्ति मळे.....

79. करुणासागरनुं बिरुद

(तर्ज - धीरे-धीरे से मेरी जिंदगी में आना)

करुणासागरनुं बिरुद जो धारो,
करी करुणा मने भवथी उगारो...

मारा जीवननो एक ज तुं सहारो,
मारी आतम नैयानो किनारो...

भमीयो हुं भवमां काळ अनादि अनंत सुधी...
पण याद कर्यो ना तुजने भावथी में तो कदी,
हुं जाणुं छुं के तारा विना नथी सुख अहीं,
पण सुख माटे हुं भटकुं तुजथी दूर रही,
क्यारे आवशे मुज मूर्खतानो आरो,
करी करुणा मने...१

हुं आज सुधी अहीं लगी पहोंच्यो प्रभु तारी कृपा,
हवे तारी पासे पहोंचुं एवी कर तुं कृपा,
हुं जाणुं छुं के आ संसारमां सार नथी,
पण ना जाणुं किम मुजने तुजथी प्यार नथी,
एवुं कर तुं के लागे तुं प्यारो,
करी करुणा मने...२

छुं खुशकिस्मत के तुजने आज हुं निरखी शक्यो,
पण बदकिस्मत के पाम्यो पण ना परखी शक्यो,
मांगु ना सुख जे दुःखना तरुनुं बीज बने,
पण आप प्रभु तुं तारा जेवुं **हीर** मने,
भूलुं तोए ना देजे जाकारो
करी करुणा मने...३

**प्रभु की करुणा तो हम पर पूर्ण रूप से बरस ही रही है ।
जिस दिन हम हमारी पात्रता बढ़ा देंगे उसी समय हमारा कल्याण का मार्ग खुल जाएगा ।**

80. श्री आदिनाथ धून

(तर्ज - रघुपति राघव राजा राम)

शत्रुंजय मंडण कर कल्याण, अष्टापद मंडण कर कल्याण,
नाभिराजा नंदन कर कल्याण, मरुदेवा नंदन कर कल्याण,
प्रथम नरेश्वर कर कल्याण, प्रथम मुनीश्वर कर कल्याण,
प्रथम तीर्थंकर कर कल्याण, प्रथम शासनपति कर कल्याण,

सद्‌गति आपो आदिनाथ, दुर्गति कापो आदिनाथ,
सन्मति आपो आदिनाथ, दुर्मति कापो आदिनाथ,
संयम आपो आदिनाथ, विरति आपो आदिनाथ,
शिवसुख आपो आदिनाथ, भवदुःख कापो आदिनाथ,

जनमन रंजन आदिनाथ, भवदुःख भंजन आदिनाथ,
नाथ निरंजन आदिनाथ, करुणानंदन आदिनाथ,
रोमे-रोमे आदिनाथ, हैये-हैये आदिनाथ,
अणु अणुमां आदिनाथ, परमाणुमां आदिनाथ,

मारा हैये आदिनाथ, सौना हैये आदिनाथ,
शत्रुंजयमां आदिनाथ, अष्टापदमां आदिनाथ,
पूरव बोले आदिनाथ, पश्चिम बोले आदिनाथ,
उत्तर बोले आदिनाथ, दक्षिण बोले आदिनाथ,

देवो बोले आदिनाथ, दानव बोले आदिनाथ,
पशु बोले आदिनाथ, मानव बोले आदिनाथ,
साधु बोले आदिनाथ, साध्वी बोले आदिनाथ,
श्रावक बोले आदिनाथ, श्राविका बोले आदिनाथ

जय जय जय श्री आदिनाथ, जय जय जय श्री आदिनाथ

81. आत्मनिंदा

(तर्ज - मेरा जीवन कोरा कागज)

आतमरामी अंतर्यामी, सुणजो मारी वात,
भवोभव हुं छुं दास तुम्हारो, राखजो माथे हाथ... १

चार गतिमां भटकी प्रभु हुं, आव्यो तुम्हारे द्वार,
काल अनंता बाद में दीठो, दुर्लभ तुम देदार... २

मानवभव-आरजकुल पाम्यो, पुण्य पसाए आज,
पण फरी लाख चोराशी भटकुं, एवा करुं हुं काज... ३

पापो अढारे रसथी हुं करतो, धर्म करुं तलभार,
मारुं जीवन जोता लागे, जईश नरक मोझार... ४

धर्मीनी हुं निंदा रे करतो, ईर्ष्या करतो अपार,
परना दोष हुं निशदिन जोतो, केम थईश भवपार ? ५

सद्गुरुथी नित दूरे रहेतो, करतो जीवना घात,
झूठ-चोरी ने मैथुन सेवन, संग्रहमां शिरताज... ६

पल पलमां हुं क्रोधी रे बनतो, निज गुण गातो अपार,
मायावी बनी जगने ठगतो, लोभीओमां शिरदार... ७

आ छे मारी करुण कहानी, सांभळो ओ महाराज,
जेवो पण छुं पण तारो छुं, स्वीकारो मने आज... ८

पापी अधम छुं पण तुज सम छुं, समजुं छुं ए वात,
तेथी ज तारुं **हीर** हुं मांगु, रहेवुं छे तुम साथ... ९

82. आ संसार छे असार

(तर्ज - है ये पावन भूमि)

आ संसार छे असार, व्याधि वेदनानो नहि पार,
इम जाणतो पण आ जीवडो, न करे जिन धर्म लगार...

धर्म आजे के, काले करशुं, पहेला पैसा भेगा करशुं,
तने खबर नथी क्यारे मरशुं, तो पण फरे बनी मस्तान... १

तुं क्यांथी अहीं आव्यो छे ? तारे पाछुं क्यां जवुं छे ?
तारे क्यां सुधी अहीं रहेवुं छे ? तने खबर नथी कोई वात... २

जेनी साथे बेसी रमतो, वातो करतो ने जमतो,
तेने लई गयो छे यम तो, पछी निश्चिंत केम तुं सूतो रे... ३

रोग-जरा-मरण घणा भूंडा, तारी पाछळ लाग्या त्रण गुंडा,
तारा शरीरमां पैसी ऊंडा, तने पीडे ए वारं वार... ४

देवेन्द्र-चक्रवर्तिओना, राजाओना उत्तम भोगो,
पाम्यो तुं अनंती वार, नथी तृप्ति तने कोई वार.... ५

दूर दूरथी पंखीओ आवे, एक झाडमां रात वितावे,
पडे सवार अने उड जावे, तिम तारा संबंधो जणावे रे... ६

तल मात्रनुं जे विषय सुख, तेनुं पर्वत सम मोटुं दुःख,
क्रोडो भव सुधीए न छोडे, तो शा माटे ते भणी दोडे रे... ७

हवे जाग्या त्यांथी सवार, धर्मामृत पी वारंवार,
तजी विषयो तणा विकार, **हीर** चिंतामणी तुं न हार... ८

83. अमे सुखी थवाना

(तर्ज - अमे काका-बापाना पोरीया....)

सौना हैये वसीने, अमे सुखी थवाना
सौनुं भलुं करीने, अमे सुखी थवाना

हे... सुखी थवाना, साचा धर्मी थवाना
गुणवान थवाना, भाग्यवान थवाना
सौना हैये वसीने...१

धर्मरक्षा करीने, अमे सुखी थवाना
खोटा कामो छोडीने, अमे सुखी थवाना
हे... सुखी थवाना...२

सौना गुणो निहाळी, अमे सुखी थवाना
निज पापो पखाळी, अमे सुखी थवाना
हे... सुखी थवाना...३

बनी मनथी संस्कारी, अमे सुखी थवाना
जीती इंद्रियो विकारी, अमे सुखी थवाना
हे... सुखी थवाना... ४

निज स्वार्थ विसारी, अमे सुखी थवाना
नित्य आतम संभारी, अमे सुखी थवाना
हे... सुखी थवाना...५

जीवदया वधारी, अमे सुखी थवाना
मोहमाया घटाडी, अमे सुखी थवाना
हे... सुखी थवाना...६

जेओ आवी रीते जीवे, ते स्वर्गे जवाना,
निज **हीर** प्रगटावी ते मोक्षे जवाना
हे... स्वर्गे जवाना, तेओ मोक्षे जवाना,
नहीं दु:खी थवाना, नहीं क्यारे रोवाना…७
सौने हैये वसीने...

84. मारा जीवननी आश तमे

(तर्ज - जिंदगी प्यार का गीत है)

मारा जीवननी आश तमे, लागी प्यास तमारी प्रभु,
मारा हैयामां आवो तमे, करुं विनती हुं तमने प्रभु... .

लाख चोरासी योनि फर्यो, तुजने ना कदी में स्मर्यो,
हवे भावथी पामुं धरम, एवी श्रद्धा तुं देजे प्रभु...
मारा जीवननी...१

ज्यारे मारग ना कोई सूझे, ज्यारे आशाना दीप बूझे,
त्यारे लागे तुं एक ज शरण, मारा तारणहारा प्रभु...
मारा जीवननी...२

तारी आशाए जीवी रह्यो, तने मळवा हुं तलसी रह्यो,
तारी इच्छाए जीवुं जीवन, एवी शक्ति तुं देजे प्रभु....
मारा जीवननी...३

भवोभव तारो साथ मळो, तारुं शासन आ मुजने फळो,
आत्म गुण-रश्मि **हीर** वधे, एवुं वरदान देजे प्रभु...
मारा जीवननी...४

वास्तव में संसार खराब नहीं है परंतु हमारे अंदर रहा हुआ अहंकार ही खराब है। जिस दिन हम हमारा अहंकार छोड़ देंगे उस दिन से हमारे अशुभ अवतार भी छूटने लगेंगे।

85. अमे नरके जवाना
(नरक में जाने के शॉर्टकट)

(तर्ज- अमे काका-बापाना पोरीया...)

घणा जलसा करीने, अमे नरके जवाना,
घणी लाईन मारीने, अमे नरके जवाना
हे नरके जवाना, घणी मार खावाना
घणा दु:खी थवाना, अने खूब रोवाना...१

ब्लु फिल्मो जोईने, अमे नरके जवाना
चेटिंग डे नाईट करी, नरके जवाना.... हे नरके...२

हिंसक गेमो रमीने, अमे नरके जवाना
गंदी गाळो बोलीने, अमे नरके जवाना... हे नरके... ३

घणी सीगरेटो फुंकी, अमे नरके जवाना
नशो ड्रग्सनो करीने, अमे नरके जवाना... हे नरके...४

घणुं दारुं ढींचीने, अमे नरके जवाना
इंडा-मांस खाईने, अमे नरके जवाना.... हे नरके...५

पैसा गामना दबावी, अमे नरके जवाना
सगाने पण रडावी, अमे नरके जवाना.... हे नरके...६

जे आवुं नहीं करे, ते स्वर्गे जवाना
निज **हीर** वधारी, तेओ मोक्षे जवाना
हे स्वर्गे जवाना, तेओ मोक्षे जवाना
नहीं दु:खी थवाना, नहीं क्यारे रोवाना...७

घणा जलसा करीने, अमे नरके जवाना...

86. वर्षीतप पारणा गीत

(तर्ज - कोण भरे...कोण भरे)

लेता नथी, लेता नथी, लेता नथी रे,
आदिनाथ दादा काई लेता नथी रे,
विनवे छे लोको पाय पडी-पडी रे,
आदिनाथ दादा काई लेता नथी रे.

चारसो दिवसना उपवास झाझा,
परचो बतावी मुकी कर्मोए माझा,
तो ए दादा दाद देता नथी रे... आदिनाथ दादा काई ..१

तेज घट्युं ने शरीर सुकायु,
अश्रुपूर्ण देवोथी डुसकु मुकायु,
तो ए व्रतने जेओ मुकता नथी रे... आदिनाथ दादा काई ..२

श्रेयांसने तिहा सपनुं रे आव्युं
आदिनाथ दादाने पारणुं कराव्युं,
आतमना **हीर** जेना घटता नथी रे.. आदिनाथ दादा काई..३

आदिनाथ दादा ने वर्षीतप किया नहीं था ,
पर करना पडा था, क्योंकि पिछले जन्म में
बैलों को खाने से रोकने के कारण बांधा हुआ
अंतराय कर्म उदय में आया था।
तो जैसे कोई दूसरों को खाने से रोकता है, उसे खुद को खाने नहीं मिलता
ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है।
वैसे जो स्वयं को धर्म करने से रोकता है,
शक्ति होते हुए भी धर्म का पालन नहीं करता,
क्या उसे भविष्य में मोक्ष मार्ग की सामग्री मिलेगी ?

87. वर्षीतप पारणानुं गीत

(तर्ज - श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम)

चारसो उपवासना पारणा श्रीकार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे द्वार,
अंतरमां आवी मारो... हो... करजो उद्धार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे द्वार,
ऋषभदेवस्वामी पधारो म्हारे द्वार...

हो... मरुदेवामाता रोई-रोईने थाकी,
ऋषभ-ऋषभ रटणा चित्त लागी,
भूलुं तने.. हो... तोय मने करजे तुं प्यार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे द्वार...१

हो... पूरव भवना कोई करमे भमाव्यां,
समता राखी ते तो करमो खपाव्यां,
मुजने पण... हो... देजे तुं समता लगार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे द्वार...२

हो... भवोभवनी प्रीतडीए तुजने बोलाव्यां,
श्रेयांस हाथे तारा पारणा कराव्यां,
मारी पण... हो... प्रीतनो तुं करजे स्वीकार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे द्वार...३

हो... तपनो संदेशो तें दुनियाने आप्यो,
' शुद्धि ' ए मारग सिद्धिनो दाख्यो,
आत्मगुण... हो... रश्मिमां **हीर** दे अपार,
आदिनाथ दादा पधारो म्हारे हार,
ऋषभदेवस्वामी पधारो म्हारे द्वार...४

88. रसना देवीने वश न थनारा

(तर्ज - सोलह बरस की बाली उमर)

रसनादेवीने वश न थनारा महान्,
आ काळमां तप करनारा महान्,

खावा माटे जीवे छे, प्रायः ज्यां मानवी,
भोजन ज्यां तामसी छे, वृत्ति छे दानवी,
आवा कलिकाळे पण, जीभलडीने जीती,
तप ने, त्यागमां, राचनारा महान्
आ काळमां...१

भोगोनां भूतडां ज्यां, छोडे ना कोईने,
तपस्या करे घणा पण, बीजाने जोईने,
इर्ष्या तजी बीजानी, शुद्धिना लक्षथी,
आत्मने, तप महीं, जोडनारा महान्,
आ काळमां...२

रसनानी लालसामां, भुलायो ज्यां धरम,
पापो ज्यां रासडा ले, मूकी सघळी शरम,
आवा काळे पण रसनी, लालसाओ जीती,
तनने, तपो थकी, तापनारा महान्,
आ काळमां...३

अणहारी बनवा माटे, लीधो मानव जनम,
पण आहारी बनीने, रखडे जनमो जनम,
आवी आहारसंज्ञाने हार आपीने,
आत्मने, **हीर** थी, पूरनारा महान्,
आ काळमां...४

89. प्रतिष्ठा वधामणा गीत

(तर्ज - अथ श्री महाभारत कथा)

प्रभु प्रतिष्ठा... प्रभु प्रतिष्ठा... आ... प्रभु प्रतिष्ठा...
आ....... हो.....
अथ श्री प्रभुजीनी प्रतिष्ठा[2]
प्रभुजीनी प्रतिष्ठा. . . जिनजीनी प्रतिष्ठा. . .
प्रतिष्ठा जिनराजनी, आ त्रिभुवन महाराजनी,
सौ जीवोना नाथनी, मुक्तिपुरीना साथनी,
प्रभु बिराजित ज्यां थये, त्यां शांति-मंगल विस्तरे,
आ....... हो.....

।। श्लोक ।।

नारको पण हरखे-जेना कल्याण पर्वमां ।
पवित्र तेनुं चारित्र-कोण समर्थ छे वर्णवा ।।
इंद्र चरणोने सेवे, कोसियो डंख देवे ।
समभाव धरे बे मां, श्री वीर स्वामिने नमः ।।

करुणानंदन, त्रिजगवंदन, प्रभुनी हुं करुं प्रतिष्ठा,
करुं प्रतिष्ठा... करुं प्रतिष्ठा... करुं प्रतिष्ठा...
आ....... हो.....
प्रतिष्ठानी कहानी, आ... जिनागमोथी जाणी...
अंजनशलाका जोता, पापोनी थाय हानि,
विश्वने जे बतावे, शाश्वत सुखोनुं धाम...
आत्म **हीर** वधारी, पहोंचावे मुक्ति धाम...
प्रभु प्रतिष्ठा... प्रभु प्रतिष्ठा... आ...
प्रभु प्रतिष्ठा, आ...

90. पर्युषण पर्व क्षमापना गीत

(तर्ज - रजा आपो हवे दादा)

क्षमा आपो हवे अमने, अमारी भूलने भूली,
अमारी भूलने भूली, अमारी भूलने भूली,
क्षमा देता अमे तमने, अमारा अहंने भूली,
अमारा अहंने भूली, अमारा अहंने भूली...

जीवनमां क्लेश संतापो, बंधाय छे महापापो,
बीजाथी वैर जे राखे.. हो[2]......
चढे पोते ज ते शूली, अमारी भूलने भूली... १

वधारी द्वेषना भावो, नरकने का निकट लावो ?
प्रभुना आ वचनथी तो... हो[2]...
अमारी आंख गई खुली, अमारी भूलने भूली... २

कर्या कामो अमे एवा, ना वर्णन थाय जे तेवा,
छतां ए आपजो माफी... हो[2] ...
भले रजूआत छे लूली... अमारी भूलने भूली... ३

करो दूरे आ दुर्भावो, वधारो प्रेम सद्भावो
आत्ममां **हीर** प्रगटावो... हो[2]....
मैत्रीना भावमां झूली... अमारी भूलने भूली... ४

कल्याण उसका होता है जिसके हृदय में
भगवान विराजमान होते हैं,
और भगवान उसके ही हृदय में विराजमान होते हैं
जो उनके शब्दों को अपने हृदय में विराजमान करता है।

91. उपधान तप वधामणा गीत

(तर्ज - लहरा दो... 83)

संसारी वैभव छोडीने, पाळे छे जेओ साधु जेवुं जीवन,
स्पर्श परमनो पामे ते, प्रगटावे भावो बनवा साचा श्रमण,
धन्य छे... धन्य छे... उपधान करे ते धन्य छे...
धन्य छे... धन्य छे... मोक्षमाळा वरे ते धन्य छे...

हो... वीर वाटे वीर आणा धरवा जे उपधान करे,
देह आत्मना भेद ज्ञानने पामे ते प्रत्येक पळे,
सूत्रोनी पामी अनुज्ञा भाव श्रावक तेह बने,
वसता गुरुकुळवासमां ते शीघ्र मुक्तिमाळा वरे...
धन्य छे... धन्य छे...

हो... मंत्र श्री नवकार-इरियावही-करेमिभंते सूत्र वळी
लोगस्स नमुत्थुणं सूत्रो थकी भावित बनी
तप अने काउस्सग्गथी निज कर्मो वळी कायाने कसी,
सुडतालिस दिवसो सुधी गुरु निश्रा माणे हसी खुशी,
धन्य छे... धन्य छे...

...शास्त्रवचन...

जिसे हम सबके सामने नहीं बोल सकते ऐसा विचार भी
अगर हम ना करे और यदि ऐसा विचार आ भी जाए
तो उस पर अमल तो कभी ना करे ...
तो मोक्ष दूर नहीं है।

92. End of the love Part-2

(तर्ज - मुस्कुराने की वजह तुम हो)

मारी बरबादीनुं कारण जे, जल्दी मरवानुं कारण पण जे,
मने रडावे... रडावे... रडावे... मारी बैरी² रे... बैरी रे

आ नागण मने ज्यारथी वळगी, त्यारथी मुज जिंदगी सळगी,
मने रडावे... रडावे... मारी बैरी रे² ... बैरी रे

सुखमां रहेतो तो, दुःखने जे लावी,
घरनी अंदर, झगडानो पैगाम जे लावी,
भगतसिंह हतो, सर्कसनो सिंह थयो,
किंमत आंकु तो घरमां रहेता घाटीथी पण गयो,
मने रडावे... रडावे... रडावे... मारी बैरी रे²... बैरी रे... १

जे कमावुं हुं, लुंटी ते लेती,
परण्यो तोए मुजने बावो, दुनिया सौ कहेती,
जो ना आपुं तो, बीजाने पकडे,
आत्महत्या, कोर्ट केसना लफडामां जकडे,
मने रडावे... रडावे... रडावे... मारी बैरी रे² ... बैरी रे...२

बैरी रे...

बैरी रे... बैरी

आ... हो... आ... हो...

-: पति से तंग आ चुकी पत्नी का मास्टर स्ट्रोक

(तर्ज :- नयन ने बंद राखिने)

मगजने बंध राखीने में ज्यारे तमने परण्या छे,
तमे छो तेना करता पण वधारे नंग जाण्या छे।

अन्य

गीत

रचनाए

93 . 14 स्वप्न नृत्य गीत

(अंजनशलाका, स्नात्र महोत्सव, जन्मवांचन आदि में अति उपयोगी)

१४ स्वप्नों को जोड़नेवाली ध्रुव कडी

(तर्ज - दर्शन देजो नाथ)

सुपना आव्यां आज, सुपना आव्यां आज,
त्रिशला माने, आवा दिव्य, सुपना आव्यां आज

(१) गजराज

(तर्ज - रंगे रमे आनंदे रमे)

पहले सुपने माता जुए, गिरिराज जेवा गजराजने,
जाणे जुए ऐरावतने, गिरिराज जेवा गजराजने

श्वेतवर्णो जाणे जंगम हिमालय,
चार दांतवालो मदनो आलय,
जाणे चतुर्विध धर्म कहे,
गिरिराज जेवा...१

श्रेष्ठतामां कोई आवे ना तोले,
एम सहु जिन आगम बोले,
त्रिभुवन परखे बुद्धि बले,
गिरिराज जेवा...२

(२) वृषभ

(तर्ज - वरसे भले वादळी ने)

वृषभ दीठो, माए मीठो, भार वाहणहार,
धर्मरूपी रथनो छे शणगार, वृषभ दीठो[2]...

पंच महाव्रत भारने वहशे[2],
षड्काय जीवतणो रक्षणहार, धर्म रूपी रथनो...१

भरतक्षेत्रे बोधिने वावे[2],
मोक्ष रूपी फळनो जे देनार, धर्म रूपी रथनो...२

(३) केसरी सिंह
(तर्ज - केसरीया रे केसरीया)

केसरियो रे, केसरियो
सिंह सुपनामां आवे, माता आनंद पावे,
आ तो घट-घटमां आनंद छायो... छायो... छायो... केसरीयो रे

जेवो केसरी सिंह, एवो धीर गंभीर,
सहु धर्मीमां ए तो शूरवीर..वीर..वीर.. केसरीयो रे... १

काम-क्रोधादि हाथी, जाय जेनाथी नासी
प्रगटावे आतमनुं हीर... हीर.. हीर... केसरियो रे...२

(४) लक्ष्मी देवी
(तर्ज - कोण भरे ?[3]...रे... शत्रुंजय नदीनुं नीर)

आंगणीये आव्या मारे लक्ष्मीदेवी रे,
कहे माने तारी सामे हुं तो हारी रे,
लोको पडे मारी पाछळ आवी-आवी रे,
हुं तो तारा पुत्र पाछळ दोडी आवी रे,
हे... आंगणिये...

कमलना फूलमां लक्ष्मीजी शोभे,
आजु बाजु ऐरावत शोभे,
आभूषणो अति दिव्य सोहे रे, हुं तो तारा पुत्र... १

कैवल्य लक्ष्मीनो स्वामी ए बनशे,
त्रिलोक लक्ष्मी एना चरणोने चूमशे,
त्रिभुवनमां अति समृद्ध थशे रे, हुं तो तारा पुत्र...२

(५) फूल माला
(तर्ज - रंगाई जाने रंगमां)

जे रंगबेरंगी सोहे, फूलमाला अति मन मोहे,
आजु-बाजुमां भमरा घूमे, सुगंधथी आ जग झूमे, जे रंगबेरंगी सोहे...

सुरतरुनां पुष्पो लावी, माळा बनावी सार[2],
विविधवर्णी सुमनोहरणी, सुगंध जेनी अपार[2],
जाणे शोभे मोक्षमाळा, महिमानो नहि पार... जे रंगबेरंगी...१

तारा पुत्रे नित महकशे, अनंत गुणनी सुवास[2]
पुष्प जेवुं शरीर एनुं, सुरभि श्वासोच्छ्वास[2]
जे कोई एने शीर धरशे, करशे मोक्षमां वास... जे रंगबेरंगी...२

(६) चन्द्र
(तर्ज - पंखीडा तुं उडी जाजे)

चन्द्रमा... हो... चन्द्रमा... चन्द्रमा...हो... चन्द्रमा
चन्द्रमा तुं सुपने आयो, मनमां भायो रे,
तारी दिव्य ज्योति जोई, आनंद छायो रे,
चन्द्रमा... हो चन्द्रमा[2]

होरे... होरे... हो...
होरे... होरे... जुओ, चन्द्र केवो शोभे रे,
मृगलंछन खिल्यो छे सोळ कलाए,
गगने जाणे हरतो फरतो तिलक शोभे रे,
नभथी प्रवेशे ए तो माता मुखे रे, चन्द्रमा... हो चन्द्रमा[2] ... १

होरे... होरे... हो...
होरे... होरे... माता तने चन्द्र कहे रे,
तारो लाल तेजे मने पाछळ राखे रे,
उज्ज्वल शोभा, धवल कीर्ति, मंगल दीपे रे
शीतळताए जगशांति करे रे, चन्द्रमा... हो चन्द्रमा² ...२

(७) सूर्य
(तर्ज - टिलडी रे मारा प्रभुजीने)

आव्यो रे आव्यो सुरज आव्यो,
केवल ज्ञाननो प्रकाश ए तो लाव्यो... आव्यो रे आव्यो

द्वादश सूर्य समुं, भामंडल एनुं
इन्द्रने झांखो करे मुखमंडल जेनुं... आव्यो रे आव्यो...१

सूरजनी जेम ए तो जगमां चमकशे,
साते नरके पण, अजवाळां करशे... आव्यो रे आव्यो...२

(८) ध्वज
(तर्ज - श्याम तेरी बंसी पुकारे)

पंचवर्णी फरफरती आकाशमां,
लहराती ध्वजाने जुए त्रिशलामा,
विश्वविजयनी करे घोषणा,
लहराती ध्वजाने जुए त्रिशलामा.

हो.... सोनाना दंड पर फरकी रहे जे,
सिंहना चित्रथी शोभी रही जे,
रणकार थाय नित घंटडीना...
लहराती ध्वजाने...१

हो... धर्मध्वज लहरावी आनंद करशे,
शासन गगनमां ऊंचे फरकशे,
विश्वकल्याण हो एवी भावना...
लहराती ध्वजाने...२

(९) पूर्णकळश
(तर्ज - मारी आंखोमां शंखेश्वर)

माना सपनामां पूर्ण कळश आवे रे,
माता पांपणना पुष्पे वधावे,
माना हैयामां हरख न माए रे,
माता पांपणना पुष्पे वधावे..

सर्व मंगलमां उत्तम सुमंगल,
सर्व कल्याणनुं ए कारण...
सर्व जीवोनां मनने लोभावे रे,
माता पांपणना पुष्पे वधावे...१

सर्व अतिशयोथी पूरो
कर्मनाशमां सहुथी शूरो,
धर्ममहेलना शिखरे बिराजे रे,
माता पांपणना पुष्पे वधावे...२

(१०) पद्म सरोवर
(तर्ज - ढोलीडा ढोल धीमो धीमो)

दिठुं रे... दिठुं रे... दिठुं रे...
दिठुं रे माताए, पद्मसरोवर, पद्मसरोवर,
समताना नीरथी, उभराय अंतर, दिठुं रे... दिठुं रे... दिठुं रे..

सर्वजातिनां कमळो भरेलुं, पंखीसमूह जेमां आनंदे घेलुं,
जळचर जीवो माटे स्थान अलबेलुं, स्थान अलबेलुं,
प्यासानी तृप्तिमां सहुथी ए पहेलुं...

दिठुं रे[3] ...१

दर्शन ज्ञान चारित्रनो भरियो, भव्यजीवोनो जेणे संताप हरियो,
जोता-जोता एणे कदी नयनो भराय ना, नयनो भराय ना,
आंखोमां हर्षनां अश्रु समाय ना...

दिठुं रे[3] ...२

(११) रत्नाकर

(तर्ज - मां पावा ते गढथी उतर्या)

रत्नाकर जोयो माताए अगियारमे रे,
कह्यो 'सागर वर गंभीर' लोगस्समां एने रे... रत्नाकर जोयो...

चंद्रकिरणो जेवा, निर्मळ नीरे छलके रे,
माता आनंद पामे अपार, मनमां मलके रे,

रत्नाकर जोयो...१

ए स्वप्न कहे हुं तो, जडरत्नोनो दरियो रे,
माडी तारो लाडीलो गुणरत्नोनो भरीयो रे,

रत्नाकर जोयो... २

(१२) देवविमान

(तर्ज - झिलमिल सितारों का आंगन होगा)

झगमगता तारा जेवुं सुरविमान आवे,
माताजी जोईने आनंद पावे,
ए तो प्रभुने महान बतावे, झगमगता तारा..

गीत-वाजिंत्र वागे जेमां, पुंडरिक नामे विमान जे,
उगता सूरज जेवुं शोभे, मोटुं योजन मान ए,
मेघध्वनि सम गाजे ने आवे
माताजी जोईने...१

देवोने पण पूज्य छे ए, माता तारो लाल रे,
शिव सुख रूपी संपत्तिनो, एनी पासे माल रे,
मोक्ष विमान ए सहुने बतावे...
माताजी जोईने...२

(१३) **रत्नराशि**

(तर्ज - झुलो रे झुलो थे तो, त्रिशलाना जाया)

रत्ननी राशि आवे, तेरमा सपनामां,
पुत्र तमारो जगनो तारणहार रे, जगनो पालनहार रे,
माता सुंदर सपना जोया... रत्ननी राशि आवे...

मेरुपर्वत जेवो ऊंचो, रतन ढगलो शोभे हो,
हीरा-पन्ना-माणेक आदि, उत्तम जाति रत्नो हो,
तेजे झबूके जाणे तारला रे, जाणे तारला रे...
माता सुंदर सपना जोया...१

रत्नना गढमां बेसी ए तो, देशनाने आपे हो,
भव्यजीवोना भवो भवोनां, कर्मनां बंधन कापे हो,
रत्नत्रयीनुं करे मोटुं दान रे, करे मोटुं दान रे...
माता सुंदर सपना जोया...२

(१४) अग्निशिखा

(तर्ज - ओढणी ओढुं-ओढुं ने उडी जाय)

अग्निशिखा जोई-जोईने राजी थाय^{2}
माता मनमां मलकाय, मानुं हैयुं छलकाय,
मानो मोहितमिर दूर थाय, अग्निशिखा...

होरे... होरे.. धूमरहित अग्नि सोहे,
होए... होए... होए... होए. अग्नि सोहे, अग्नि सोहे^{2}
जेनी मोटी ज्वाला, जाणे तेज प्याला,
जेथी विश्वतिमिर दूर थाय.... अग्निशिखा...१

होरे... होरे... दावानळ बनी कर्मो दहे,
होए... होए... होए... होए, कर्मो दहे... कर्मो दहे,
कल्पसूत्रे संभळाय, 'गुणरश्मि' फैलाय
एना **'हीर'** थी सौ अंजाय.... अग्निशिखा...२

(१५) स्वप्नफळ कथन

(तर्ज - आ तो मारी माडीनां रथनो रणकार)

रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम...
माता जोई स्वप्नोने हरखे अपार... हरखे अपार...
आवां सुपन में क्यारे नहीं जोयां २...
रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम...

झट पट पट पट आंखो खोले,
अद्भुत अद्भुत होठोथी बोले,

स्मरण करे स्वप्नोने फरी-फरी वार...

फरी-फरी वार...

आवां सुपन में...१

रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम....

रूमझूम रूमझूम डगला मांडे,

छम छम छम छम पायल बाजे,

धीमे धीमे चाले ज्यां, छे स्वामिनाथ...

छे स्वामिनाथ.... आवा सुपन में...२

रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम....

स्वप्न कहे स्वामिने हळवे-हळवे,

तनमनमां आनंद-आनंद छळके,

स्वामी कहे पुत्र थशे, त्रिभुवन शिरताज, त्रिभुवन शिरताज,

आवो रतन में क्यारे नहीं जोयो...

रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम... रूमझूम....

माता जोई स्वप्नोने.. आवा सुपन में...३

दे सन्मति मुजने जरा.......

मुजथी नहीं मुज पासे जे छे रागी तेना जे जनो,
वैरागी जे मुज पर सदा, रागी थयो हुं तेमनो,
सौथी वधु व्हालो तने, पण विसरुं हुं तुजने सदा,
वितराग तुज रागी बनुं, दे सन्मति मुजने जरा,
अंतरथी वैरागी बनुं, दे सन्मति मुजने जरा...

94. अरिहंत वंदना धून...

(तर्ज - भावे करुं हूँ वंदना)

वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना,
वंदना - वंदना अवधारो मारी वंदना,

शंखेश्वर प्रभु पार्श्वने भावे करुं हुं वंदना,
विघ्नहरा प्रभु पार्श्वने भावे करुं हुं वंदना,
धरणेन्द्रना खासने भावे करुं हुं वंदना,
पद्मावतीनी आशने भावे करुं हुं वंदना,
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...

देवोना पण देवने भावे... करता सुरपति सेवने भावे...
वामा केरा नंदने भावे... अश्वसेन कुलचंदने भावे...
वढियार देश नरेशने भावे... काढे कर्म निःशेषने भावे...
मुक्तिनगरना मूळने भावे... भूले मारी भूलने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...१

जगना साचा संतने भावे... मुक्ति केरा महंतने भावे...
भवसागरना अंतने भावे... लोकोत्तर भगवंतने भावे...
शिवरमणीना कंतने भावे... चोत्रीश अतिशयवंतने भावे...
पांत्रीश सरस्वतीवंतने भावे... अजर अमर अरिहंतने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...२

प्राणतणा आधारने भावे... मुज हैयाना हारने भावे
आनंदघन अवतारने भावे... निर्मम निरहंकारने भावे...
करुणाना करनारने भावे... कृपातणा भंडारने भावे...
चार गति चूरनारने भावे... पंचम गति दातारने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...३

पंचाश्रव हरनारने भावे... पंचमहाव्रतधारने भावे...
पुण्यतणा भंडारने भावे... महिमा अपरंपारने भावे...
समकितना दातारने भावे... अंत समय सथवारने भावे...
शिवसुखसर्जनहारने भावे... सद्गति केरा द्वारने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...४

मोहतिमिर हरनारने भावे... पहोंच्या भवना पारने भावे...
सर्वशास्त्रना सारने भावे... सर्व जीवोना प्यारने भावे...
सागर सम गंभीरने भावे... भवरण शीतळ नीरने भावे...
सहन करे बनी धीरने भावे... सौथी मोटा पीरने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...५

अंतरना उल्लासने भावे... भवभ्रमणे विश्वासने भावे...
मारा श्वासोच्छ्वासने भावे... मारी अंतिम आशने भावे...
मुज अंतरना खासने भावे... भवोभव केरी प्यासने भावे...
विश्वे करे उजासने भावे... केवलज्ञान प्रकाशने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...६

अंतरना आराध्यने भावे... सर्व जीवोना साध्यने भावे...
सौना परमाराध्यने भावे... सर्व देवमां आद्यने भावे...
करुणामाना नंदने भावे... शिवतरु केरा कंदने भावे...
मुखडुं पूनम चंदने भावे... मोहने करता मंदने भावे....
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...७

जिनशासन शिरताजने भावे... त्रिभुवन केरा ताजने भावे...
आतमना अवाजने भावे... तारण तरण जहाजने भावे...
मुक्ति नगर महाराजने भावे... सर्व सुखोना राजने भावे...
पापोथी नाराजने भावे... शिवपुर केरा साजने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना..८

मुक्तिपुरीना साथने भावे ... त्रणलोकना नाथने भावे...
सर्वविश्व विख्यातने भावे... सदा सहायक भ्रातने भावे...
सर्व जीवोनी मातने भावे... सर्व जगतना तातने भावे...
योगिओना नाथने भावे... भवअटवीमां सार्थने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना...९

पुण्य थकी भरपूरने भावे... भव्य जीवोना नूरने भावे...
कर्मो माटे क्रूरने भावे... समता केरा पूरने भावे...
मुक्ति केरा मंत्रने भावे... सर्व थकी स्वतंत्रने भावे...
साचा जंगम शास्त्रने भावे... सर्वश्रेष्ठ शुभ पात्रने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना.१०

ब्रह्मचर्य सम्राटने भावे... अद्भुत छे जस ठाठने भावे....
चूरे मोहनी गांठने भावे... तोडे कर्मो आठने भावे...
पुण्यतणा विस्फोटने भावे... सर्वदोषनी खोटने भावे....
सर्व गुणोनी टोचने भावे... करता मोहना लोचने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना.११

चौसठ इंद्राधीशने भावे... जगरक्षक जगदीशने भावे...
अध्यात्मना अधीशने भावे... जगना साचा ईशने भावे...
ठारे भवनी आगने भावे... परमेश्वर वीतरागने भावे...
साचो छे जस त्यागने भावे... शाश्वत सुखनी मांगने भावे...
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना.१२

अवधारो मारी वंदना, प्रेमे करुं हुं वंदना,
भावे करुं हुं वंदना, स्नेहे करुं हुं वंदना,
हृदये करुं हुं वंदना, रोमे करुं हुं वंदना,
वंदना - वंदना स्वीकारो मारी वंदना.१३

95. तपो वंदना धून

(तर्ज - भावे करुं हुं वंदना)

वंदना - वंदना तपधर्मने हो वंदना.
वंदना - वंदना तपस्वीने हो वंदना...

सर्व शास्त्रना सार सम, तपने करुं हुं वंदना,
मुक्तिना आगार सम, तपने करुं हुं वंदना,
कर्मरणे औजार सम, तपने करुं हुं वंदना,
सद्गति केरा द्वार सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना..१

रत्नत्रयीनी खाण सम, तपने करुं हुं वंदना,
मोहतणी मोकाण सम, तपने करुं हुं वंदना,
मुक्तिनगरना यान सम, तपने करुं हुं वंदना,
देव तणा विमान सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना..२

कर्मयुद्धमां वीर सम, तपने करुं हुं वंदना,
भवरण शीतळ नीर सम, तपने करुं हुं वंदना,
भूख्या आगळ खीर सम, तपने करुं हुं वंदना,
लोकोमां जे पीर सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपधर्मने हो वंदना..३

मोहने माटे शूल सम, तपने करुं हुं वंदना,
सर्व गुणोना मूळ सम, तपने करुं हुं वंदना,
तेजंतुरी धूळ सम, तपने करुं हुं वंदना,
भवकंटकमां फूल सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना..४

सोनामां सुगंध सम, तपने करुं हुं वंदना,
दोषो माटे अंध सम, तपने करुं हुं वंदना,
पूनम केरा चंद सम, तपने करुं हुं वंदना,
अरिहा माना नंद सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपधर्मने हो वंदना...५

पापो माटे फंद सम, तपने करुं हुं वंदना,
सद्गुण केरा स्कंध सम, तपने करुं हुं वंदना,
मोहने करतो मंद सम, तपने करुं हुं वंदना,
दुर्गति करतो बंद सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना..६

अंधने मळती आंख सम, तपने करुं हुं वंदना,
विघ्न करे जे राख सम, तपने करुं हुं वंदना,
पक्षी माटे पांख सम, तपने करुं हुं वंदना,
कल्पतरुनी शाख सम, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपधर्मने हो वंदना...७

भववन दावानल समा, तपने करुं हुं वंदना,
शिवपुरना मारग समा, तपने करुं हुं वंदना,
सद्गतिनी सीडी समा, तपने करुं हुं वंदना,
प्रभुवरनी पेढी समा, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना...८

भवसागर नौका समा, तपने करुं हुं वंदना,
पाप मले धोका समा, तपने करुं हुं वंदना,
नगरीमां लंका समा, तपने करुं हुं वंदना,
मोहरणे डंका समा, तपने करुं हुं वंदना,
वंदना... वंदना... तपधर्मने हो वंदना...९

जन्म-मरणनी वेदना हरनार तपने वंदना,
दुर्गतिओना त्रासने चूरनार तपने वंदना,
दर्शन-ज्ञान-चारित्र अर्पणकार तपने वंदना,
आतम वस्त्रना मैलने धोनार तपने वंदना...
वंदना... वंदना... तपस्वीने हो वंदना...१०

पुण्यतणा भंडार प्रगटनकार तपने वंदना,
दुःख अने दारिद्रने हरनार तपने वंदना,
विघ्नतणी सेनाथकी लडनार तपने वंदना,
जीवनमां मंगल सदा करनार तपने वंदना,
वंदना... वंदना... तपधर्मने हो वंदना...११

भवसागरनो अंत सर्जनहार तपने वंदना,
कर्मतणी शतरंजमां जितनार तपने वंदना,
मुक्ति केरा मार्गमां जे सार्थ, तपने वंदना,
लोकोत्तर भगवंतथी चरितार्थ तपने वंदना,
वंदना... वंदना...तपस्वीने हो वंदना…१२

बार प्रकारे निर्जरा देनार तपने वंदना,
चार कषायोने सदा चूरनार तपने वंदना,
पंच विषयनी वासना हरनार तपने वंदना,
गुण रश्मिमां '**हीर**'ने पूरनार तपने वंदना..१३

वंदना –वंदना तपधर्मने हो वंदना...
वंदना - वंदना तपस्वीने हो वंदना...

तप से भविष्य के कष्ट समाप्त हो जाते हैं, परंतु तप किसे कहते हैं ?
जो इच्छाओं का अंत करे उसका नाम है “ तप ”
भक्तियोग सर्वोत्तम तप है,
क्योंकि यह इच्छाओं को चकनाचूर कर देता है |

96. आत्म स्मरणावली (धून)

(तर्ज : नई धुन)

त्रिकाळज्ञानी-त्रिलोकदर्शी, अविनाशी हुं आतम छुं,
अजर-अरुपी-सिद्धस्वरुपी, आनंदघन हुं आतम छुं... (१)

अर्थ :- समग्र भूतकाल वर्तमान भविष्य का जिसमें ज्ञान पडा हुआ है, उर्ध्व-मध्य-अधोलोक को जो देख सकती है और जिसका कभी विनाश नहीं हो सकता, जो कभी वृद्ध नहीं बनती, जिसे कोई संसारी व्यक्ति नहीं देख सकता और जो परमात्मा समान है तथा जो अनंत आनंदमय है, मैं ऐसी आत्मा हूँ।

आ संसारे पापना द्वारे, दुःखथी त्रस्त हुं आतम छुं,
शाश्वत सुखनो योग छतां, पण भोगे मस्त हुं आतम छुं....(२)

अर्थ :- पापों के प्रवेश द्वार समान इस संसार में पाप के फल स्वरुप प्राप्त होने वाले दुःखों से त्रस्त बना हुआ तथा जिसे पता है कि मैं अगर शुद्ध धर्म की आराधना करुं तो मुझे भी शाश्वत सुख प्राप्त हो सकते है फिर भी साधना के बदले भोग सुखों में ही मस्त ऐसी मैं आत्मा हूँ।

अव्यवहारे काल अनादि, वसीयो एवो आतम छुं,
सिद्ध प्रभावे व्यवहारे हुं , आव्यो एवो आतम छुं....(३)

अर्थ :- अनादिकाल से जीव की प्राथमिक एवं अत्यंत अविकसित अवस्था को 'अव्यवहार राशि' कहते है उसमें बसने वाली तथा एक जीव जब सिद्ध बना तब अव्यवहार राशि स्वरूप वनस्पति के अवतार में से बाहर निकलकर विविध स्थानों में जन्म धारण करने वाली मैं आत्मा हूँ।

सूक्ष्म ने बादर एकेंद्रियमां, भमीयो एवो आतम छुं,
कीट बनीने विकलेंद्रियमां, उपन्यो एवो आतम छुं.... (४)

अर्थ :- जिसे अग्नि भी जला न सके और जो हवा की तरह अदृश्य है तथा संपूर्ण विश्व में व्याप्त है ऐसे 'सूक्ष्म जीव' के अवतारों में तथा सर्वत्र दिखने वाले पृथ्वी जल अग्नि वायु और वनस्पति रूप में बादर अर्थात् स्थूल जीव के स्वरूप में अनंत जन्मों में घूमने वाली तथा जिसे संपूर्ण पांच इन्द्रिया न मिली हो ऐसे कीडे आदि के अनंत अवतार धारण करके यहाँ आने वाली मैं आत्मा हूँ।

मन विना हूँ मूढनी जेवो, फरीयो एवो आतम छुं,
देव - नारक ने पशुओनो भव, धरीयो एवो आतम छुं.... (५)

अर्थ :- एकेन्द्रिय से चउरिंद्रिय तक के अवतारों में मुझे मन भी ना मिला और वहाँ मैं मन बिना पागलों की तरह भटकने वाली तथा देव - नरक और पशुओं के भी अवतार धारण करने वाली मैं आत्मा हूँ।

लाख चोराशी योनिमां हुं , जनम्यो एवो आतम छुं,
इच्छा विना पण वार अनंती, मरीयो एवो आतम छुं.... (६)

अर्थ :- कुत्ते बिल्ली आदि चौरासी लाख अलग-अलग अवतारों में एक-एक स्थान में अनंत-अनंत बार जिसका जन्म हुआ हो तथा देव-मनुष्य आदि जन्मों में जहाँ जीने की इच्छा हो वहाँ लंबा जी न सकी मैं ऐसी आत्मा हूँ ।

पुण्ये मानवभव-आरजकुल, लाध्यो एवो आतम छुं,
दुर्लभ धर्मश्रवण-श्रद्धा पण, पाम्यो एवो आतम छुं.. (७)

अर्थ :- प्रचंड पुण्य के उदय से मानव जन्म, आर्य कुल, दुर्लभ ऐसे धर्म का श्रवण-धर्म पर श्रद्धा जिसे मिली है मैं ऐसी आत्मा हूँ ।

मार्ग मळ्यो मुक्तिनो जेने, बड़भागी हुं आतम छुं,
पण पुरुषार्थ करुं ना एवो, कमभागी हुं आतम छुं ... (८)

अर्थ :- मोक्षमार्ग क्या है यह जिसे पता चल गया है ऐसी पुण्यवान मैं आत्मा हूँ परंतु जानने के बाद भी आचरण में आलस्य करने वाली दुर्भाग्यपूर्ण मैं आत्मा हूँ।

पुण्य विना पण भोगो माटे, भमतो एवो आतम छुं,
भेगु करीने अंत समयमां, तजतो एवो आतम छुं,...(९)

अर्थ-: मुझे पता है कि मेरा पुण्य कम है फिर भी भोगसुखों के पीछे दौडने वाली तथा जीवन भर जमा करने के बाद मृत्यु के समय सब कुछ यहाँ पर ही छोडकर जाने वाली ऐसी मैं आत्मा हूँ।

जडनी खातर जीवनी साथे, लडतो एवो आतम छुं,
लक्ष्यने भूली भक्ष्यने माटे, जीवतो एवो आतम छुं...(१०)

अर्थ-: निर्जीव जड़ पदार्थों की खातिर जीवों के साथ लडने वाली तथा लक्ष्यभूत मोक्ष को भूलकर भक्ष्यस्वरूप भोजन के लिये ही जीने वाली मैं आत्मा हूँ ।

सुखमां राचुं, दुःखथी भागुं, कायर एवो आतम छुं,
बिंदु सुख माटे सिंधु सम, दुःख सहतो हुं आतम छुं...(११)

अर्थ-: जब-जब सुख आए तब उसमें लीन बनने वाली, दुःख के समय में दीन बनने वाली, कायर तथा बिंदु जितने सांसारिक सुखों के लिये सिंधु जितने भावी दुःखों को आमंत्रण देने वाली मैं आत्मा हूँ ।

सुख छे स्वमां, शोधुं हूँ परमां, अज्ञानी हुं आतम छुं,
तनथी योगी, मनथी भोगी, बहुरुपी हुं आतम छुं...(१२)

अर्थ-: सुख मेरी आत्मा में ही है, पर अज्ञानी की तरह मैं उसे पदार्थों में ही खोज रहा हूँ, तन से योगी जैसा वर्तन तथा मन से भोगी जैसी वृत्ति धारण करने वाली बहुरुपी जैसी मैं आत्मा हूँ।

मायावी आ मुझ मनडाथी, हारेलो हुं आतम छुं,
काळ अनादि भव भ्रमणाथी, थाकेलो हुं आतम छुं...(१३)

अर्थ-: मेरे मायावी मन से हारी हुई तथा अनादिकाल के संसार भ्रमण से थकी हुई मैं आत्मा हूँ।

भवोभव आ जिनशासन मळजो, भावतो एवो आतम छुं,
रत्नत्रयी आ मुझने फळजो, झंखतो एवो आतम छुं...(१४)

अर्थ-: जब तक मेरी मुक्ति ना हो तब तक हर जन्म में मुझे यह जिनशासन मिलता रहे ऐसी भावना मैं करती हूँ तथा सच्ची श्रद्धा, -ज्ञान और आचरण स्वरूप रत्नत्रयी मुझे हर जन्म में मिलती रहे ऐसी इच्छा रखने वाली मैं आत्मा हूँ।

भव वैराग्य मळो मुझने पण, इच्छतो एवो आतम छुं ,
आतम गुण रश्मिमां 'हीर 'ने, मांगतो एवो आतम छुं...(१५)

अर्थ-: इस संसार पर मुझे सदा वैराग्य रहे ऐसी मेरी इच्छा है तथा मेरी आत्मा के गुणों का जो प्रकाश है उसका तेज निरंतर बढ़ता रहे ऐसा मांगने वाली मैं आत्मा हूँ।

।। इति श्री 'आत्म स्मरणावली' समाप्तम् ।।

97. प्रभु पार्श्वनाथ स्तुति

(हरिगीत छंद)

जेना पवित्र नामनुं सुस्मरण पण मंगल बने,
जेना वचन आराधने मनु जन्म पण मंगल बने,
जेना प्रभावे अंत समये मरण पण मंगल बने,
ते पार्श्वप्रभु सद्‌बुद्धिनुं वरदान पण आपो मने... १

जेना थकी मरणे समाधि, सद्‌गति सहजे मळे,
जेना थकी परमात्म पद पण सहजमां आवी मळे,
जेना थकी दुखमय छतां संसार आ सुखमय बनेः,
ते पार्श्वप्रभु सद्‌बुद्धिनुं वरदान पण आपो मने... २

98. संवेदना पच्चीशी

(राग -हरिगीत छंद)

हुं मोहमदिरामां डूबी, भूली स्वरुप निज आत्मनुं,
भवभ्रमणमां बस काम कीधुं पारकी पंचातनुं,
चोरासीना चौटे कर्या, में नट बनी नाटक घणां,
कहुं बाळभावे प्रभु तने, मुज आत्मनी संवेदना (१)

अर्थ :- हे परम कृपालु परमेश्वर ! जिस प्रकार अत्याधिक शराब के सेवन से उन्मत्त बना हुआ व्यक्ति खुद के स्वरुप को भूल जाता है, कार्य अकार्य का विवेक खो बैठता है वैसे मैं भी सांसारिक पदार्थो की अत्यंत आसक्ति में डूबा हुआ खुद के स्वरुप को भूल गया हूँ कि मैं 'शरीर' नहीं परंतु 'आत्मा' हूँ और अनादि काल से इस संसार में भटकते हुए मेरे जीव ने 'जो हर जन्म में छोड़कर ही जाना पड़ता है' ऐसी भौतिक वस्तुओं की चिंता करने में ही समय व्यतीत किया। जिस प्रकार नाटक मंडली वाले अलग-अलग रूप बनाकर शहर के अलग-अलग चौक में नाटक करते है वैसे मैंने भी इस संसार में पशु पक्षी आदि चौरासी लाख प्रकार के विभिन्न अवतारों में १-१ स्थान पर प्रायः अनंत अनंत बार जन्म-मरण धारण किया है। हे विधाता ! जिस प्रकार बालक अपनी माता को जैसा हो वैसा कह देता है, कुछ भी छिपाता नहीं, उसी प्रकार आज मैं भी आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ और मेरे अनंतकाल की व्यथा रुप 'संवेदना' को कहना चाहता हूँ। आप मेरी बात सुनेंगे ना ?

भवसागरे भमता कदी, तुम नाम श्रवणे ना पड्युं,
आजे अनंता काळथी, दर्शन तमारुं सांपड्युं,
तारा विरह ने विस्मरणथी भोगवी मे आपदा,
रहेजे स्मरणमां तुं सदा, जेथी लहुं शिवसंपदा (२)

अर्थ :- हे देवाधिदेव ! इस संसार सागर में भटकते हुए मैने कभी आपका नाम भी ध्यान से नहीं सुना है और आपके दर्शन भी ध्यान से नहीं किये क्योंकि जब तक आपके वास्तविक स्वरुप का बोध न हो तब तक आपके दर्शन भी आत्मकल्याण में कारण कहाँ बनते है ? आज वास्तव में मुझे आपके दर्शन हुए है। हे परमात्मन् ! आज तक आप या तो मुझे मिले ही नहीं या तो मिलने के बाद भी मैने आपका स्मरण नहीं किया इसीलियें मुझ पर आपत्तियों की बरसात होती रही। हे प्रभु ! आज मैं आप से विनती करता हूँ कि आप अब तो मेरे स्मरण में ही रहना क्योंकि उसके बिना मुझे मोक्ष तक के सुख भी कैसे मिल सकेंगे ?

संसारथी सिद्धि सुधीना पंथनो तुं सारथि,
मुज कर्मवनने बाळनारो, एक छे तुं महारथि,
भवचक्रने तुं भेदतो, तारी कृपाना चक्रथी,
छे केवी मुज विडंबना, हजु ओळख्यो तुजने नथी (३)

अर्थ :- हे विजयदाता ! जिस प्रकार श्री कृष्ण, अर्जुन के सारथि बने और उसे विजय दिलवाइ उसी प्रकार मेरे मोक्ष मार्ग के तो आप ही एकमात्र सारथि हो, मेरी आत्मा के अंदर जो अशुभ कर्मों का घना जंगल फैला हुआ है उसे जलाने में समर्थ आप एक ही महान् व्यक्ति हो। जिस प्रकार चक्रवर्ती अपने चक्र के द्वारा विजय प्राप्त करता है उसी प्रकार मेरे इस संसार चक्र का निरोध तो आपकी कृपा रुपी चक्र के बिना कहाँ संभव हैं ? परंतु हे विश्व वत्सल ! मेरा यह कैसा दुर्भाग्य है कि आप मेरे लिये इतने महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद भी मैं आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ।

निगोदना कारागृहेथी नीसर्यो तारी कृपा,
व्यवहारराशी, त्रसपणुं, पाम्यो प्रभु तारी कृपा,
शुभ मनुजभव ने जैनकुळ लाध्यो प्रभु तारी कृपा,
जो मोक्ष पण आपो तमे, तो मानुं खरी तारी कृपा... (४)

अर्थ :- हे करुणासागर ! आपकी आज्ञापालन के द्वारा एक व्यक्ति जब मोक्ष में पहुंचा तब अनादिकाल से एक ही स्थान में जन्म-मरण करता मैं, मेरी प्राथमिक अवस्था स्वरुप सुक्ष्म वनस्पति के जन्म-मरण रुपी अव्यवहार राशि के कैदखाने में से बाहर निकला, अलग-अलग अवतार धारण करने शुरु किये, कीडा-मकोडा आदि बनते-बनते मनुष्य जन्म और आपके मार्ग को भी प्राप्त किया। हे कृपावतार ! मैं मानता हूँ कि आज तक मेरी आत्मा का जो भी विकास हुआ है वो आपकी कृपा से ही हुआ है पर अगर आप मुझे भी आपके जैसा बना दो तो मैं मानुंगा कि आपकी कृपा ही वास्तव में मेरी विकासयात्रा का प्रबल कारण है।

चौरासीना चक्करमहीं, भमता अनादिकाळथी,
तन-धन-स्वजन विषयो कषायोनुं कर्यु पोषण अति,
मानव जनम, श्रद्धा, श्रवण पाम्यो अति दुर्लभ छतां,
क्यारे करीश भवचक्रमां, हुं मुक्तिनी पुरुषार्थता ? (५)

अर्थ :- हे शरणागत वत्सल ! अनादिकाल से अलग-अलग अवतारों में जन्म मरण करती मेरी आत्मा ने आज तक शरीर - संपत्ति - स्वजन – संबंधि - पांच इन्द्रियों के भोगसुख तथा क्रोध-मान-माया-लोभ आदि का ही पोषण किया है। किस्मत से मैने मानवजन्म-सुखी बनने के मार्ग की जानकारी तथा उस पर श्रद्धा भी प्राप्त कर ली है परंतु , हे पुरुषार्थ अग्रणी ! आपकी तरह आपके मार्ग पर चलने का सामर्थ्य मैं कब प्राप्त कर सकुंगा ?

पुद्गल परावर्तो अनंता में कीधा संसारमां,
भटक्यो अनंती वार वळी योनि चोरासी लाखमां,
पाम्यो महापुण्योदये शासन तमारुं आ भवे,
पामी तने आ भव वने, भमवुं नथी मारे हवे... (६)

अर्थ :- संसार में जितने समुद्र है उन समुद्रों में जितने बिंदु है उतने ही और नए समुद्र बना दो और उन सभी समुद्रों के बिंदुओं को गिना जाए तो उसकी जो संख्या हो उससे भी बडी संख्या को 'अनंत' कहा

जाता है। ऐसा अनंत काल जब बीत जाता है उस माप को 'पुद्गल परावर्त' कहते है ऐसे अनंतानंत पुद्गल परावर्त काल आज तक मैने इस संसार में व्यतीत कर दिये है। इस दरम्यान एक-एक स्थान में एक-एक शरीर में, अनंत अनंत बार जन्म मरण की भयंकर वेदनाओं को सहन किया है। हे दुःखीजन आधार ! आज अनंतकाल के बाद प्रचंड पुण्य के उदय से मैने आपका सांनिध्य प्राप्त किया है और आपका साथ मिलने के बाद मुझे अब इस संसार में और भटकने की बिलकुल भी इच्छा नहीं है।

पाम्यो तने परख्यो नहि, जाण्यो तने माण्यो नहि,
होठे सदा तुज वात पण, हैये कदी आण्यो नहि,
शिवनगरनी करुं झंखना, शिवमार्गथी डरतो सदा,
द्यो तुम समुं सामर्थ्य प्रभु, जेथी हरुं कर्मों बधां. (७)

अर्थ :- हे कृपासिंधु ! मैने आपको प्राप्त तो कर लिया पर पहचान ना सका, आपको जान तो लिया पर आपका अनुभव ना कर सका। होठो से निरंतर आपकी ही बात करता हूँ पर मेरे हृदय के सिंहासन पर मैने आपको कभी नहीं बिठाया। 'मैं भी जल्दी से मोक्ष प्राप्त कर लूं' ऐसी इच्छा तो मुझे बहुत बार होती है पर मोक्षमार्ग पर चलने से निरंतर डरता रहता हूँ। हे प्राणेश्वर ! आप मुझे ऐसी शक्ति दो कि जिसके द्वारा मैं अपने अंदर रहे हुए दुर्गुणों का नाश कर सकुं।

हे नाथ ! भारेकर्मी छुं ? अथवा नथी मुज पात्रता ?
जिम बळद घाणीनो भमे, तिम हुं भमुं समजु छतां,
जिम भुंड म्हाले विष्टमां, तिम हुं खूंच्यों छुं विषयमां
क्यारे प्रभु ! मुजने थशे ? वैराग्य आ संसारमां (८)

अर्थ :- हे नाथ ! क्या मैं अत्यंत चिकने पापों से भरा हुआ हूँ ? अथवा मेरी थोडी भी योग्यता नहीं है ? क्योंकि जिस प्रकार कोल्हू का बैल घूमता पूरे दिन है पर पहुंचता कही भी नहीं, वैसे मैं भी दुःख स्वरुप इस संसार में सब कुछ जानने के बाद भी भटकता ही जा रहा हूँ।

जैसे सूअर को विष्टा ही प्रिय लगती है वैसे मैं भी इस संसार के विष्टा समान भोग सुखों में ही डूबा हुआ हूँ। हे प्रभु ! मुझे अनंत दुःखमय इस संसार से वैराग्य कब होगा ?

नश्वर छतां संसारना, सुखो मने ललचावतां,
शाश्वत सुखोनी साधनानां स्वप्न पण कंपावतां,
फरी ना मळे संयोग काळ अनंतमां जाणुं छतां,
हुं मस्त छुं संसारमां, मुज केवी छे मोहांधता ! (९)

अर्थ :- हे शाश्वत सुखदाता ! मुझे पता है कि इस संसार के समस्त भौतिक सुख क्षणिक है फिर भी इनका आकर्षण मुझसे छूट नहीं रहा है और मोक्ष के सुख निरंतर टिकने वाले है पर उसे पाने की प्रक्रिया का स्वप्न भी मुझे आ जाए तो मेरी नींद हराम हो जाती है। हे तरणतारणहार ! मुझे पता है कि मुझे वर्तमान में जो भी शुभ संयोग मिले है उनका अगर मैंने सदुपयोग ना किया तो ऐसे संयोग अनंतकाल के बाद भी वापस मिलेंगे या नहीं यह एक बहुत बड़ा सवाल है फिर भी मैं मूढ़ की तरह इस संसार के सुखों में ही आसक्त बना हुआ हूँ , यह मेरा कैसा पागलपन है ?

हुं साधनोमां मस्त बनीने साधना भूली गयो,
बनवा अजन्मा जनम जे, ते पण प्रमादे हारीयो,
क्यारे थशे ? निस्तार जन्म मरण थकी विभु माहरो ?
कोने कहुं ने क्यां जउं ? नथी अन्य माहरो आशरो.. (१०)

अर्थ :- हे वीतराग ! मैने यहाँ पर जन्म तो लिया था साधना करने के लिये और उसके बदले भौतिक साधनों में ही अटक गया हूँ। जन्मरहित बनने के लिये जन्म लिया था उसे भी संसार के सुखों के पीछे पागल बनकर हार गया हूँ। हे विभु ! इस जन्म मरण के चक्कर से मेरा छुटकारा कब होगा ? मेरी यह बात आपके सिवाय मैं किसे कहुं ? और आपके सिवाय मैं कहाँ जाउं ? क्योंकि मुझे अब आपके सिवाय दुसरा कोई आधार दिख ही नहीं रहा है।

हुं पाप रसीयो तीव्र भावे पाप करतां ना डरूं,
ने आपनी आज्ञा प्रमाणे धर्म करतां थरथरु,
थाशे शुं मारुं ? जईश क्यां हुं ? कर्म नवि छोडे कदा,
एक ज सहारो ताहरो, तुं आपजे शरणुं सदा (११)

अर्थ :- हे विश्ववल्लभ ! मैं अशुभ प्रवृत्ति करने में अत्यंत उद्यमी हूँ और सदैव बिना किसी डर के अशुभ काम करने में ही लगा रहता हूँ और आपकी आज्ञा अनुसार शुभ प्रवृत्ति करने की बात आए तो मैं थर-थर धूजने लगता हुं। हे त्रिलोक शरण्य ! भविष्य में मेरा क्या होगा ? मरकर मैं कहाँ जाउंगा ? क्योंकि मुझे पता है कि अशुभ कर्मों ने आज तक किसी को भी नहीं छोडा है तो मैं भला किस खेत की मूली हूँ। हे धर्मदाता ! अब आप एक ही मेरे आधारभूत हो, मैं अब आपकी शरण में ही रहना चाहता हूँ।

भोगोमही में वेडफ्यों, मानव जनम अति दोहिलो,
ना साधना करी मनथकी, शिवराज जेथी सोहिलो,
तुज आण हैये ना धरी, करी मोहराजनी चाकरी,
थाक्यो प्रभु माहरो हवे, उद्धार कर करुणा करी. (१२)

अर्थ :- हे त्रिलोक दर्शक ! अत्यंत दुर्लभ ऐसा मानव जन्म मैने सिर्फ पांच इन्द्रियों के भोग विलास में ही पूर्ण कर दिया और जिससे मुझे अत्यंत आसानी से मोक्ष मिल सकता था ऐसी साधना मैने कभी मन लगाकर की ही नहीं। मैने आपकी आज्ञा को हृदय में नहीं धारा और मोहराजा अर्थात् पदार्थों के तीव्र आकर्षण के पीछे ही पागल बना रहा। हे भगवान ! इस पुनरावर्तन से मैं अब थक गया हूँ और आपसे विनती करता हूँ कि इस भयानक संसार से आप मेरा उद्धार करो।

हुं ओरडो अवगुण तणो, भंडार चार कषायनो,
वळी पंच इन्द्रिय विषय केरी वासना लंपट घणो,
नथी पुण्य पण उद्यम करुं , भोगोतणी भूख भांगवा,
दुर्बुद्धि मारी दूर करवा, आप तुं मुजने दवा (१३)

अर्थ :- हे विश्व हितचिंतक ! मैं दुर्गुणों का एकमात्र स्थान स्वरूप हूँ तथा क्रोध-मान-माया लोभ रुपी चार कषायों का भंडार हूँ और पांच इन्द्रियों के मनपसंद भोगों के पीछे अत्यंत पागल हूँ। मेरा पुण्य नहीं है फिर भी मैं इन भोगों को पाने के लिये दिन रात दौड़ता रहता हूँ, और ऐसा मानता हूँ कि इस प्रकार दौड़ने से ही धन-भोगसुख आदि मिलेंगे। हे विश्ववैद्य ! मेरी इस दुर्बुद्धि को दूर करने के लिये आप मुझे कोई औषधि दीजिए।

में नरक निगोदे सह्यां, दुःखो घणां समजण विना,
समजण मळी मुजने हवे, 'सिद्धि नथी शुद्धि विना',
पण शुद्धिकर बावीस परिषह लागे अतिशय आकरा,
सुखथी डरुं , दुःखने वरुं, दे सन्मति मुजने जरा (१४)

अर्थ:- हे अतिशय धारक ! अनंतकाल से इस संसार में हलके से हलके स्थानो में अनंत अनंत बार जन्म लेकर मैने इतने दुःख सहन किये है कि जिसकी कोई सीमा नही है फिर भी मेरा मोक्ष नहीं हुआ क्योंकि जब सहन किया तब समझ नहीं थी और अब आपके संपर्क में आने के बाद आज मुझे वास्तविक समझ मिली है कि दुःखों को सहन किये बिना मुझे इस संसार से मुक्ति कभी भी नहीं मिलेगी परंतु जिन-जिन कारणों से आत्मशुद्धि होती हो ऐसे भूख-प्यास, ठंडी-गर्मी सहन करने स्वरूप बाईस प्रकार के परिषह मुझे अत्यंत कठिन लग रहे है। हे अशरणशरण ! मेरी आत्मशुद्धि के लिये मैं संसार के सुखों से डरता रहुँ और कर्मशुद्धि कराने वाले दुःखों को सामने से स्वीकार करता रहुँ ऐसी सद्बुद्धि आप मुझे प्रदान करो।

तुं सर्व शक्तिमान तो, मुज कर्म शें कापे नहि ?
तुं सर्व इच्छापूरणो, तो मोक्ष शें आपे नहि ?
भले मुक्ति हमणा ना दियो, पण एक इच्छा पूरजो,
भववन दहन दावानलो, सम्यक्त्व मुजने आपजो (१५)

अर्थ:- हे विश्वेश्वर ! मैने सुना है कि आप तो अनंत शक्तिओं के धारक हो, अगर ऐसा है तो आप मेरे कर्मों का नाश क्यों नहीं करते ? आप

तो सभी की इच्छा पूर्ण कर सकते हो तो मुझे मोक्ष क्यों नहीं देते ? भले वर्तमान में मोक्ष ना दे सको तो ना दो पर मेरी एक इच्छा तो पूर्ण करो, कि संसार रूप जंगल को भस्म करने के लिये दावानल के समान 'आपका मार्ग ही यथार्थ है बाकी सब अनर्थ रुप है' ऐसी सच्ची श्रद्धा तो मुझे दे दो ।

क्यारे प्रभु ! सम्यक्त्वनी, ज्योति हृदयमां थिर थशे ?
क्यारे प्रभु ! वैराग्यवासित माहरी हर पळ थशे ?
क्यारे प्रभु ! सुविशुद्ध भावे सर्वविरति स्पर्शशे ?
क्यारे प्रभु ! संसारमां, पण मुक्तिनी झांखी थशे ? (१६)

अर्थ :- हे परमब्रह्म ! आपके मार्ग पर सच्ची श्रद्धा रूपी ज्योति मेरे हृदय में कब स्थिर होगी ? मेरे जीवन की हर क्षण वैराग्य से ओतप्रोत कब होगी ? अत्यंत विशुद्ध संयम के भावों की स्पर्शना मुझे कब होगी? और संसार में रहते हुए भी मुक्तिसुख का अनुभव मुझे कब होगा ?

विषयोतणा वळगाडने, क्यारे प्रभु छोडीश हुं ?
जिनआगमे, जिनबिंबमां, मुज मन कदा जोडीश हुं ?
अणगारना वस्त्रों सजी, कर्मों कदा तोडीश हुं ?
मुक्तिनगरना मार्ग पर, क्यारे प्रभु दोडीश हुं ? (१७)

अर्थ :- हे भवोदधि तारक ! पांच इन्द्रियों के भोग की आसक्ति में से मैं कब बाहर आउंगा ? सुखी बनने का मार्ग बताने वाले आपके ग्रंथ और आपकी प्रतिमा में मेरा मन कब जुड़ेगा ? आपके जैसा बनने के लिये आपके बताए हुए मार्ग पर श्रमण का वेश धारण कर कर्मों को तोड़ता हुआ मैं कब चल सकुंगा ?

भवितव्यता, कर्मों, स्वभाव ने काळ हो विपरीत भले,
ने मुक्ति माटे माहरो, पुरुषार्थ हो नबळो भले,
तुज भक्तिए अनुकूळ थाये, ए बधा तुज दास छे,
तुं मुख्य हेतु मोक्षनो, मुजने सबल विश्वास छे (१८)

अर्थ :- (१) त्रिकालज्ञानीने जैसा भविष्य देखा हो वैसा ही होना उसे **'भवितव्यता'** कहते है। (२) सुख-दुःख के सर्जक **'कर्म'** कहलाए जाते है , (३) कोई मोक्ष में जाएगा वो **'भव्य'**, नहीं जाने वाला **'अभव्य'** यह 'स्वभाव' है , (४) जब मोक्ष खुला हो वो अनुकूल **'काल'** है , यह सब मेरे लिये विपरीत भी हो और (५) मोक्ष में जाने के लिये मेरा **'पुरुषार्थ'** कम भी हो तो भी हे त्रिभुवन आधार ! मैं अगर आपकी आज्ञानुसार जीवन जीने लगुं तो ये पांचो मुझे अनुकूल हो जाऐंगे क्योंकि ये सब तो आपके सेवक हैं और एकमात्र आप ही मोक्ष में जाने के लिये प्रबल कारण हैं ऐसा मुझे संपूर्ण विश्वास है।

में प्रीत पुद्गलथी करी, तेथी भम्यो संसारमां,
जो प्रीत तुज संगे करुं, तो मुक्ति पण पलवारमां,
तारो अचिंत्य प्रभाव जाणी प्रीत करतो हुं तने,
जो कर्मवश भूलुं तने, तो पण समरजे तुं मने (१९)

अर्थ :- हे प्राण आधार ! अनादि काल से इस संसार में भ्रमण करते हुए मैने भौतिक पदार्थों से ही प्रेम किया और उसके ही फलस्वरुप इस संसार में भटकता रहा। अब मुझे पता चला है कि अगर मैं आपको प्रेम करने लगुं तो कुछ ही काल में मेरी मुक्ति हो जाएगी। आपका ऐसा अचिंत्य प्रभाव देखकर मुझे आपके साथ प्रीत करने की इच्छा हुई है परंतु हे परवरदिगार ! मैं कर्मवश जीव हूँ, शायद आपको भूल भी जाऊं पर आप तो मुझे निरंतर याद करना।

प्रियतम तमे मारा प्रभु निशदिन तमोने झंखतो,
तारा विरहनी वेदनामां रात दिन हुं झुरतो,
तारा मिलननी प्यासमां निजदेहने पण भूलतो,
छे आश के मळशो तमे, तेथी तने नित समरतो (२०)

अर्थ :- हे सर्वजन प्रिय ! आज से आप ही मेरे प्रियतम हो, मैं रात दिन आपसे ही मिलने के लिये तरसता रहता हूँ, और आपके विरह की जो वेदना है उस वेदना से मैं रात दिन तडप रहा हूँ। आपके मिलन की जो तीव्र प्यास मुझे लगी है उसे बुझाने के लिये मैं अपने शरीर

को भी दाव पर लगा रहा हूँ क्योंकि मुझे ऐसी आशा है कि आज नहीं तो कल आप मुझे मिलेंगे ही, इसीलिये मैं आपको नित्य याद करता रहता हूँ।

प्रियतम स्वीकार्या में तने, प्रीति अनादिकाळनी,
तरछोडी किम चाल्या तमे, निष्ठुर ने निर्दय बनी,
भमता अनादिकाळमां शोध्यो तने आ भववने,
थाक्यो हवे बोलावजे, जल्दी मने तारी कने. (२१)

अर्थ :- हे सर्वेश्वर ! मैने आपको मेरे प्रियतम के रुप में स्वीकार किया है और हमारी प्रीति वास्तव में अनादिकाल से है। आज आप इस संसार में मुझे अकेला छोडकर निष्ठुर और निर्दय की तरह अकेले ही मोक्ष में क्यों चले गए ? अनादिकाल से इस संसारवन में मैने आपको बहुत खोजा पर आप मुझे कही ना मिले। हे प्रभु ! अब मैं इस संसार भ्रमण से थक गया हूँ और आपके पास आना चाहता हूँ, आप मुझे जल्दी से आपके पास बुलाओ ना।

तारुं स्मरण, तारुं रटण, तारा सुपन जोया करुं ,
तारुं श्रवण, तारुं मनन, तारुं ज ध्यान कर्या करुं ,
क्यारे तरीश आ भवथकी, चिंता नथी मुजने जरा ,
सूक्या बधा भवसागरो, तारा प्रभावे माहरा (२२)

अर्थ :- हे परम ! आपका ही स्मरण-रटण-स्वप्न मैं देखता हूँ, आपकी ही वाणी का श्रवण, उसका मनन और आपका ही ध्यान मैं सतत करता रहता हूँ। इस संसार सागर से मैं कब पार उतरुंगा ऐसी चिंता भी अब मुझे नहीं रही, क्योंकि आपके प्रभाव से मेरे सारे भवसागर ही सूख गए हैं।

अरिहंत-सिद्ध-सुसाधु ने, जिनधर्म शरणुं हुं वरुं,
भवोभवतणा सवि पापनुं , मिच्छामि दुक्कडम् हुं करुं ,
सवि जीवकृत सत्कृत्यनी, करुं शुभ मने अनुमोदना,
सवि जीव करुं शासनरसीनी, भावुं नित शुभ भावना (२३)

अर्थ :- कर्म शत्रु का नाश करने वाले 'अरिहंत', शुद्ध स्वरुप प्राप्त करने वाले 'सिद्ध', उनके मार्ग पर चलने वाले 'साधु' और उनके मार्ग समान 'जिनधर्म' की शरण मैं स्वीकार करता हूँ। आज तक अनंत जन्मों में मैंने जो-जो दुष्कृत किये है उन सभी दुष्कृतों की मैं माफी मांगता हूँ। जगत के सभी जीवों ने जो- जो सुकृत किये है उन सभी सुकृतों की मैं शुभ भाव से अनुमोदना करता हूँ, और 'मुझे अगर शक्ति मिले तो सभी जीवों को आत्म कल्याण का रसिक बना दूं' ऐसी शुभ भावना मैं नित्य करता रहता हूँ।

वैराग्य भवनो हो सदा, नित मोक्षनी हो झंखना,
निज आत्ममां नित थिर रहुं , आवे भले सुख दुःख घणा,
मुज सप्तधातुमां हो अविहड राग जिनशासन तणो,
मांगु सदा फळजो मने, संगाथ आ जिनधर्मनो (२४)

अर्थ :- हे करुणासिंधु ! इस संसार से मुझे निरंतर वैराग्य रहे, और मुझे सदा मोक्ष की इच्छा रहे, चाहे सुख आए या दुःख आए पर मैं मेरी आत्मा में निरंतर स्थिर रहूँ , मेरी सात धातुओं में आपके मार्ग का अत्यंत प्रेम सदा बना रहे और हे राग द्वेष विजेता ! आपके सिद्धांतों को मैं मेरे जीवन में उतार सकुं ऐसी याचना मैं आपसे करता हूँ।

हे नाथ ! अंतरथी कहुं , मुज विनती स्वीकारजे,
मुज जीवन संध्यानी क्षणे मारा हृदयमां आवजे,
वळी आवता भवमां प्रभु, जिनधर्म हैये थापजे,
मुक्ति सुधी मुज आत्मगुण रश्मिनुं 'हीर' वधारजे, (२५)

अर्थ :- हे नाथ ! मैं हृदय से कहता हूँ कि आप मेरी विनती को स्वीकारना और मेरे जीवन के अंत समय में मेरे हृदय में पधारना तथा मेरे भावी जन्म में भी आपके धर्म की स्थापना मेरे हृदय में करना और जब तक मुझे मुक्ति ना मिले तब तक मेरे आत्मा के गुणों के प्रकाश का तेज बढ़ाते रहना, बस यहीं प्रार्थना............

99. श्री महावीर वंदनावली
श्री कल्पसूत्र वंदनावली

(हरिगीत छंद)

(प्रभु के नाम)

जे चरम तीर्थंकर "**महावीर**" सिंह लंछन शोभता,
नित बाह्य-अभ्यंतर स्वरूपे "**वर्धमान**" गुणे हता,
सविजीवनी करुणाथी करता "**श्रमण**" धर्मनी स्थापना,
ते "**ज्ञातनंदन**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु महावीरना, चरणे करुं हुं वंदना...
मारा प्रभु...१

(समकित स्पर्श)

नयसार थई मुनिदान दई, जे अटवी मारग दाखता,
भव अटवीमां सन्मार्ग सम, तव मोक्ष मारग पामता,
भवसिंधुने बिंदु करे, प्रभु पामी समकित स्पर्शना,
"**भवसिंधु शोषक**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२

(प्रभु के भव)

मरीचिभवे जे ऋषभजिननां पौत्र थई दीक्षा वरे,
महामोहवश थईने तिहाँ , संसार संवर्धन करे,
करे कर्म क्रूर कदर्थना, तो पण डगे लवलेश ना,
ते "**कर्मवैरी**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...३

(प्रभु के भव)

ब्राह्मण-अमर वळी वासुदेव ने चक्रवर्ती जे थतां,
भवसागरे भमता थका, निज गाढ कर्म खपावता,
बावीसमां भवथी करे, अध्यात्मनी आराधना,
"**अध्यात्मयोगी**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...४

(प्रभु की भावना)

नंदनभवे 'सवि जीव करुं शासनरसी' भावोथकी,
जे वीशस्थानक साधता, मासक्षमण श्रेणिथकी,
करे विश्वनां वात्सल्यथी, जिन नामकर्म निकाचना,
ते **"विश्ववत्सल"** वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...५

(च्यवन कल्याणक)

सुरलोकथी च्यवी चौद सुपने विप्रकुळमां आवता,
हरि-णैगमेषी देव तव, क्षत्रिय कुळमां थापता,
जगमात त्रिशला कुक्षिए, गृहे ठवे सिद्धार्थना,
"परमेष्ठी" श्री प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...६

(जन्म कल्याणक)

जे मातगर्भे थिर रही, फरी अंगने फरकावता,
ने चैत्रसुदनी तेरसे, जनमी जगत हरखावता,
दिक्कुमरी ने इंद्रो महोत्सव उजवता जस जन्मना,
"अरिहंत" श्री प्रभु वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...७

(बाल्यकाळ)

जन्मोत्सवे अंगुष्ठथी, मेरुगिरि कंपावता,
ने सुरपरीक्षामां प्रभु **"महावीर"** नाम धरावता,
गंभीर थई निशाळ जई, संशय हर्या शक्रेंद्रना,
"त्रणज्ञानधारक" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...८

(गृहवास)

निज मातना आग्रहथी परणी भोग कर्म निवारता,
शिवराज्य लेवा भ्रातनी, महाराज्य विनंती टाळता,
करे बे वरस गृहवासमां, जे श्रमणनी सम साधना,
ते **"विरतिप्रेमी"** वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...९

(दीक्षा कल्याणक)

लोकांतिकोनां वचनथी महा वरसीदानने आपता
भविजीवना तन-मनतणां, दुःख-दर्दने जे कापता,
दीक्षा ग्रही एकाकी विचरे सिंह सम निर्भयमना,
"जगनाथ" ते प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना ,
मारा प्रभु...१०

(प्रथम उपसर्ग)

करुणा करी निज अर्धवस्त्रनुं दान विप्रने आपता,
कुर्मार ग्रामे प्रथम संध्यामां प्रभुवर आवता,
गोवाळना उपसर्गनी करे इन्द्र आवी निवारणा,
"षट्कायरक्षक" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...११

(इंद्र विनंति)

द्वादश वरसनी साधनामां घोर उपसर्गो अति,
तमने थशे, ते वारवा, साथे रहुं द्यो अनुमति,
निर्विघ्न हो तुम साधना, इम वचन सुणता इन्द्रना,
"देवाधिदेवा" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१२

(प्रत्युत्तर)

कैवल्य लक्ष्मीने वरे, अर्हंत पण निज बळ वडे,
परना बळे मुक्ति मळे, तस दाखला पण ना जडे,
उत्तर सुणी सिद्धार्थ सुरनी इन्द्र करता स्थापना,
"निरपेक्ष" प्रभुवर वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१३

(प्रथम पारणा)

ग्रही पात्रमां परमान्न ने, करे छट्ठ तपनां पारणां,
तव सुरभि शरीरे दंश देता भ्रमरनां वृंदो घणा,
कामुक बनी स्त्रीयों करे तुज अंग-संगनी याचना,
"निष्काम" प्रभुवर वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१४

(प्रभु की जगत्बंधुता)

धरे पंच अभिग्रह विविध तापस आश्रमे चौमासमां,
शूलपाणिना उद्धार काजे आवे अस्थिक ग्राममां,
निष्कारणे बांधव समा, भंडार जे करुणा तणा,
ते **"जगतबंधु"** वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१५

(शूलपाणि उपसर्ग)

शूलपाणि सुर रोषे भरी मरणांत उपसर्गो करे,
हाथी-पिशाच ने सर्प रूपे देहमां पीडा करे,
समभाव निरखी आपनो, थई भक्त करतो सेवना,
"समभावधारक" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१६

(परार्थव्यसनता)

सामेथी चाली घोर वनमां, चंडकौशिक नागना,
उपसर्गने सही, बोध आपी, सुख आप्या स्वर्गनां,
अपकारी पर उपकार करवानां व्यसन जेने घणा,
"परमोपकारी" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१७

(सुदंष्ट्र उपसर्ग)

गंगानदीमां आपने, सुदंष्ट्र उपसर्गो करे,
कंबल अने संबल सुरो, तस आवीने वारण करे,
आरक्षको तने चोर समजीने करे विडंबना,
"सर्वंसहा" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१८

(प्रभु की समता)

करवा करमनी निर्जरा, अनार्य देश पधारता,
उपसर्गनी वणझारमां, समता सुधाए झीलता,
अद्‌भुत समाधिथी सहे, मरणांत पण कष्टो घणा,
"समतानिधि" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...१९

(लोकावधिज्ञान)

निज कर्मइंधन बाळता, दावानळे रही थिरमना,
हिमरातभर अति शीत जळवृष्टि करे कटपूतना,
सुविशुद्ध भावे पामता, तव ज्ञान लोकावधि तणा,
"निजकर्मशोधक" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२०

(इन्द्र प्रशंसा)

जे शीतलेश्याने मूकी, गोशाळने उपकारता,
जस साधनाने इन्द्र पण, सुरलोकमां परशंसता,
तेने सुणी संगम सुरे, करी आपनी सुपरीक्षणा,
"मोक्षैकलक्षी" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२१

(संगम उपसर्ग)

महाकाळ सम जे एक रात्रे वीस उपसर्गो करे,
वळी काळचक्र मूकी तमो, पर क्रोधथी अति विफरे,
तो पण चल्या नवि ध्यानथी, धरी कर्मनाशनी भावना,
"अति धीर" श्री प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२२

(प्रभु की करुणा)

षड्मास पीडा भोगवे पण रोष नवि मनमां धरे,
संगम सरीखा अधम पर, अश्रुथकी करुणा करे,
जस चरणशरणे आवता, सवि भय टळे चमरेन्द्रना,
"करुणानिधि" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२३

(भीष्म अभिग्रह)

जे द्रव्य-क्षेत्र-काळ-भावे घोर अभिग्रहने धरी,
पचमास पचवीश दिवसनां, अति दीर्घ तपने आदरी,
व्होरी अडदना बाकुळा, उद्धारी बाळा चंदना,
"अभिग्रहधरा" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२४

(शूल वेदना)

शत्रु बनी आवेलने, जे मित्रनी सम मानता,
जिम-जिम पडे कष्टो घणां, तिम-तिम अतिशय हरखता,
जे स्तंभ सम निश्चल रही, सहे कर्णशूलनी वेदना,
ते **"श्रमण"** प्रभु महावीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२५

(साधना)

भारंड पंखी सारीखी, धारे सदा अप्रमत्तता,
जे भीष्मतप दावानले, महाकर्मवनने बाळता,
करे सार्धद्वादश वर्षमां, मुहूर्तनो य प्रमाद ना,
"अप्रमत्तयोगी" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२६

(केवलज्ञान कल्याणक)

तडको तपे अति आकरो, वैशाख सुदी दशमी दिने,
ऋजुवालुका सरिता तीरे, गोदोहिका वर आसने,
प्रगटे सूरज कैवल्यनो, भावो निहाळे विश्वना,
"सर्वज्ञ" श्री प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२७

(संघ स्थापना)

क्षणवार आपी देशना, पावापुरी करे स्पर्शना,
गौतम-सुधर्मादि ठवे, गणधर पदे श्री संघना,
वैशाख सुदि अग्यारसे, करे धर्मतीर्थनी स्थापना,
"**तीर्थंकरा**" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२८

(प्रभु की तारकता)

जे बाळ अइमुत्ता समा, बहु भव्य जीवो तारता,
श्रेणिक आदि नवजीवोने भावी जिनपदे थापता,
क्षणनो प्रमाद तजो सदा, एवी सतत जस प्रेरणा,
ते **"विश्वतारक"** वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...२९

(अपायापगमातिशय)

बनी धर्मसारथी मेघने, जे धर्म मार्गे वाळता,
वळी देवानंदा-ऋषभदत्तने विरति दई शिव आपता,
जस नाम जपता, पाप खपता, घातकी अर्जुनतणा,
ते "**धर्मचक्री**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...३०

(वचनातिशय)

तुझ धर्मलाभने सांभळी, सुलसा लहे रोमांचता,
खेडूत अने गौशाळने समकित सुधारस आपता,
रोहिणीयो तुज वचनथी, हरे कर्म निज आतमतणा,
"**सन्मार्गदर्शक**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...३१

(पुजातिशय)

तुज रूप जोवा मूळ रूपे रवि-शशि पण आवता,
धन्ना ने शालीभद्र पण, तुज पदकमळने सेवता,
आनंद-कामादिक महाश्रावक थया तव संघना,
"**त्रिभुवनतिलक**" प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...३२

(ज्ञानातिशय)

निज अंत समये आपता, जे सोळ प्रहरनी देशना,
कहे भाविभावो भरतनां, फळ पुण्य-पापतणा घणा,
दूर मोकली गौतम तणा, करे दूर बंधन रागना,
"**जगभाविदर्शक**" वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु...३३

(निर्वाण कल्याणक)

ग्रहभस्मदोष निवारणार्थे इन्द्र प्रभुने प्रार्थता,
नवि संभवे त्रण काळमां, कही वीर मोक्ष सिधावता,
आ भावदीपक बुझता, प्रगटी दीवाळी अमासना,
"**पारंगता**" प्रभु वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु... ३४

(प्रभु के तीर्थ)

क्षत्रियकुंडे अवतर्या, पावापुरी भवजल तर्या,
नाणा-दियाणा-नांदिया, जीवित स्वामी वांदिया,
सांचोर-महुवा-ओसिया, तीर्थो जगे तारा घणा,
“**तीर्थेश्वरा**” प्रभु वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु.. .३५

(प्रभु का शासन)

कलिकालमां पण जेहनुं, शासन सदा गाजी रह्युं ,
खारा समंदरमांही मीठा जळ समु शोभी रह्युं ,
जे सुरतरु सम आज पण, पूरे सहुनी कामना,
“**शासनपति**” प्रभुवीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु... ३६

(उपसंहार)

जेना चरितना श्रवणथी, आवे जीवनमां धीरता,
कर्मोतणा संग्राममां, प्रगटे सदा महावीरता,
हे वीर ! तुज गुण '**हीर**' सवि, जीवो लहे ए झंखना,
मुज “**प्राणप्यारा**” वीरना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा प्रभु महावीरना, चरणे करुं हुं वंदना...
मारा प्रभु...३७

।।इति श्री महावीर वंदनावली संपूर्णम् ।

(प्रभु पार्श्वनाथ)

सेवक मुखे नवकार दई, जे नागने उगारता,
जस नामथी निश्चय सवि, मरणे समाधि पामता,
जे कमठ ने धरणेंद्रमां, राखे सदा समभावना,
श्री “**पुरुषादानी**” पार्श्वना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा श्री पारसनाथना, चरणे करुं हुं वंदना... ३८

(प्रभु नेमिनाथ)

राजीमतिना कंत ने, वळी बंधु जे श्री कृष्णना,
पोकार पशुओनो सुणी, शिखरे चढ्या गिरनारना,
शाश्वत करे जे मोक्षमां, संबंध नवभव प्रीतना,
“**महाब्रह्मचारी**” नेमिना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा श्री नेमिनाथना, चरणे करुं हुं वंदना... ३९

(प्रभु आदिनाथ)

आ पृथ्वीना पहेला पति, मुनिराज ने जिनराज जे,
कर्तव्य जाणीने सिखावे लोकना व्यवहार जे,
महावर्षीतपने आदरी, प्रेरक बन्या तपधर्मना,
ते “**प्रथमजिन**” प्रभु ऋषभना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा श्री आदिनाथना, चरणे करुं हुं वंदना... ४०

(२४ जिन का अंतरा)

आरक चतुर्थे अर्धभागे ऋषभजिन शासन रहे,
बाकी असंख्य वरसमहीं, त्रेवीस जिन शासन वहे,
महासार्थवाह समा बतावे मार्ग जे शिवनगरना,
“**चोवीस**” ते भगवंतना, चरणे करुं हुं वंदना,
मारा श्री जिन चोवीसना, चरणे करुं हुं वंदना... ४१

(पट्टावली)

दीर्घायुषी सुधर्मस्वामी वीर पाटे आवता,
तस शिष्य जंबुस्वामी भरते केवली अंतिम थतां,
शतपंच चोर प्रभु प्रभवने जे दीये प्रतिबोधना,
हे वीर ! तुज अणगारना, चरणे करुं हुं वंदना,
शासनतणा शणगारना, चरणे करुं हुं वंदना.... ४२

(स्थविरावली)

शय्यंभव-स्थूलभद्र-वज्रस्वामी निर्मल गुण भर्या,
देवर्धिगणी श्रमणोतणी, सुपरंपराए अवतर्या,
वल्लभीपुरीनी वाचनामा, सूत्रनी करे लेखना,
हे वीर ! तुज अणगारना, चरणे करुं हुं वंदना,
शासनतणा शणगारना, चरणे करुं हुं वंदना.... ४३

(सामाचारी)

गुरुआणथी चौमास रहीने पवन सम जे विचरता,
संबंध छोडे लोकनो, ने श्लोकमां जे राचता,
सहुने खमावे शुद्धभावे मूळ कापे कर्मनां,
हे वीर ! तुज अणगारना, चरणे करुं हुं वंदना,
शासनतणा शणगारना, चरणे करुं हुं वंदना.... ४४

सुरकल्पतरु सम कल्पसूत्रनी संघमां हो वाचना,
आलोक ने परलोकमां, पूरे सवि मनकामना,
प्रभुवीरनी 'गुण-रश्मि'थी **'हीर'** झळहळे आतमतणा,
श्री कल्पसूत्र सुग्रंथने, हो भावथी मुज वंदना,
श्री बारसा महासूत्रने, हो भावथी मुज वंदना... ४५

।। इति श्री 'कल्पसूत्र वंदनावली' संपूर्णम् ॥

सूचना

यह 'महावीर वंदनवली' भगवान श्री महावीर स्वामी के पंच कल्याणक के दिनो में तथा प्रभुवीर के तीर्थों में गाने के लिये बहुत उपयोगी है तथा अंतिम 9 स्तुति के साथ ' कल्पसूत्र वंदनावली ' के रूप में सुप्रसिद्ध यह संपूर्ण रचना संवत्सरी महापर्व के दिन बरसा सूत्र के ढालिये के रूप में कार्यक्रम करवाने के लिये भी अत्यंत उपयोगी है ।

' महावीर ' बनने का महामंत्र
जो किसी भी घटना को दुर्घटना नहीं बनाता ,
उस घटना में राग – द्वेष , हर्ष – शोक नहीं करता ,
वहीं आगे जाकर महावीर बन सकता है ।

जिस दिन हम खुद की आत्मा से उतना ही प्यार करेंगे
जितना अब तक दूसरों से करते आए हैं,
उसके बाद हम इस विश्व के समस्त जीवों के प्रियपात्र बन जाएंगे ।

100. पंचसूत्र परिभावना
(प्रथम सूत्र)

(हरिगीत छंद)

जे चार भेदो धर्मना, प्रभु तें बताव्या विश्वमां,
वळी तेहमां शिरदार ने, नायक समो जे जगतमां,
तिहुं काळमां पण जीवनी, मुक्ति नथी जेना विना,
श्री पंचसूत्र थकी करुं, ते भावधर्म आराधना.... १

(मंगल)

वीतराग सर्वज्ञ वळी, देवेन्द्रथी पूजित जे,
वस्तु यथास्थित भाखता, त्रैलोक्यगुरु अरुहंत जे,
चोत्रीश अतिशय धारका, भगवंत जे त्रण भुवनना,
ते जगपति अरिहंतने, करुं भावथी हुं वंदना.... २

(संसार स्वरूप)

कैवल्यमां निरखी कहे, भविजीवने परमातमा,
वसता अनादिकाळथी, सवि जीव आ संसारमां,
भवसागरे तस भवभ्रमण, पण छे अनादिकाळनां,
तस मूळ कारण छे अनादि कर्मनी संयोजना... ३

दुःखरूप ने दुःखफळप्रदा, दुःखानुबंधि जग सदा,
तेनो करे विच्छेद जे, लहे शुद्धधर्मनी संपदा,
ते शुद्धधर्मनी प्राप्ति पण, लहे पापना विगमन थकी,
करे पापविगमन पण तथाभव्यत्वना परिपाकथी.... ४

(परिपाक साधन)

भाखे प्रभु परिपाक साधन ते तथा भव्यत्वनां,
अरिहंत-सिद्ध-सुसाधु ने शरणां ग्रहो जिनधर्मना,
ईह-परभवेकृत दुष्कृतोनी भावथी करो गर्हणा,
सत्कृत्य जे सवि जीवकृत, तेनी करो अनुमोदना... ५

भवनाश करवा मोक्षअर्थी भव्यजीवो शुभ मने,
करजो सदा प्रणिधान पूर्वक पंचसूत्रना पाठने,
संक्लेशनी क्षणमां सदा करजो निरंतर सेवना,
ने स्वस्थताए पण त्रिकाळे नित करो संभारणा... ६

(अरिहंत शरण)

त्रणलोकना जे नाथ छे, भंडार अनुत्तर पुण्यना,
क्षीणराग-द्वेष ने मोह जस, वळी नाव भवजलधितणा,
अविचिंत्य चिंतामणी समा, एकांत शरणुं जेहनुं ,
जावज्जीवं लउं शरण हुं , अरिहंत भगवंतो तणुं... ७

(सिद्ध शरण)

जे जन्म मरण रहित बन्या, काढी कलंको कर्मनां,
क्षीणविघ्न जस वळी स्वामी केवलज्ञान ने दर्शन तणा,
निरुपम सुखोथी युक्त जे, ने सर्वथा कृतकृत्य जे,
शरणुं ग्रहुं ते सिद्ध भगवंतोनुं शिवपुरस्थ जे... ८

(साधु शरण)

सुप्रशांत गंभीर आशया, सावद्ययोगथी विरमता,
आचार पंच जे जाणता, ने पर सहाये नित रता,
पद्मादि सम उपमा वरे, स्वाध्याय ध्याने मग्न जे,
शरणुं ग्रहुं ते श्रमणनुं, रहे चढत भावे नित्य जे... ९

(धर्म शरण)

सुरअसुरनर पूजित, मोहतिमिररवि ने शिवप्रदा,
हरे राग-द्वेष रूपी विषोने मंत्र बनी जे सर्वदा,
हेतु सकल कल्याणनो, ज्वाला बनी दहे कर्मवन,
ते जिनप्ररूपित धर्मनुं, शरणुं ग्रहुं यावज्जीवन... १०

(दुष्कृत गर्हा)

इम शरण ग्रही सवि दुष्कृतोनी हृदयथी करुं गर्हणा,
अरिहंत-सिद्धाचार्य-वाचक-साधु ने साध्वी तणा,
वळी धर्मप्रेमी श्रावको, ने श्राविकाना वृंदना,
अपराध जे मुजथी थया, करुं भावथी तस गर्हणा... ११

माता-पिता-बन्धु अने मित्रो वळी उपकारीना,
सन्मार्ग के उन्मार्गमां, स्थित सर्व जीवसमूहनां,
उपकरण ने अधिकरण वळी, सवि जड अने चेतन तणा,
अपराध जे मुजथी थया, करुं भावथी तस गर्हणा... १२

ते सर्वनां संबंधमां, विपरीत आचरणा करी,
दुष्टाचरण अनिच्छनीय कर्मलीला आदरी,
पापानुबंधि पाप जे अति सूक्ष्म वळी बादर घणां,
तन-मन-वचनथी आदर्यां, करुं भावथी तस गर्हणा... १३

ते पाप में कीधां - कराव्यां ने करी अनुमोदना,
अतिराग-द्वेष के मोहथी, ईहभव तणा-परभव तणा,
अतिनिंद्य ते दुष्कृत्य निश्चय योग्य छे परित्यागना,
मन-वचन-कायाए करुं, हुं भावथी तस गर्हणा... १४

कल्याणमित्र समा गुरुथी वात आ जाणी करी,
साची ज छे आ वात इम, निज हृदयमां श्रद्धा धरी,
अरिहंत - सिद्धनी साक्षीए, दुष्कृत्यनी करुं गर्हणा,
मिच्छामि दुक्कडं देईने, करुं त्याग निज पापो तणा... १५

गर्हा करी जे आज में, सम्यग् बनी मुजने फळो,
पापो करुं ना हुं फरी, एवी मने शक्ति मळो,
बहुमान्य आ मुजने बनो, इच्छुं सदा अनुशासना,
अरिहंत भगवंतो तणी, ने गुरु तणी हितशिक्षणा... १६

नित देवगुरु संयोग हो, साची बनो मुज प्रार्थना,
बहुमान हो आनुं मने, बने मोक्षबीज ए कामना,
ते देवगुरु सांनिध्य मळता करीश भावथी सेवना,
अतिचार विण आणा धरीने पार पामीश भव तणा... १७

संविज्ञ थई यथाशक्तिए, करुं सुकृतनी अनुमोदना,
जे धर्म अनुष्ठानो सवि, अरिहंत भगवंतो तणा,
शाश्वत स्वरूपे स्थिर जे, शुभभाव सवि सिद्धो तणा,
तन-मन-वचनथी हुं करुं, तस भावथी अनुमोदना... १८

जे सर्व आचार्यो तणा, शुभ पंचविध आचारनी,
ने सर्व उवज्झायना, स्वाध्याय वळी श्रुतदाननी,
दशअष्टसहस्र शीलांग युत, यतिधर्म जे सवि श्रमणना,
तन-मन-वचनथी हुं करुं, तस भावथी अनुमोदना... १९

सवि श्रावको ने श्राविकाना मोक्षसाधक योगनी,
ने देव-दानव-भव्यमानव-अल्पभवी सवि जीवनी,
मार्गानुसारी कृत्यनी, जेथी लहे फळ शिव तणा,
तन-मन-वचनथी हुं करुं, तस भावथी अनुमोदना... २०

ते परम गुण संपन्न अरिहंतादिना शुभबळ थकी,
आ माहरी अनुमोदना, सम्यग् बनो सुविधि थकी,
सम्यग् बनो शुद्धाशया, सम्यग् क्रियापूर्वक सदा,
सम्यग् निरतिचारी बनी, पुण्यानुबंधि पुण्यदा... २१

सर्वज्ञ भगवन् वीतराग अचिंत्य शक्ति युक्त जे,
भविजीवना कल्याणमां कारण परम आधार जे,
हुं मूढ पापी ने अनादि मोहथी वासितमना,
ते देवगुरु नवि ओळख्या, छे केवी मुज विडंबना !... २२

अणजाण छुं हुं सर्वथा, मुज हित-अहितना भावथी,
विरमुं अहितथी हिततणुं, सेवन करुं शुभ भावथी,
सवि जीव प्रति औचित्य धरी, करुं धर्मनी आराधना,
इच्छुं सदा करतो रहुं , सत्कृत्यनी अनुमोदना.... २३

(फळ वर्णन)

आ सूत्र जे सुभणे-सुणे-चिंतन करे भावितमना,
तस भव अनंत तणा अशुभ, अनुबंध सवि कर्मोंतणा,
सुशिथिल बनी, थई क्षीण ने, सवि नाश पामे सर्वथा,
शुभध्याननी धारा थकी, शुद्धि लहे जीव सर्वदा... २४

जिम मंत्र बंधित सर्पविष, तिम कर्म निज आतम प्रति,
अति अल्पफळदायी, सुखेथी दूर थाये आत्मथी,
बंधाय ना फरी वार कदी, एवा बने निर्बळ सदा,
आ सूत्र परिभावन प्रभावे नाश थाये आपदा... २५

वळी शुभ करम अनुबंध आकर्षित बने जस पाठथी,
पोषण थकी संपूर्ण बनी, शुभकर्म सानुबंधथी,
प्रकृष्ट थई, नियमा फळे, जिम श्रेष्ठ औषध विधिवता,
शुभ फळप्रदा, सुप्रवर्तका, आपे परमसुख शाश्वता... २६

तेथी निदानरहित अने, सवि अशुभ भावरहित सदा,
शुभभावबीजक सूत्र आ, प्रणिधान शुभ धरी सर्वदा,
सम्यग् भणो, सम्यग् सुणो, सम्यग् करो परिचिंतना,
शिव-अचल-अरुज-अनंत-अक्षय गुण वरो आतमतणा...२७

(सार)

अरिहंत-सिद्ध-सुसाधु ने, जिनधर्म शरणुं हुं वरुं,
भवोभवतणा सवि पापनुं मिच्छामि दुक्कडम् हुं करुं,
सवि जीवकृत सत्कृत्यनी, करुं शुभमने अनुमोदना,
'सवि जीव करुं शासनरसी'नी, भावुं नित शुभ भावना... २८

(अंत मंगल)

अतिपूज्य पूजित परमगुरु वीतरागने मुज वंदना,
वळी जे नमस्करणीय सहुने भावथी करुं वंदना,
जय हो अप्रतिहत विश्वमां, सर्वज्ञ शासन सर्वदा,
पामो परम समकित थकी, सुख जगतना जीवो सदा... २९

(कळश)

क्यां श्रुतनिधि श्री चिरंतनाचार्ये रचेलुं सूत्र आ,
क्यां मूढमति सम माहरुं, तस काव्य रूपे कार्य आ,
तोए कर्युं भक्तिवशे, कल्याण काजे विश्वना,
जिनगुणरतन रश्मिथी प्रगटे **'हीर'** सवि जीवो तणा... ३०

।। इति श्री पंचसूत्रे 'प्रथमसूत्र परिभावना' समाप्तम् ॥

अगर शीघ्र मोक्ष प्राप्त करना हो तो इस पंचसूत्र (प्रथम सूत्र) का पाठ दिन में ३ बार तो अवश्य करना चाहिये....... शास्त्र वचन

101. भारत विश्वगुरु था पहले

(तर्ज - जन गण मन)

भारत विश्वगुरु था पहले
फिर से हमें बनाना

मतभेद नहीं मनभेद मिटाकर
सबको गले लगाना

देश सुरक्षा पहला धर्म है
सबको यहीं सीखाना

देवताओने चूमी, अवतारों की ये भूमि
'हीर' वो इसको दिलाना

भारत विश्वगुरु था पहले
फिर से हमें बनाना

जय हो भारतम्, जय हो...
भारत की जय हो...

102. नवकार अष्टक

(हरिगीत छंद)

जेना स्मरणथी सद्गतिनां द्वार पळमां उघडतां,
जेना स्मरणथी मोक्षना, मारग बधा खुली जता,
जेना स्मरणथी नाश पामे कर्म अतिशय चीकणां,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... १

अरिहंत-सिद्धाचार्य-वाचक-श्रमण जे त्रणकाळना,
सम्यग् दरीशन, ज्ञान वळी, चारित्र तपनी साधना,
साक्षात् जाणे देव-गुरु, ने धर्मनी अवतारणा,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... २

जे कामधेनु-कल्पतरु-चिंतामणीथी पण चढे,
त्रणलोकमां जेनी समाने कोई ना उपमा घटे,
आलोक ने परलोकमां, पूरे सवि जे कामना,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... ३

दुर्लभ अतिशय जे कह्यो, चोरासी लाखना चक्रमां,
अतिपुण्यशाळी जीवने, हो प्राप्त जे गतिचारमां,
पुद्गल परावर्ते चरममां भावथी जस स्पर्शना,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... ४

निगोदथी निर्वाण सुधीना पंथनो जे सारथि,
सवि कर्मवनने बाळनारो एक छे जे महारथी,
जेना निरंतर स्मरणथी, विखराय सघळी वासना,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... ५

जेना हृदयमां गाजतो, नवकाररूप सिंह सर्वदा,
तेना थकी दूर भागती, संसारनी सवि आपदा,
जे वज्र सम बनी भांगतो, अति घोर भय भवभ्रमणना,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... ६

जो अंतकाळे पण मळे, तो भवतणा फेरा टळे,
जे भावथी नित समरता, तेने वळी शुं ना मळे,
छे चौदपूर्वना सार सम, गंभीर जेना पद घणा,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना.... ७

शुभभाव जेथी विस्तरे, शुभतत्त्व जेथी नित फळे,
जेना विना शिवपंथनी, ना साधना कोई फळे,
निज आत्म गुणरश्मि प्रकाशे '**हीर**'नी ए झंखना,
ते पंचपरमेष्ठी स्वरूप, नवकारने हो वंदना... ८

यदि सांसारिक वस्तुओं की आवश्यकता हो
तो वस्तुओं के पीछे मत भागो।
बस नवकार महामंत्र का शुभ भाव से
निरंतर जाप करो।आपकी इच्छित वस्तु स्वतः ही
आपके पीछे दौड़ती हुई आएगी।

नवकार मंत्र को सिद्ध करना हो तो नवकार गिनते समय उसका जो अर्थ है उसे आँख बंद करके देखों । जैसे " नमो अरिहंताणं " बोलते समय "समवसरण में बिराजमान अरिहंत परमात्मा को मैं वंदन करता हूँ" ऐसा देखो फिर आगे का पद बोलो ।

जैसे-जैसे आत्मा नवकार के पदों से भावित बनता है ,
वैसे-वैसे उसे स्वयं ही पता चल जाता है कि उसका जन्म
इस संसार में क्यों हुआ है ?

103. आंतर प्रार्थना

(हरिगीत छंद)

निज गुणमां गंभीरता, परदोषमां मौनियता,
निज भावमां सुस्थिरता, परभावमां निःस्पृहता,
इच्छा नवि कोई रहे, एवी सुबुद्धि आपजो,
हे नाथ ! भव वैराग्यनुं , वरदान मुजने आपजो... १

हे नाथ ! भव निर्वेदनुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! शिव संवेगनुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! तारा धर्मनुं , आचरण मुजने आपजो,
हे नाथ ! तारा मार्ग पर, सुगमन मुजने आपजो...२

हे नाथ ! तारा तत्त्वनुं , श्रद्धान मुजने आपजो,
हे नाथ ! रत्नत्रयी तणुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! तत्त्वत्रयी तणुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! निःस्पृहता तणुं , वरदान मुजने आपजो...३

हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! निर्ममता तणुं वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! अंतर्मुख बनुं आशिष एवा आपजो,
हे नाथ ! तव करुणा तणुं शुभ पात्र मुजने बनावजो...४

हे नाथ ! सद्बुद्धि तणुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! ब्रह्मचर्यनुं , वरदान मुजने आपजो,
हे नाथ ! वचन माधुर्यनुं , वरदान मुजने आपजो,
'सवि जीव करुं शासन रसी', अरमान मुजने आपजो...५

104. भावश्रामण्य झंखना

(हरिगीत छंद)

जे वेश मेळववा तरसता इंद्र पण सुरलोकमां,
जे वेश दे निश्चिंतता आलोक ने परलोकमां,
ते वेश मुजने पण फळे, सामर्थ्य एवुं आपजो,
हे नाथ ! भाव श्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो... (१)

शुद्धात्मभावे थिर रही, अप्रमत्त गुणठाणुं वरुं,
सम शत्रु-मित्र विशे बनी, परभावने शत्रु गणुं,
उपसर्ग-परिषह पण मने, मम प्रिय बांधव लागजो,
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो... (२)

द्वादश तपो दशविध यतिधर्मो थकी भावित बनुं,
ने अष्टप्रवचन मातनो हुं लाडको बाळक बनुं.
नहीं लोकमां पण श्लोकमां निशदिन रमतो राखजो,
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो... (3)

मन-वचन-कायाथी सदा निर्दंभता कन्या वरुं,
ने जड अने चेतन विशे निःस्पृहता स्वामी बनुं,
नहीं 'शिष्य' पण 'शिष्यत्व' झंखु लोभ एवो आपजो,
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो... (४)

नही रक्त पण नस-नसमहीं बस दाझ शासननी वहो,
तजवा पडे निज प्राण तो पण मन सदा उत्सुक रहो,
'सौने करुं शासनरसी' ए व्यसनमांही डुबाडजो
हे नाथ ! भाव श्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो ... (५)

गुणराग हो हैये सदा, निंदा करुं ना स्वप्नमां,
जीवोतणा दुःख जोईने, अश्रु सरे मुज नयनमां,
गुणगान देवो पण करे, एवो पवित्र बनावजो,
हे नाथ ! भाव श्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो...(६)

निश्चय अने व्यवहारनुं, करुं संतुलन जीवन महीं,
उत्सर्ग मार्गे फोरवुं निज सत्त्व हुं पळपळ मही,
स्वादु नहीं सादु जीवन आदर्श मारुं बनावजो,
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो...(७)

हो विनय गौतम सम अने धन्ना समी हो परिणति,
संकल्प गजसुकुमाल सम, अतिमुक्त सम हो जागृति,
वैराग्य जंबुस्वामी सम, मम जीवनमां झळहळ थजो
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो...(८)

मरणे समाधि भाव हो, शासन फळो भवोभव मने,
ने मुक्ति ना मळे त्यां सुधी हो प्रशमसुख अनुभव मने,
मुज आत्मनी गुणरश्मि प्रगटे **'हीर'** एवुं वधारजो,
हे नाथ ! भावश्रामण्यनुं वरदान मुजने आपजो...(९)

...चारित्रनी स्तुति...

चारित्र मारो प्राण छे, चारित्र एक ज त्राण छे,
चारित्रना पंथे जनारा, जीवता भगवान छे,
इंद्रो-नरेंद्रो पण सदा, जेनी करे नित याचना,
ते भाव चारित्री बनुं , एवी सदा मुज कामना...

105. भाव श्रमण के सप्तगुण की संवेदना

(तर्ज - मंदिर छो मुक्तितणा)

आ विश्वमां आदर्श एवुं जीवन जे जीवनार छे,
करुणा अने जयणातणा साक्षात् जे अवतार छे,
ने सप्तगुणथी शोभता जेओ सदा संयमधना,
ते भावश्रमणोने करुं हुं भावभीनी वंदना.. १

(१) मार्गानुसारी क्रिया

जे मार्गथी शांति-समाधि सद्गति सहजे मळे,
जे मार्गथी जीवो अनंता शिवगतिमां जई भळे,
ते मार्ग पर चाले अने सौने करे तस प्रेरणा,
ते मार्ग अनुसारी क्रियाधारक श्रमणने वंदना.... २

जेओ स्वभावे मोक्षसाधक वृत्तिने अवधारता,
ने पापनी प्रवृत्ति करता जे सदाए ध्रूजता,
'सवि जीव करुं शासनरसी' नी भावता जे भावना,
ते मार्ग अनुसारी क्रियाधारक श्रमणने वंदना... ३

(२) प्रज्ञापनीयता

परिवर्तना ज्यां शक्य पुनरावर्तना त्यां ना करे,
भूलो करी जे भव अनंते तेहथी पाछा फरे,
समजे ईशारामां सदा कहेवा पडे बे शब्द ना,
प्रज्ञापनीय ते श्रमणने करुं भावथी हुं वंदना... ४

जे गुणथकी अज्ञाननी सीमा कदी ना विस्तरे,
ने बाळ अइमुत्ता समा जे गुणथकी भवथी तरे,
अति सूक्ष्म बुद्धिथी करे जे आत्मनी अवगाहना,
प्रज्ञापनीय ते श्रमणने करुं भावथी हुं वंदना... ५

(३) उत्तम श्रद्धा

छे सत्य ने निःशंक जे मारा प्रभुए भाखीयुं,
जेणे उतार्युं जीवनमां तेणे ज शिवसुख चाखीयुं,
एवी परम श्रद्धाथी जे करता सतत आराधना,
ते परम श्रद्धामय श्रमणने भावथी करुं वंदना... ६

अन्याय पण जे 'कर्मनो आ न्याय' समजीने सहे,
ने ओघसंज्ञा लोकसंज्ञामां कदी पण ना वहे,
अज्ञानीने आश्चर्य सम जेना जीवननी साधना,
ते परम श्रद्धामय श्रमणने भावथी करुं वंदना... ७

(४) अप्रमत्तता

जे चौदपूरवधर जीवोने पण निगोदे मोकले,
ने मद्य-विषय-कषाय-निद्रा-विकथा रूपे छळे,
आ पंचरूपे प्रसरीने जे सतत देतो दुःख घणा,
एवा प्रमादरहित श्रमणने भावथी करुं वंदना.... ८

संसार केरा कार्यमां क्षण एक जेनी जाय ना,
उपसर्ग ने परिषह थकी पण जे कदी गभराय ना,
भारंड पंखी सम करे अप्रमत्ततानी साधना,
एवा प्रमादरहित श्रमणने भावथी करुं वंदना.... ९

(५) शक्य अनुष्ठान प्रारंभ

मायारहित मनथी करे जे शक्य अनुष्ठानो सदा,
धनलोभीया सम देहनी पण ना करे चिंता कदा,
निज शक्तिनी सीमा सुधी जे आदरे धर्मो घणा,
ते शक्य अनुष्ठानी श्रमणने भावथी करुं वंदना... १०

काकंदी धन्नानो सदा आदर्श जे सामे धरे,
निज आत्मथी निज देह साथे जे सदा युद्धो करे,
अवसर मळ्यो छे दोहिलो, जाणी करे आराम ना,
ते शक्य अनुष्ठानी श्रमणने भावथी करुं वंदना... ११

(६) उत्तम गुणानुराग

निज अल्प दोषो पण सदा कंटक परे जस खूंचता,
पर अल्प गुण पण देखीने जे हृदयथी राजी थता,
दोषो भर्या संसारमां छे दर्श दुर्लभ गुणतणा,
एवा गुणानुरागी श्रमणोने करुं हुं वंदना... १२

जे कृष्ण वासुदेव सम गुणराग निज हैये धरे,
परदोष माटे अंध ने दर्पण समी उपमा वरे,
क्यारे अनंतगुणी बनुं ? एवी सतत जस झंखना,
एवा गुणानुरागी श्रमणोने करुं हुं वंदना... १३

(७) गुर्वाज्ञानी परम उपासना

जे आजीवन गुरुकुलमहीं वसवानी करता खेवना,
आज्ञा नहीं पण गुरुतणी इच्छानी करता सेवना,
स्वच्छंद बनवानी कदी करी ना शके जे कल्पना,
एवा गुरु आज्ञा उपासक श्रमणने करुं वंदना... १४

जिम बाळ निज माता कने निर्दंभता पूर्वक रहे,
तिम बाळ सम जे गुरु कने निज गुप्त वातो पण कहे,
गुरुदेवनी जिनदेव सम जे नित करे उपासना
एवा गुरु आज्ञा उपासक श्रमणने करुं वंदना... १५

(उपसंहार)

आ सातमांथी एक पण गुण जे सदा धारण करे,
आलोकमां पण ते सदा मुक्ति समा सुखने वरे,
तस आत्म गुण रश्मिनुं '**हीर**' वधे सदा संशय विना,
एवा सुगुणधारी जीवोने भावथी करुं वंदना... १६

मात्र गुरु के साथ में रहना वहीं गुरुकुलवास नहीं है परंतु गुरु की इच्छानुसार जीवन ही वास्तविक गुरुकुलवास है। जो ऐसे गुरुकुलवास को अपनाते है वे कुछ ही समय में खुद भी जगद्गुरु बन जाते हैं।

106. वर्षीतप पारणा गीत

(तर्ज - राधाने श्याम मळी जाशे तु जो)

आज वर्षीतप का पारणा आया तू देख
आज तपस्वी को हर्ष ना समाया तू देख
पारणा महोत्सव आया तू देख
तपस्या महोत्सव आया

: श्लोक :

चारसो-चारसो दिन की भीषण तपस्या सवाई
आदिनाथ दादा की है कृपा जिससे पाई

: अंतर :

आहार संज्ञा में डुबा है ये जग सारा
लगे इन्हे वीरमार्ग प्यारा
द्वादश तप से ये शुद्ध करे कर्मधारा
मिला इन्हें धर्म का सहारा
इन्हें रसना का रस मन ना भाया तू देख
इसने आतम का '**हीर**' बढाया तू देख...
पारणा महोत्सव आया तू देख ।

अगर आप अपनी इच्छानुसारी जिंदगी जीना चाहते हैं तो भगवान की इच्छा के अनुसार जीना शुरू कर दें , अन्यथा कर्मसत्ता आपको ऐसी जगह भेज देगी जहाँ अपनी इच्छानुसार कुछ नहीं कर सकोगें ...
और प्रभु की इच्छा यहीं है कि जो तुम्हें पसंद नहीं है ऐसा दूसरों के साथ कभी मत करना |

गुरु गुण गीत गंगा

107. गुरु तुम कहां गये ?

जीना सीखा के मृत्यु सम हमें दर्द दे गये,
मझधार में हमें छोडकर गुरु तुम कहाँ गये ?

ममता तुझी में देखी, पिता भी तू बना,
मित्र जैसा वर्तन तेरा, लगे सदा अपना,
हँसना सीखा के अब हमें क्यों रुला गये ?
मझधार में हमें छोडकर गुरु तुम कहाँ गये ?
जीना सीखा के...१

अब तक समझ ना पाए, ऐसी तू हस्ती,
हर परिस्थिति में तेरी, अविचल थी मस्ती,
गुरुवर तुम्हारे नाम का तुम '**हीर**' बढा गये,
मझधार में हमें छोडकर गुरु तुम कहाँ गये ?
जीना सीखा के...२

108. गुरु मोरे मन आयो

(तर्ज - प्रेम रतन धन पायो)

सब है झूठे, फिर भी ना छूटे, जग की मोह-माया,
जन्म-मरण से, मुक्ति को पाने,
गुरु शरणे आया, गुरु शरणे आया
नीनीनी... सासासा... रेरेरे... सासासा[3]... नी रे
लायो... भायो... छायो... पायो... आयो...
भटका हुआ था मैं, राहबर अब मिला[2]
चाहुं ना मैं फिर यहाँ , भवों का ये सिलसिला

आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो[3], रे
गुरु मोरे मन आयो-आयो, गुरु मोरे मन आयो - आयो
मार्ग मोहे परखायो, गुरु मोरे...गुरु मोरे मन आयो,
अब तो गुरु मोरे मन आयो

कौन हूँ मैं और, जन्मा यहाँ क्यों ? मरके है जाना कहाँ ?
कुछ भी ना जानू, फिर भी मैं फिरता, बनके दीवाना यहाँ,
भूला मैं खुद को यहाँ,
गुरु से मुझे मेरा, निज परिचय मिला,
निर्भय है वही, जिसे सद्गुरु मिला,
आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो[3], रे
गुरु मोरे मन आयो-आयो, गुरु मोरे मन आयो-आयो
आतम मेरो हरखायो, गुरु मोरे... गुरु मोरे मन आयो,
अब तो, गुरु मोरे मन आयो... १

सुख नहीं पाया, दुःख है सवाया, जीवन में मेरे,
अन्य में सुख की, भ्रमणा मिटे ना, गुरुवर बिन तेरे,
पाने है गुण तेरे,
प्रभु से मिला सके, गुरु है वो श्रृंखला,
गुरु से दूरी जहाँ, कैसे हो वहाँ भला ?
आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो रे, आयो[3], रे
गुरु मोरे मन आयो-आयो – गुरु मोरे मन आयो
'**हीर**' मेरो प्रगटायो - गुरु मोरे - गुरु मोरे मन आयो –
अब तो - गुरु मोरे मन आयो...२

हम जितनी भक्ति भगवान की करते हैं,
उतनी ही भक्ति जिस दिन हम गुरु की भी करेंगे,
तब सभी शास्त्रों का सार हमें अपने आप प्राप्त हो जाएगा ।

109. नहीं देखा भगवान को मैंने

(तर्ज - क्योंकि तुम ही हो)

नहीं देखा भगवान को मैने, पर इस बात का रंज नहीं,
पर जब गुरुवर को देखा तो, लगते हैं भगवान यहीं,
गुरु मिलते है, बडे पुण्य से, पर फलते हैं, बहुमान से,
त्याग से, वैराग्य से, गुरु फलते हैं सद्भाव से...

गुरु को माना, गुरु का ना माना, बस अपना है हाल यही,
गुरु की शरण में जो रहते हैं, उनको मिले बस मोक्ष यु ही,
वो धन्य है जो गुरु लब पे बसे, नहीं भय उसे दुर्गति का...
गुरु मिलते है बडे पुण्य से... १

गुरु इच्छा, से जो जिया है, प्रभु के दिल, वो ही बसा है,
गुरु से जिसने दिल ना लगाया, सारे दु:खों को उसने बुलाया,
गुरुवर तेरे जैसा मैं भी बनुं, दे इतना **'हीर'** मुझे...
गुरु मिलते है बडे पुण्य से...२

वैराग्य वंदना

आ विश्वमां जेना थकी जीवों सदा निर्भय बने ,
प्रतिकूलता हो पण छतां मनमां समाधि रणझणे ,
जेना थकी अहींने अहीं सुख अनुभवे मुक्तितणा
ते सर्व गुण शिरोमणी वैराग्यने हो वंदना.... (१)

कर्मो अनादि जग अनादि काळथी चाली रह्या ,
ते कर्मना संयोगथी सौ जीव पण भटकी रह्या ,
ते कर्मथी करी मुक्त जे दे सुख अनंता काळना ,
ते सर्व गुण शिरोमणी वैराग्यने हो वंदना.... (२)

110. वंदे गुरुवरम्

(तर्ज – माँ तुझे सलाम)

वंदे गुरुवरम्... वंदे गुरुवरम्... (8)
दुनिया ये सारी देख चुका हूँ , पर अपना यहाँ कोई नहीं है,
जहाँ तक मतलब वहाँ तक रिश्ते, बिन स्वारथ यहाँ कोई नहीं,
मैं मिला जिसे भी, वो सभी दुःखी है,
सुख खुद में पडा, उसको खोजो ये बताते,
इतने गहरे जो हैं ज्ञानी, उन पर ये जीवन कुरबान,
गुरु तुझे प्रणाम^2... हाँ गुरु तुझे प्रणाम, वंदे गुरुवरम्^{2} ...

जिस पर गुरु तेरी, शीतल सी छाया नहीं
इस जग का वो, सार कभी पाया नहीं,
पुण्य-पाप कुछ नहीं, धर्म की तो बात नहीं,
घूमता फिरे वो यहाँ , बनकर दीवाना,
पर नजर जब तेरी, पडती है शुभकरी,
भ्रमणा तब ही हटे, तूटे, फूटे, छूटे रे,
तेरी वाणी अमृत जैसी,
सुनते जो, रहते वो, आनंद में, वंदे गुरुवरम्^{4} ... १

पापी अधम भी तेरी कृपा से, जीवन परिवर्तन पाए,
फिर ना जन्म धरे वो जग में, परमातम खुद बन जाए,
तेरी बंदगी में ही, रब की भी इबादत है,
तेरी ही, सेवा में, मुक्ति है, मेरे इस, आत्म का **'हीर'** तू ,
गुरु तुझे प्रणाम... हाँ गुरु तुझे प्रणाम,
गुरु तुझे प्रणाम, वंदे गुरुवरम...२

जिन्हें गुरु गौतमस्वामी जैसे मिलेंगे उनका कल्याण आनिश्चित है परंतु जिन्हें गुरु गौतमस्वामी जैसे लगेंगे उनका कल्याण सुनिश्चित है ।

111. तुम रखना ध्यान मेरा, गुरुवरा

(तर्ज - जब कोई बात बिगड जाए)

जब कोई पाप ललचाए, जब निज आतम बिसराए,
तुम रखना ध्यान मेरा, गुरुवरा²
ना कोई है यहाँ मेरा, मिला है साथ अब तेरा,
तुम रखना ध्यान मेरा, गुरुवरा²

तू ही ब्रह्मा, तू ही विष्णु, तू ही तो है महेश्वरा,
तु ही साक्षात् परम ब्रह्मा, गुरु तुझको नमन मेरा
तु ही माता, तू ही पिता, तू ही भ्राता, तू ही त्राता,
तू ही सर्वस्व है मेरा, मेरा तुझसे अचल नाता
तुझे पहचान मैं पाउ, तेरी इच्छा को अपनाउ,
दे इतनी शक्ति मुझे, गुरुवरा... १
ना कोई है यहाँ मेरा....

शरीर का भेद परखाए, आत्मानुभूति करवाए
अनंत आनंद प्रगटाए, किया जन्म सफल मेरा
प्रभु का मार्ग दिखलाए, प्रभु के मार्ग ले जाए
प्रभु से तू ही मिलवाए, गुरु तेरी नहीं उपमा
प्रभु का दर्श तुझमें दिखे, प्रभु का स्पर्श तुझसे मिले
प्रभु जैसा **'हीर'** तेरा, गुरुवरा... २
जब कोई पाप ललचाए...

'सद्गुरु' वह नहीं है जो आपको उनका भक्त बनवाता है,
सद्गुरु तो वह है जो आपको आपकी
५ इंद्रियों की गुलामी से मुक्त करवाता है।

112. गुरुभक्ति गीत

(तर्ज - तू छुपी है कहाँ ?)

गुरु तेरे बिना, मेरा जीवन सुना
एक तेरे सिवा, मेरा कौन यहाँ ?
तेरी इच्छा जहाँ, मेरा मन हो वहाँ,
आए दिन वो जीवन में करुं प्रार्थना....

मेरा तन-मन अमावस्या की रात सा,
तेरे आने से गुरुवर प्रभात हुआ,
तेरी रश्मि के स्पर्श से जीवन खीला[2]
तेरी आशिष से मुझको मार्ग मिला,
एक तेरे सिवा, मेरा कौन यहाँ ?

मैं भटक ही रहा था जगत में यहाँ,
पाने दौडा था सुख, पाया दुःख ही वहाँ,
तुने बतला दिया मुझको सुख है कहाँ[2]
और प्रगटाया '**हीर**' मेरा सर्वथा...
एक तेरे सिवा, मेरा कौन यहाँ ?

८०% अशुभ इच्छाओं को दबाए वह 'सज्जन'
९०% अशुभ इच्छाओं को दबाए वह 'श्रावक'
९५% अशुभ इच्छाओं को दबाए वह 'साधु'
१००% अशुभ इच्छाओं को दबाए वह 'सिद्ध' बन जाता है |

113. आचार्य पद गुण गरिमा

(तर्ज - है प्रीत जहाँ की रीत सदा)

जिनशासनना जे धोरी छे, छत्रीश छत्रीशीधारी छे,
वंदो एवा सूरिवरने जे, भविजनने नित उपकारी छे,
जिनशासनना जे धोरी छे...

आलाप - जय हो... सूरिराज.. जय हो.. सूरिराज...
जय हो... सुरिराज... जय-जय हो....

जे तीर्थंकर विरहे सदा, तीर्थंकर सम महाराया छे,
जिनशासन जेनुं राज्य अने देवो पण सेवे पाया छे,
ने पट्टराणी जिनआज्ञानी, वातो जेने अति प्यारी छे,
वंदो एवा सूरिवरने जे... १

जे चतुर्विध श्री संघरूप, पुत्रोने नित संभाळे छे,
ने परिवार सम भव्यजीवोना दोषोने जे बाळे छे,
अरिहंत पिता छे जेमना, करुणा माता हितकारी छे,
वंदो एवा सुरिवरने जे... २

जस उपाध्याय सेनानायक, सेना सज्जननी भारी छे,
ने धर्मनाश करवा तत्पर, दुर्जनने जे भयकारी छे,
निज '**हीर**' कदी ना गोपे जे, शासननी जेने खुमारी छे,
वंदो एवा सूरिवरने जे... ३

जो गुरु को मानते है उनका कल्याण अनिश्चित है,
लेकिन जो गुरु का मानते है उनका कल्याण सुनिश्चित है।

114. आचार्य पद स्तवना

(तर्ज - वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है)

वर्धमाननी वातोने जे विश्वे फैलावे,
धन्य हो आचार्योने जे जिनशासन शोभावे...
शांति-समाधि-सद्गती केरा द्वार खोलावे[2],
धन्य हो आचार्योने जे जिनशासन शोभावे[2]...
आलाप - सूरिराज... सूरिराज... जय हो... सूरिराज[2] ....

पंचाचार प्रभावक, भवभीरु सदा,
भीम कांत गुण सह, अतिशय निस्पृहता,
बाह्य-अभ्यंतर गुणवैभव समृद्धता,
प्रभुकृपा ने गुरुकृपामां झीलता,
भवदरीए जे पार उतरवा नाव सम थावे[2] ...
धन्य हो आचार्योने जे... १

परमेष्ठिमां केन्द्र पदे जे राजता,
प्रवचनथी पामरने परम बनावता,
प्रायश्चित दई पापोने प्रक्षालता,
गुरुकुलमां वसवा सौने आकर्षता,
शरणागत जस 'शिष्य' नहीं, पण 'सिद्ध' पण थावे[2],
धन्य हो आचार्योने जे... २

स्वपर शास्त्र विशारद, वादजयी सदा,
देश-काळ भावज्ञ, परम गीतार्थता,
सर्वजीव हित काज सदा संतप्तता,
जिनशासन पुनरुद्धारे प्रतिबद्धता,
महावीरनुं '**हीर**' जे सौ जगमां प्रसरावे[2] ...
धन्य हो आचार्योने जे... ३

115. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरि गुणगान -1

(हरिगीत छंद)

कलिकाल सर्वज्ञ बिरुद को धारते जो सूरिवरा,
परमार्हत श्री कुमारपाल भूपाल के जो गुरुवरा,
दशअष्ट देशों में कराई थी अमारी घोषणा,
ऐसे गुरु श्री हेमचंद्रसूरीश को हो वंदना...

(तर्ज - दुनिया बनानेवाले)

हेमचंद्रसूरीश्वर देना हमें ये वरदान
हम भी... बन जाए आप समान[2] ...

संवत ग्यारहसौ पैतालिस था रे,
धंधुका नगरी में जन्म को धारे
माता पाहिनी की कूख उजाले, पिता चाचंग के आंखो के तारे,
दीक्षा के पूर्व जमाया, गुरु के आसन पर स्थान,
हम भी... बन जाए आप समान[2] ...१

उदयन मंत्री ने किया, दीक्षा महोत्सव,
देवचंद्रसूरि थे, आपके गुरुवर,
नौ वर्ष उम्र में दीक्षा स्वीकारी,
सोमचंद्रमुनि था नाम जयकारी,
सरस्वतीने दिया, विद्या का तुम्हे वरदान,
हम भी... बन जाए आप समान[2]...२

नागपुर नगर में धनद थे शेठ, कर्म संयोग से ना रही पैठ,
गोचरी लेने आप पधारे, शेठ को देख के आयी दया रे,
हस्त स्पर्श से किया, कोयला स्वर्ण समान
हम भी... बन जाए आप समान[2] ...३

116. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरि गुणगान-2

(तर्ज – कबीरा)

सरस्वती मात कृपा करो, इस सेवक पर आज,
हेमचंद्रसूरि गुण में गाउ, जिनशासन शिरताज,
रे जो थे, जिनशासन शिरताज...१

इक्कीस वर्ष की उम्र में जिसने, सूरि पद पाया सार,
सोमचंद्र से हेमचंद्रसूरि, नाम पडा श्रीकार,
रे जिनका, नाम पडा श्रीकार...२

गुर्जर देशे सिद्धराज जयसिंह, का चलता था राज,
वो भी भक्त बने थे जिनके, करते सारे काज
रे जिनके, करते सारे काज...३

सिद्धराज की शुभ इच्छा थी, बने व्याकरण महान,
सिद्धहेम व्याकरण बनाया, जिनशासन की शान,
बना जो, जिनशासन की शान...४

देवी सरस्वतीने भी गाया, जिसका प्रशस्ति गान,
जल परीक्षण में भी ना डूबा, ऐसा था जो महान,
वो ग्रंथ, ऐसा था जो महान्...५

हेमचंद्रसूरि देवलोक से, फिर से करो ऐलान,
जीवदयामय विश्व हो जाए, **'हीर'** करे आह्वान
यहीं बस, **'हीर'** करे आह्वान...६

जिसके सिर पर देव-गुरु रूपी २ मात्राए हैं उसका नाम है "जैन"।
जिसके सिर पर कुछ भी नहीं है उसका नाम है "जन"
जन अर्थात "सामान्य जन"

117. श्री प्रेमसूरीश्वरजी यशोगाथा

(तर्ज-प्रेम-भुवनभानु तरुवर पर पुष्पो महेके डाळे-डाळे)

महाविदेहथी भूला पडेला, पंचम काळमां जन्म धरेला,
प्रेमसूरिनी गाउ गाथा, सुणता पामे सौ कोई शाता,
शिष्यो जेना करता वातो, सूरी नही भगवान छे आ तो,
प्रेमसूरिना चरणे नमिने, वंदन करुं हुं भाव धरीने...

ओगणीससो चालीसना वरसे, फागण मासना चौदस दिवसे,
नांदिया गामे जन्म धर्यो ते, देवो पण तने जोवा तरसे,
पिंडवाडाना वतनी कहाया, भगवानभाई कंकुबा जाया,
प्रेमचंद जस नाम पड्युं तस, गुणला गाता मन हरखाया...
पूर्व जन्मनी साधना, करवा पूरण काज,
जाणे जन्म धर्यो इहा, बनवाने वितराग.... १

व्यारा गामे शिक्षा लीधी, त्यांथी भागी दीक्षा लीधी,
पालीतणा जस दीक्षा भूमि, दानसूरिनी सेवा कीधी,
पंचाचारनुं पालन करता, मुहपत्तिने कदी न विसरता,
प्रवचनमाता आठेय पाळे, मौन छतां शासन अजवाळे... २

ज्ञान-ध्यानमां निशदिन रमता, निर्दोष द्रव्योने ज वापरता,
संयोजनाथी दूर ज रहेता, बे द्रव्योथी एकासणुं करता,
मिठाई-फळ आदिना त्यागी, परम तत्त्वनी लगनी लागी,
कर्मग्रंथोना जिर्णोद्धारक, प्रेमसूरीश्वर छे अम तारक....
बाह्य-अभ्यंतर गुण वैभव जेमां दिसे अविराम,
भीम गुण धरीयो स्व माटे, कांत गुणे अभिराम.... ३

स्त्री-साध्वी सन्मुख न जोता, छापा चोपनीया ना अडकता,
वस्त्रो जेना बने सुगंधी, दोषोनी करे नाकाबंदी
निद्रामां उपयोग न चुके, प्रमार्जन करी पडखुं मुके,
रामचंद्र ने भुवनभानु थकी, दीक्षाधर्मनो शंख जे फूंके... ४

महाब्रह्मचारी गुरुवर तुं, भेदज्ञान नित हैये रमतुं,
देहे रोग छतां हैयाथी, वीर-वीरनुं नाम निसरतुं,
वृद्ध छे वय ए याद न रहेतुं, उभा-उभा प्रतिक्रमण करे तुं,
प्रेमसूरीश्वर गुणना आकर, मनडुं मारुं तुज गुण गातुं
सहन करीने हसता रही वात्सल्य देता अपार
नाम मंत्र बन्युं जेहनुं, महिमा अपरंपार.... ५

वैशाख वद अग्यारस दिवसे, बे हजार चोवीसना वरसे,
खंभात नगरे स्वर्ग सिधाया, गुरुना विरहथी सौ अकळाया,
जे कोई एहना गुणला गाशे, तेना सघळा दुःखो नाशे
प्रगटे तेनुं आतम **'हीर'**, बनशे ते आ जगमां वीर... ६

श्री प्रेमसूरि स्तुति
सुविशुद्ध ब्रह्मचर्यधारी पापभीरु गुणधरा,
कलिकाल में सबसे बडे समुदाय के जो गणधरा,
श्री संघ की चिंता सदा करते रहे जो शुभमना
ऐसे श्री प्रेमसूरी गुरु को भाव से करुं वंदना...

जिस प्रकार भोजन केवल खाने से नहीं
बल्कि पचाने से शक्ति मिलती है,
उसी प्रकार धर्म के सिद्धांतों को मात्र जानने से नहीं बल्कि
अपनाने से शांति मिलती है।

118. सूरिप्रेम भक्ति गीत

(तर्ज - आ पारस मारा पोताना)

आ प्रेमसूरि मारा पोताना,
मारा पोताना नहीं बीजाना... आ प्रेमसूरि....१

तमे कंकुबाईना लाल भले,
तमे भगवानदासना बाळ भले, पण प्रेमसूरि... २

तमे पिंडवाडा वसनारा भले,
तमे श्रमण संघने प्यारा भले, पण प्रेमसूरि... ३

तमे संघ ऐक्य हितचिंतक भले
तमे कर्मशास्त्र संशोधक भले, पण प्रेमसूरि... ४

तमे ब्रह्मचर्य सम्राट भले,
तमे आगमनो करता पाठ भले, पण प्रेमसूरि... ५

तारा देहमां हो सुगंध भले,
तारो प्रभु साथे अनुबंध भले, पण प्रेमसूरि... ६

तमे महाविदेहना संत भले,
तमे पाम्या भवनो अंत भले पण प्रेमसूरि...७

तने पूजे जगतमां योगी भले
तारुं नाममंत्र उपयोगी भले, पण प्रेमसूरि...८

तारा मुखे सदा वीर-वीर भले,
तारा गुण-रश्मिमां '**हीर**' भले, पण प्रेमसूरि...९

119. भुवनभानुसूरि गुणगान

(तर्ज - सोलह बरस की बाली उमर)

भुवनभानुसूरि तू है गुणों की खान,
गुरुराज तेरे कैसे करुं मैं गुणगान ?

भोगों की लालसाने, भूलाया जब धर्म,
युवाधन भटक रहा था, ना थी कोई शरम,
ऐसी युवा पीढी को, शिविर के मार्ग से,
भोग से, योग में, लाने वाले महान्... गुरुराज तेरे... १

धर्म के नाम पर ही, टकराया जब अहम्,
दुनिया जब मानती थी, धर्म है बस वहम,
ऐसे कलियुग में भी, निज तर्क शक्ति से,
धर्म का, चौतरफ, तूने लाया तूफान... गुरुराज तेरे... २

त्रिभुवन में भुवनभानु, नाम गुंजे सदा,
तेरा जो ध्यान धरता, पाए वो संपदा,
तेरे गुणो की गरिमा, पाऊं में सर्वदा,
गुणरश्मि, **'हीर'** का भी, बस यहीं, अरमान.. गुरुराज तेरे... ३

श्री भुवनभानुसूरि स्तुति

जो वर्धमान तपोनिधि के नाम से विख्यात है,
युवाशिबिर प्रारंभ कर जो जगत में प्रख्यात है,
जो तर्कशास्त्र निपूणमति से रहस्य खोले धर्म के
चरणो में नित वंदन करुं मैं सूरि भुवनभानु के...

120. जितेन्द्रसूरि गुणगान

(तर्ज - सोलह बरस की बाली उमर)

जितेन्द्र सूरिवर, गुणरत्नोनी खाण,
गुरुराज तारा, केम करुं हुं गुणगान ?

मूर्तिनी वातमां ज्यां, टकरायो छे अहम्,
प्रभुना मार्गनो ज्यां, विसरायो छे धरम,
आवा मेवाडमां पण, धूणी धखावीने[2],
धर्मना, मर्मने, आपनारा महान्...१
गुरुराज तारा....

लांबा विहार जेमां, कंकड पर चालवुं,
प्रभुनी आज्ञापूर्वक, जीवनमां पाळवुं,
भाषा मधुर अने, शास्त्रना पाठथी[2],
मूर्तिनी, मान्यता, स्थापनारा महान्...२
गुरुराज तारा....

अट्ठम चारसो ने, देरासर चारसो,
केवो गुरु तमारो, भव्य छे वारसो,
आवा गुरु भवोभव, मळजो ए भावना[2],
'हीर'ने, आपजो, एटलुं, वरदान...३
गुरुराज तारा....

"दूसरों के द्वारा आपके साथ किया गया जो वर्तन और व्यवहार आपको पसंद नहीं आता वैसा वर्तन और व्यवहार आपको भी दूसरों के साथ नहीं करना चाहिये," यहीं समस्त धर्मों का सार है ।

121.सूरिजितेन्द्र वंदनावली

(हरिगीत छंद)

मेवाड के भगवान सम, जो विश्व में विख्यात है,
सूरि प्रेम-भुवनभानु के, समुदाय की जो शान हैं,
जयघोष जिनमत का करे, मानो करे सिंहगर्जना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना... १

मनुबाई-हीराचंद का, कुल जन्म से पावन करे,
निज बालवय को धर्म के, संस्कार से वासित करे,
मानो न करते पूर्ण जो, निज पूर्व जनम की साधना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...२

वैराग्य का उपदेश सुन, जो विरति का निश्चय करे,
परिवार के अति आग्रहे, जो लग्नग्रंथि को धरे,
निज पुत्र को तज पारणे, ले युगल दीक्षा धारणा,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...३

सेवा, समर्पण, त्याग आदि गुण से निज आतम भरे,
स्वाध्याय करने के लिये, जो चारसो तेले करे,
इच्छा गुरु की जानकर, मेवाड चले हर्षितमना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...४

कंटक भरे पथ पर करे, जो सतत उग्र विहारणा,
पानी भी ना मिलता कहीं, तो भी धरे समभावना,
अपमान का विषघूंट पी, अमृत समी दिये देशना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना....५

मिथ्यात्व के अंधेर में, जो सूर्य के सम अवतरे,
थानक व तेरापंथी को, जिनमार्ग में स्थापन करे,
जिनचैत्य व जिनभक्तों की, जो करते जीर्णोद्धारणा,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...६

मेवाड देशोद्धारका, जो राष्ट्रसंत बिरुदधरा,
शतसप्त शिष्य व द्विशताधिक साध्वी के गणधरा,
गुर्जर, मरुधर, मालवा, मेवाड में जस विचरणा,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना... ७

" समाधान में ही स्वर्ग है, इहलोक की है तुच्छता,
मेरे नहीं, भगवान के बनो भक्त ", जिसकी सूत्रता,
स्वाध्यायरसी, निज नाम की करते कभी ना कामना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...८

जो दान संयम का करे, नित शील निज तन पर धरे,
तप त्याग से काया कसे, जो नित चढत भावो भरे,
साक्षात् धर्म की प्रतिकृति, जस दर्शने शमे वासना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...९

व्याधि बढे तन में भले, मन से समाधि ना चले,
नवकार सुनते सूर्यनगरे, मुक्ति के मारग चले,
गुणरश्मि '**हीर**' सदा करे, तुझ पदकमल की सेवना,
जितेन्द्रसूरि के चरण में, हो भाव से मम वंदना...१०

जैसे मृत्यु के डर बिना डॉक्टर
हमें अच्छे नहीं लगते,
वैसे अनंत जन्म-मरण के डर बिना
गुरु भी हमें अच्छें नहीं लगते ।

122. दीक्षा दानेश्वरी प्यारा

(तर्ज – नई धुन)

वीरप्रभुना संयमधर्मनो संदेशो देनारा,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा , गुणरत्नसूरिजी अमारा
प्रेमसूरिना लाडकवाया... हो...(२), जिनशासन रखवाला,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा...

पादरलीमां जनम जाणे मरुधरमां सुरतरु फळीया,
हीराचंद-मनुबाईनी कुखे रत्न समा जे अवतरीया,
बाळपणाथी धर्मतणा संस्कारोथी वासित बन्या,
मुनिजनोना संपर्कोथी युवापणे वैरागी बन्या,
मोहमयी मुंबई नगरीमां, हो. (२) शिक्षा-दीक्षा पाम्या,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा..१

शुद्ध संयमी प्रेमसूरिना हाथथकी दीक्षा लीधी,
प्रेमसूरिनी साथे रहीने चौद वर्ष सेवा कीधी,
त्याग-तप-स्वाध्यायनी अविरत धूणी धखावी अंतरमां
निर्दोष गोचरी, शुद्ध पालणी, जिन आणा धरे रगरगमां,
वडिल बंधु जितेन्द्रसूरिना, हो... (२) शिष्य बन्या जे न्यारा,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा...२

खवगसेढी, उपशमना, जैन रामायण ग्रंथो सर्जे,
जीरावला, वरमाण ने भेरुतारक तीर्थो आदर्शे,
शिबिर-संघ ने उपधानोथी युवक जागृति लावे जे,
घर-घरमां वैराग्य वाणीथी दीक्षानी ज्योत जगावे जे,
सेंकडो वर्षनां इतिहासोनुं, हो... (२) नवसर्जन करनारा,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा...३

जिनशासनना तेज सितारा, विश्वप्रकाश फेलावे जे,
पुण्यनी रेखा प्रसरे जेनी, गुणरत्नोनी खाण जे,
प्रेम-भानु-जयघोष-जितेन्द्रना अंतरमां जे वसनारा,
रश्मि जेनी प्रसरी रही छे, एवा '**हीर**'ने धरनारा,
भवसागरथी तारो अमने, हो...(२) गुरुवर तारणहारा,
दीक्षा दानेश्वरी प्यारा...४

123.पंन्यास श्री चंद्रशेखर विजयजी विरह गीत

(तर्ज : ए मेरे प्यारे वतन)

चंद्रशेखर नामनो , जिनशासननो चांदलो , क्यो गयो छे आज ?
रडतो मुकी संघने, मार्ग दाखी विश्वने, क्यां गया छो आप ?

कांतिलाल प्रतापशीना , वंशने रोशन कर्युं ,
प्रेमसूरिनी परंपरानुं, ते घणुं पोषण कर्युं ,
रात-दि तमने स्मरुं, तमने जोवा हुं झूरुं,
क्यां गया छो आप ?....१

चंद्र सम हो मुख भले , पण सिंह गर्जना ताहरी ,
रखडता युवानोमां ते , दाझ शासननी भरी ,
वर्धमान छे धाम तव पण , मनथकी छो तपोवनी ,
क्यां गया छो आप ?....२

नाम नहीं पण काम करीने , संघना हैये वस्या ,
सत्त्व अद्‌भुत तव निहाळी , दुर्जनो पाछा खस्या ,
गुण तमारा जो मळे , '**हीर**' माहरुं झळहळे ,
क्यां गया छो आप ?....३

124. श्री रश्मिरत्नसूरि यशोगाथा

(तर्ज - नवी धुन)

रश्मिरत्नसूरि गुरुवर प्यारा, जिनशासनना तेज सितारा
सूरि गुणरत्नना शिष्य जे न्यारा, भक्तोना छे तारणहारा,
आजीवन जे गुरुकुलवासी, गुरुसेवाना निशदिन प्यासी,
एवा गुरुने वंदन करता, पामे सौ कोई पुण्यनी राशी...

अंतरा

बाळपणामां दीक्षा लीधी, ग्रहण-आसेवन शिक्षा लीधी,
मोक्षरत्न मुनि पासे भणीने, घणा साधुने विद्या दीधी....
सैकडो ग्रंथोनुं वांचन कीधुं, घणा ग्रंथोनुं सर्जन कीधुं,
ग्लान-वृद्धनी सेवा करीने, वैयावच्चीनुं बीरुद लीधुं,
जेना हैये गुरु वस्या, करे प्रभु तेनुं जतन,
गुरुना हैये जे वस्या, एवा छे रश्मिरतन... १

बे अक्षरथी ग्रंथ बनावे, विद्वानोना माथा डोलावे,
न्यायनी शैली सरळ बनावी, मंदबुद्धिने पण हरखावे,
निर्दोष गोचरी नित एकासणी, शास्त्र आधारे शुद्ध पालणी,
शिबिर-संघ अने उपधानोनी, बनती निरंतर जेनी छावणी... २

आत्मशुद्धिनी करता याचना, सौने तारुं जेनी भावना,
अजात शत्रु बनीने जेओ, करता जिनशासन प्रभावना....
निःस्पृहताना स्वामी छतांए, सामेथी घणा शिष्यो थाए,
निज माटे ना राखे अपेक्षा, शिष्यो माटे जे माँ बनी जाए...
गाम गामना प्रश्नोनुं, समाधान करे जेह...
अंतरथी न्यारा रही, धरे बस प्रभु पर नेह... ३

प्रवचनकारक, स्वाध्यायप्रेमी, त्यागी, तपस्वीओनी सेना,
शोभावे छे जिनशासनने, पचासथी वधु शिष्यो जेना,
प्रवचनथी भक्तोने तारे, जिनआणाने नित संभारे,
चतुर शताधिक साध्वी गणनायकना पदने पण अजवाळे ४

महाविदेहना धाम आधारे, श्रमणसंघनी सेवा करता,
जैनिजमना पाठ्यक्रमे जे, श्रावक गणने ज्ञानथी भरता,
सरळ स्वभावी, अंतर्मुखता, पापभीरुता गुणथी गाजे,
मीठुं वर्तन, मीठी वाणी, प्रसन्नता नित मुख पर छाजे...
आ ज गुरु भवोभव मळो, मांगु प्रभुथी एह,
मोक्ष ना थाए त्यां सुधी, वधतो रहे तस स्नेह...... ५

तपागच्छना ईतिहासमां, स्वर्ण पृष्ठ अंकित करावे,
मारवाड अने गुजरातमां, सूरि जितेन्द्रनी रश्मि फैलावे...
प्रेम-भुवनभानु समुदाये, जेनो सदा जयघोष ज थाय,
सूरि राजेन्द्रना आशिष पामी, '**हीर**' निरंतर गुरु गुण गाए।

रश्मिरत्नसूरि गुरुवर प्यारा, जिनशासनना तेज सितारा

सूरि गुणरत्नना शिष्य जे न्यारा, होजो तमारो जय जय कारा
होजो तमारो जय जयकारा, होजो तमारो जय जयकारा...

गुरु कृपा किसे मिलती है ?

जिसके मन में गुरुदेव के प्रति जितना ज्यादा बहुमान हो तथा जिसके जीवन में गुरुदेव के प्रति जितना ज्यादा समर्पण हो उसके उपर ही गुरुकृपा उतनी ही ज्यादा उतरती है ।

दीक्षा संबंधित गीत विभाग

125. संयम उपकरण वंदना - 1

(तर्ज - है प्रीत जहाँ की रीत सदा)

उपकार करे जो आतम पर, उपकरण कहे जिनवर उसको,
आधार स्तंभ ये संयम का, वंदन हो बार-बार इसको,
उपकार करे जो आतम पर... हो... हो.

(कपड़ा)

ये है कपडा जिस पर कभी, दोषों का ना कोई दाग लगे...
जो धारण करता है उसके, पापों को हमेशा आग लगे....
मिलते है ग्रैवेयक सुख उसे[2], जो द्रव्य से भी पहने इसको,
आधार स्तंभ ये संयम का...१

(चोलपट्टा)

ये चोलपट्ट है जो गुरु के, तन से कभी ना दूर रहे,
जो धारे है उसको ही हंमेशा, ब्रह्मचारी दुनिया भी कहे,
निष्काम बनाएँ साधक को[2], हर पाप को कह दे-'अब खिसको'
आधार स्तंभ ये संयम का...२

(कांबली)

ये कांबली है जो सूक्ष्म जीवों, को रक्षण देती है सदा,
बनकर ये ढाल मिटाती है, ठंडी-गर्मी की आपदा,
हर प्रसंग पर गुरुदेव को, वहोराते है हरदम जिसको,
आधार स्तंभ ये संयम का...३

(पात्रे)

ये पात्रे है जिसके कारण, संगम भी शालीभद्र बने,
अइमुत्ता भी जिसके कारण, केवलज्ञानी तुरंत बने,
दर्शन भी इसके मिलते है', जो भाग्यशाली होता उसको,
आधार स्तंभ ये संयम का...४

(आसन)

ये है आसन जो जिनशासन के श्रमणों का आधार बने,
जो रखे इसे वो शिवपुर के सिंहासन का शणगार बने,
मिलता है प्रभु का प्यार उसे, जो भी उपयोग करे इसको,
आधार स्तंभ ये संयम का...५

ये तरपणी-चेतना गोचरी में, होता है सहायक गुरुवर को,
जो वहोराकर वापरता है, उसका यश पहुंचे अंबर को,
निज आत्म गुणों का '**हीर**' बढे', ना कर्म कभी पीडे उसको,
आधार स्तंभ ये संयम का...६

126. दीक्षा मन को सुहाइ

(तर्ज – टहुंका करतो जाय मोरलो)

दीक्षा मन को सुहाई, वीर की दीक्षा मन को सुहाई[2]...हो...

दुर्लभ मानव जन्म को जिसने सार्थकता दिलवाई,
मोह नींद में सोए ऐसे[2]. हो... आतम को जगवाई,
वीर की[3]... दीक्षा मन को... १

प्रभु मिलन की प्यास बुझे ऐसा जीवन दिलवाई,
गुरुकुलवास में रहने का[2]. हो... अब अधिकार है पाई,
वीर की[3]... दीक्षा मन को...२

काल अनादि भवभ्रमणा के भय से मुक्ति दिलाई,
शाश्वत सुख को पाने का... हो.... मारग जिसने खुलवाई,
वीर की[3]... दीक्षा मन को...३

निश्चिंत-निष्पाप जीवन से चित्त प्रसन्नता पाई,
कर्म युद्ध में विजय श्री वरने[2]... हो.... '**हीर**' को प्रगटाई,
वीर की[3]... दीक्षा मन को...४

दीक्षा लेने के बाद जो करना है वह पहले ही शुरू कर देता है उसे बहुत बार बिना दीक्षा के भी केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है तथा दीक्षा मिलेगी बाद में ही साधना शुरु करेंगे ऐसा जो सोचता है उसे आगे जाकर मानव जन्म भी प्राप्त करना दुर्लभ हो जाता है । सावधान !

127. संयम उपकरण वंदना - 2

(तर्ज - दिल दिया है / गान तमारुं गाता-गाता)

हर कदम पर करते हैं जो, पाप की निकंदना,
वीर के इन उपकरण को, भाव से करुं वंदना...

(दंडा)

दंड देने कर्म को ये, दंडे को धारण करे,
मन वच काया दंड को ये, तो सदा ही परिहरे[2]...
वीर के इन...१

(संथारा)

साधना के श्रम को हरने, मुनिवर संथारा करे,
देह को विश्राम दे पर, पीड आतम की हरे[2]
वीर के इन...२

(दंडासन)

रात्रि में चलते समय, जिसको सदा धारण करे,
है ये दंडासन जो हरदम, जीव का रक्षण करे[2]
वीर के इन...३

(ज्ञान पोथी)

प्राण है स्वाध्याय मुनि का, शास्त्र ये वर्णन करें,
आत्म के अज्ञान को ये, ज्ञान की पोथी हरे[2]
वीर के इन...४

(सुपडी)

है ये सुपडी जो सदा शुद्धि उपाश्रय की करे,
इसके नित उपयोग से ये, बाह्य-आंतर रज हरे[2]
वीर के इन...५

(नवकारवाली)

चक्र जिम चक्री धरे तिम, नवकारवाली धारते,
कर्मचक्र का भेद करके, **'हीर'** को विस्तारते,
वीर के इन...६

128. कर रहे हम विदा

(तर्ज - कर चले हम फिदा)

कर रहे हम विदा ये चमन साथियों,
अब प्रभु के हवाले जीवन साथियों...

भोगसुख तो सुलभ है पशु को यहाँ,
देवदुर्लभ ये योग मिलेगा कहाँ ?
जन्म लेकर तो मरता है सारा जहाँ,
मौत को मौत देने की तक फिर कहाँ ?
अब तो करना हैं कर्म दहन साथीयो,
अब प्रभु के हवाले...१

खूब भटके बाहर फिर भी सुख ना मिला,
सुख के नाम पर पाया दुःख सिलसिला,
जब देखा तो अंदर था सुख का किला,
गया अंदर उसे फिर से दुःख ना मिला,
हमे बनना है आनंदघन साथियों,
अब प्रभु के हवाले...२

आज तक हमने पुनरावर्तन ही किया,
परिवर्तन की करनी है अब प्रक्रिया,
जन्म लेकर अजन्मा जो बनने जिया,
जन्म उसने ही अपना सफल कर लिया,
आज प्रगटा दो निज **'हीर'** धन साथियों,
अब प्रभु के हवाले...३

हमें इस संसार में जिस सुख का अनुभव हो रहा है वह मोक्ष सुख का ही अंश है । पर वह क्षणिक है । उसे अगर परमानेंट बनाना हो तो उसकी जो प्रोसेस है उसका नाम है

129. मुमुक्षु विदाइ गीत
(स्वजनों के अंतर उद्गार)

(तर्ज – ओ मां ... ओ मां ...)

मैं सुख का रागी हूँ , तू सुख का त्यागी है, तू वैरागी है,
तू कहाँ ? मैं कहाँ ? तू कहाँ ? मैं कहाँ ?
प्रभु की इच्छा का, जीवन मिल जाने से, तू ही सौभागी है
तू कहाँ ?... मैं कहाँ ?[2] ....

साथ में रहते, साथ में फिरते, तेरे साथ में खूब झगडते,
आज ये तेरा त्याग देख के, अंतर से हम रोते,
मैं तो भोगी हूँ , तू तो योगी है, तू निष्कामी है,
तू कहाँ ? मैं कहाँ ?[2]... १

हम सबको तू प्राणों से प्यारा, पर तूने तो प्रभु को स्वीकारा,
तेरे बिना होगा हम सबके जीवन में अंधियारा,
मेरे जीवन की, डूबती नैया का, तू ही सुकानी है,
तू कहाँ ? मैं कहाँ ?[2]... २

भूलें की है हमने हमेशा, तेरा प्यार है मां के जैसा,
रोती रहेगी आंख हमारी **'हीर'** है तेरा ऐसा,
मेरी यादों में, मेरे सपनों में, तेरी कहानी है,
तू कहाँ ? मैं कहाँ ?[2]... ३

संसार में दुःख बहुत है इसलिए संसार नहीं छोडना है,
लेकिन संसार में दूसरों को दुःख पहुंचाए बिना हम जी नहीं सकते ,
इसलिए संसार छोड़ना है।

130. महाभिनिष्क्रमण

(तर्ज - महाभारत टाईटल गीत)

श्लोक : प्रव्रज्या गृह्यते धन्यैः, धन्यैश्च परिपाल्यते।
प्रव्रज्या कार्यते धन्यैः, धन्यैश्च अनुमोद्यते॥

महाभिनिष्क्रमण.. महाभिनिष्क्रमण... महाभिनिष्क्रमण..
आ... आ ... आ ... हो ... हो... हो ....
अथ श्री महात्याग महोत्सव^2 महात्याग महोत्सव^2
उत्सव है वैराग्य का, संसार के परित्याग का^{2}
प्रभु से अनुसंधान का, और परमपद प्रस्थान का^{2}
युद्ध उद्घोषित हुआ, निज दोषों से ही सर्वथा
युद्ध उद्घोषित हुआ...

श्लोक : जीवमात्र की है रक्षा, आत्महित की है शिक्षा
निज सत्त्व की है परीक्षा, शाश्वत सुख की प्रतीक्षा...
ब्रह्मचर्य है भूषण, जो ना करे प्रदुषण,
सज्जन का करते सर्जन, ऐसा है श्रमण जीवन...

श्रेष्ठ सुख भी, धुल समझ के, छोडते जो, श्रमण है वो...
श्रमण है वो... श्रमण है वो... श्रमण है वो...

आ ... हो ...
महावीर प्रभु की वाणी... जैनागमों से जानी...
जैनशासन की आज्ञा... दीक्षार्थियों ने मानी....
धनकुबेरोने ली है... ये है वो जैन दीक्षा...
दीक्षार्थी भी लेंगे... दुर्लभ ये जैन दीक्षा...
महाभिनिष्क्रमण.. महाभिनिष्क्रमण... महाभिनिष्क्रमण...

131.दीक्षा महोत्सव के महत्त्वपूर्ण गीत

(परिवार द्वारा रजोहरण वहोराते समय...)

(तर्ज - अजवाळा देखाडो, अंतर द्वार उघाडो)

रजोहरण को वंदन, रजोहरण को वंदन,
इसको... वंदन पाप निकंदन² ...
भव के दाह को शांत करे ये, मानो शीतल चंदन,
देव भी झंखे जिसको हरदम², तोडे मोह के बंधन,
इसको... वंदन पाप निकंदन...

(रजोहरण प्राप्ति प्रसंगे)

आज मनोरथ मारो फळीयो, संयम मुजने मळीयो रे,
आनंद अंगे अंग उछळीयो, भवभ्रमणा भय टळीयो रे... १

दुर्लभ मानव जनम सफळीयो, गुरुवरशुं चित्त भळीयो रे,
मोहराजने पण में छळीयो, आज थयो हुं बळीयो रे... २

शिवपुरने मारग हुं वळीयो, जब जिनवर सांभळीयो रे,
भवमां सुखनो भ्रम ओगळीयो, आतम **'हीर'** में कळीयो रे... ३

(लोचविधि प्रसंग...)

(तर्ज - बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम)

गुरुवर मेरा लोच करो², केश के साथ में कर्म हरो² गुरुवर मेरा...
बहुत सहा है नरक-निगोदे, आज कराओ, मुक्ति के सौदे,
कडवे कषायों की², पीड हरो... गुरुवर मेरा...

(नामकरण विधिप्रसंग...)

(तर्ज - चांद-सितारे-फूल और खुशबु)

नाम तुम्हारा जग से न्यारा, आज पडेगा मनोहारा,
नाम को रोशन करना तुम यह, संघ दे आशीष सारा,
वंदन... आपको वंदन... हमारे वंदन... सबके वंदन...

नाम तुम्हारा जिनशासन के गगन में हरदम चमकेगा,
इंद्र भी तुमको वंदन करके सिंहासन पर बैठेगा,
नाम के साथ में जीवन का भी[2] परिवर्तन होगा सारा...
नाम को रोशन करना तुम यह...

132. आओ ऐसा संयम जीवन

(तर्ज - वर्तमान को वर्धमान की...)

संयम ही प्राणदाता, संयम ही विश्वत्राता,
संयम से ही जगत ये, पाता है सुखशाता,

संयम... संयम... संयम... संयम...
मन में जो आनंद का महासागर प्रकटाए[2]
आओ ऐसा संयम जीवन हम भी अपनाए[2]
दु:ख ही नहीं पर दु:ख के सब कारण भी छुडवाए[2],
आओ ऐसा संयम जीवन हम भी अपनाए[2]
आलाप - संयम... संयम... (२) ले लो संयम... (२)

काल अनंत में दुर्लभ मानव जन्म सदा,
उसमें आर्य देश-कुल मिलना भाग्यता,
पंचेन्द्रिय पूर्ण, शरीर निरोगीता,
निर्मल बुद्धि युक्त सुदीर्घायुष्यता,
संयम लेने से ही ये सब सार्थक बन पाए[2]...
आओ ऐसा संयम जीवन हम भी अपनाए[2] ... १

रोते है जिसको पाने सब देवता,
पर मानव ही अधिकारी जिसका सदा,
इच्छाओं का नाश करे जो सर्वथा,
देता जो शाश्वत सुखों को सर्वदा,
निज आतम के **'हीर'** को जो सत्वर विकसाए[2]
आओ ऐसा संयम जीवन हम भी अपनाए[2] ...२

133. भाव संयमी की जीवनचर्या

(तर्ज – कबीरा)

(१) गोचरी

पीडा नहीं आपे परने वळी स्वने जे संतोषे,
मधुकर परे जे गोचरी फरता, ना मळता नवि रोषे. सलुणा...
आत्मसाधना माटे ज जेओ जड आ देहने पोषे,
एवा भाव श्रमणने होजो वंदन होंशे... होशे... सलुणा...

(२) विहार

सूक्ष्म जीवोनी दया पाळवा करता उग्र विहार,
घर-घर ने गामे-गामे फरी आपे धर्मनो सार, सलुणा...
प्रभु आज्ञाथी चालीने जे पामे भवनो पार,
एवा भाव श्रमणने होजो वंदन वारंवार... सलुणा ...

(३) पडिलेहण

जीव मरे ना नानकडो पण एवी काळजी करता,
ते माटे दिवसे बे वारे पडिलेहण जे करता, सलुणा...
जीवनी साथे आत्मथकी पण जेना कर्मो खरता,
एवा भाव श्रमणने अम सौ निशदिन प्रेमे स्मरता. सलुणा...

(४) स्वाध्याय

हेय-ज्ञेय ने उपादेयनो आवे जेथी विवेक,
सम्यग् दर्शन ने चारित्रे रहे छे जेथी टेक, सलुणा...
एवुं सम्यग् ज्ञान मेळववा लीधो जेने भेख,
स्वाध्यायी ते भाव श्रमणने अहोभावे तुं पेख... सलुणा...

(५) वैयावच्च

बाळ-वृद्ध आदि दशनी नित मळे छे जेथी प्रीत,
जेना कारणे त्रीजे भवे ज मळे मुक्ति निश्चित, सलुणा...
सहु छंडीने सेवा करी जे पाळे प्रभुनी रीत,
वैयावच्ची भाव श्रमणना गाजे तुं नित-गीत... सलुणा...

(६) लोच

आत्म देहना भेद ज्ञानने करवा जे करे लोच,
वाळनी साथे राग-द्वेषनुं पण करता जे शौच, सलुणा...
'जू ने पण ना कष्ट हुं आपुं' एवी जेनी सोच,
एवा भाव श्रमणने वंदन करजे तुं दररोज.... सलुणा...

(७) प्रतिक्रमण

चोरासीमां चंक्रमण ने दुःखोनुं ज्यां अतिक्रमण,
एवा आ संसारने जाणी कर्युं जेने निष्क्रमण, सलुणा...
इच्छे छे जे रोज बस हुं करुं पापोथी प्रतिक्रमण,
एवा भाव श्रमणने वंदो कर्मे करे आक्रमण. सलुणा...

(८) प्रभु भक्ति

वैरागी बनी अहोनिश गाता मुक्तिनुं बस गान जे,
प्रभु भक्तिमां मस्त बनीने भूले देहनुं भान, सलुणा...
अष्टम अजायबी विश्वनी जाणे एवी धरता शान जे,
एवा भाव श्रमणने वंदो '**हीर**'नुं आपे दान... सलुणा...

"वैयावच्चं तहेव सज्झाओ"

यह शास्त्रवचन ऐसा संकेत देता है कि सेवा ही स्वाध्याय है ।
सेवा करने वालों को ही स्वाध्याय आत्मसात होता है, जीवन में उतरता है।

134. दीक्षार्थी का जय जयकारा

(तर्ज - जय जयकारा)

दीक्षा लेवाने चाल्या वैरागी, प्रभुने मळवाने चाल्या वैरागी,
संसार तजवाने चाल्या वैरागी,
आतम सजवाने चाल्या वैरागी,
छोडीने जाशे ए, स्वजन अने साथी,
छुटवुं छे एने जगनी मायाथी,
मोह-मायाना बंधन तोडी,
मोबाइलथी मनडुं मोडी
बनशे ए अणगारा...
जय-जयकारा, जय-जयकारा,
दीक्षार्थीनो जय-जयकारा[2]

जेणे बाळवये पण जुओ संयम केरा भाव थया,
धन्य छे तेना सत्त्व ने, धन्य छे कुळने,
जेणे पंच महाव्रतधारी, शुद्ध संयमी गुरु मळ्या,
जीवनमां सत्त्व ने शुद्धि वधी गई एणे,
चाल्या जे पंथे वीर... प्रगटावी आतम **'हीर'**,
अनुसरजो तमे, अम आशिष एवा, बनजो तमे पण
गुरुओना हैये वसनारा,
जय-जयकारा, जय-जयकारा,
दीक्षार्थीनो जय-जयकारा[2] ...

उठ जाग मुसाफिर भोर भाई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है,
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।

135. संयम अभिलाषा

(तर्ज-आज राधाने श्याम मळी जाशे तुं जो)

के मारा दुःखोनो अंत थई जाशे तुं जो
के मारा जन्मोनो अंत थई जाशे तुं जो

विरतिनो वेश मळी जाशे तुं जो.
संयमनो वेश मळी जाशे

मारा भवोभवनी प्यास मटी जाशे तुं जो
मारा आतमने हाश मळी जाशे तुं जो.

विरतिनो वेश मळी जाशे तुं जो
संयमनो वेश मळी जाशे...

आधि-व्याधि-उपाधि भरेलो, संसार सागर खारो[2]
डुबती एवी नैया मारी, गुरु छे किनारो[2]

वीरनी वाणी सुणी भानमां हुं आवी जाउं,
तजवा छे राग-द्वेष मारे,

भव केरी भ्रमणानो थाक मारो उतरी जाय
हवे मारे जावुं प्रभु द्वारे

मने वीरनो पंथ मळी जाशे तुं जो...
मारो आतम भगवंत बनी जाशे तुं जो...

विरतिनो वेश मळी जाशे तुं जो...
संयमनो वेश मळी जाशे...

के मारा दोषोनो अंत थई जाशे तुं जो...
मारुं '**हीर**' अनंत बनी जाशे तुं जो ..

विरतिनो वेश मळी जाशे तुं जो ...
संयमनो वेश मळी जाशे...

136. दीक्षा लेवी दीक्षा

(तर्ज - तेरी लाडली में)

दीक्षा लेवी दीक्षा, मारे लेवी दीक्षा,
मारे करवो छे बस एवो सफर
संसार काळो नाग, संयम लीलो बाग,
मारे मेळववुं छे मुक्तिनुं घर
मने आपो गुरुवर, मने आपो गुरुवर[2],
दीक्षा केरुं दान[2],
मने आपो गुरुवर, आपो ने[3], दीक्षा केरु दान.

मारो आतम हंसलो आ, मांगे मुक्तिनुं राज रे[2],
पामवुं छे मारे परमातम पद आज...[2]
भवोभवनी भ्रमणा केरो[2], लाग्यो मुझने थाक रे,
देवो छे मारा आतमने विश्राम,
मने आपो गुरुवर... मने आपो गुरुवर...[3]

दीक्षा केरुं
दान...१

दुःखडा नरक-निगोदना में सह्यां वारंवार रे[2]
सहेवुं छे मारे आतम काजे आज...[2],
राखी बधे पण ना फळी हजी मारी एके आश रे
लागी छे हवे शाश्वत सुखनी प्यास
तारी लाडकी हुं[3], मांगु ए वरदान
मने आपो माता दीक्षा केरुं दान,
मने आपो पिता दीक्षा केरु दान.
खम्मा घणी तने खम्मा घणी मारी लाडकडीने खम्मा घणी[2]
खम्मा घणी तने खम्मा घणी मारी लाडकडीने घणी खम्मा[2]

137. अब तो मुझे भी बनना है बस

(तर्ज - नई धुन)

प्रभु आपकी कृपा से मिला है ये जीवन
प्रभु आप ही बनाना मेरे जीवन को उपवन
नक्शे कदम पर आपके चलाना मुझे आजीवन
रहुँ सदा मैं आपका, प्रगटा दो ऐसा समर्पण....

जिसने कराई मुझसे मेरे, आतम की पहचान
अब तो मुझे भी बनना है तुम जैसा भगवान ,

शरण जो आए उनके मुख पर हर पल है मुस्कान
अब तो मुझे भी बनना है तुम जैसा भगवान

जो भी मिला वो तेरी कृपा है, तुझसे है सारा जहाँ
याद रखे तू मुझकों हरदम ,भूला मैं तुझको यहाँ
तेरे सिवा कुछ याद ना आए, **हीर** मांगे वरदान

अब तो मुझे भी....

मोक्ष प्राप्ति के सिवाय इस संसार में हम जो कुछ भी कर रहे है वह गटर में उतरकर गटर के जल से शुद्धि करने के समान है जिससे स्वप्न में भी शुद्धि होने वाली नहीं है वैसे इस संसार की सामग्रीयों से सुखी होने की आशा भी गटर के जल से शुद्धि प्राप्त करने की इच्छा रखने समान ही है ।

138. साधु बने वो महान्

(तर्ज : सोलह बरस की बाली उमर)

यौवन वय में सुख छोड दे वो महान,
इस काल में साधु बने वो महान...
यौवन का पतन कराए, ऐसा है ये समय,
विषयों का व्यसन कराए, ऐसा है ये समय,
ऐसे समय में भी सब वासनाए छोडकर
मन को, विराग में, लाने वाले महान,
इस काल में...१

मोबाईल इन्टरनेट का, छाया साम्राज्य है,
फैशन और व्यसन की ही, गुलामी आज है,
ऐसी गुलामी को भी, जो लात मारकर,
वीर के मार्ग पर, जाने वाले महान
इस काल में... २

मुक्ति के मार्ग में ही, पाया है सार को,
सब कुछ हाजिर था फिर भी, छोडा संसार को,
सिंह के सत्त्व से ये, करते हैं साधना
मन से भी, छोड देते, हैं ये सारा जहाँ,
इस काल में...३

पुत्र की आत्मा को परमात्मा बनाएं वहीं सच्ची माता
पापात् त्रायते इति पिता ... (शास्त्र वचन)
जो पापों से बचाते है वहीं है सच्चे पिता...

139. ओघा है अनमोला

(तर्ज : होठो से छू लो तुम)

ओघा है अनमोला, इसका तू जतन करना,
महेंगी है मुहपत्ती, यह रोज रटण करना.

यह वेश तुझे सौंपा, हमने इस श्रद्धा से,
उपयोग सदा करना,तुम पूरी निष्ठा से,
आधार लेकर इसका, धर्माराधन करना.
ओघा है अनमोला...१

यह वेश विरागी का, है मान बहुत जग में,
माँ-बाप झुके तुमको, पडे राजा चरणों में,
यह मान नहीं मेरा, यह अर्थघटन करना.
ओघा है अनमोला...२

यह वेश उगारता है, इसे जो चमकाता है,
बेध्यान रहे उसको, यह वेश डूबाता है,
डूबना है या तरना है ? यह मनोमंथन करना.
ओघा है अनमोला...३

जैसे समुद्र में से जो जितना जल्दी बहार निकल जाता है उसके बचने की संभावना उतनी ज्यादा, वैसे संसार रूपी समुद्र में से भी जो जितना जल्दी बहार निकलेगा उसके मोक्ष में जाने की संभावना उतनी ज्यादा ।

140. जा संयम पंथे दीक्षार्थी

(तर्ज :- बाबुल की दुआए लेती जा)

जा संयम पंथे दीक्षार्थी, तेरा पंथ सदा उजमाल बने,
जंजीर है जो इन कर्मों की, वो मुक्ति की वरमाल बने.

हर्षे-हर्षे तू वेश धरे, वह वेश बने पावनकारी,
उज्जवलता इसकी खूब बढे, इसे भाव से वंदे संसारी,
देवेन्द्र भी झंखे दर्शन को, तेरा ऐसा दिव्य दीदार बने...
जा संयम पंथे दीक्षार्थी...१

जो ज्ञान तुझे गुरुने दिया, वह उतरे तेरे अंतर में,
रग-रग में उसका स्रोत बहे, वह प्रगटे तेरे वर्तन में,
तेरे ज्ञान दीपक के तेज से यह, दुनिया भी प्रकाशमान बने
जा संयम पंथे दीक्षार्थी...२

वीतराग प्रभु के वचनों से, बने वाणी तेरी अमृतधारा,
जो मारग ढूंढे अंधारे, तेरा वचन करे वहाँ उजीआरा,
वैराग्य भरी मधूरी भाषा, तेरे संयम का शणगार बने
जा संयम पंथे दीक्षार्थी...३

जिस परिवार में तू आज चला, वह उन्नत हो तुझ नाम से,
जिते सबका तू प्रेम सदा, तुझ स्वार्थ बिना के काम से,
शासन की जग में शान बढे, तेरे ऐसे शुभ संस्कार बने,
जा संयम पंथे दीक्षार्थी...४

'भाव होंगे तब करेंगे' ऐसा कहने वाले सभी संसार में ही भटक रहे हैं ।
'भाव हो इसलिये करेंगे' ऐसा कहने वाले सारे के सारे मोक्ष में पहुंच गए हैं ।

141. साधना का पंथ

(तर्ज : साथीया पूरावो आजे)

साधना के पंथ पे आज, मुमुक्षु ये जाए राज,
आज इसको दीजिये, अंतर से मंगल आशीर्वाद,
जल्दी-जल्दी पाना बहना मुक्ति मंजिल...

(अंतरा)

जहाँ देखो वहा लोग भी आज, सुख के साधन मांगते,
और दुःख से दूर भागते,
विरले कोई निकले जो ये, सुख के साधन त्यागते,
और कष्ट कसौटी मांगते,
बरगद की छाया को छोड, रण के रस्ते तपने जाय
आज इसको दीजिए... १

धर्म के इस राह पर चलते, लोग भी हांफ जाते है,
और बीच में बैठ जाते हैं,
अभिनंदन इस मुमुक्षु को जो, लंबे सफर में निकले है,
और खुशी-खुशी से जाते है,
छोटा ऐसा बच्चा मानो, बडा हिमालय चढने जाय,
आज इसको दीजिए... २

राग-द्वेष के इस सिंधु में, सब ही जीव खिंचाते है,
और बीच में डुबकी खाते हैं,
अभिनंदन हो मुमुक्षु को जो, जल्दी-जल्दी जागे है,
और भवसिंधु से भागे है,
संयम के सहारे आज, भव का सिंधु तिरने जाय
आज इसको दीजिए... ३

142. माँ की ममता

(तर्ज - जाग रे मालण जाग)

याद आए मेरी माँ, याद आए मेरी माँ,
जनम दाता, जननी मेरी, याद आए मेरी मां... (२)

बोलना सीखा जब से मैंने, नवकार का पाठ देती,
जगडु, पेथड, भामाशाहों की, बातें कान में कहती,
कैसी संस्कारी माँ, कैसी उपकारी माँ...
जनम दाता जननी...१

घोर संसार से, तारने मुझको, दीक्षा स्वीकृति दीनी,
भवभयानक, जंगल की तो, राह छोडाय दीनी,
कैसी वैरागी माँ, कैसी है त्यागी माँ...
जनम दाता जननी... २

अभक्ष्य, टी.वी., ईन्टरनेट से, दूर ही मुझको रखा,
दूध धरम का ही पिलाया, स्वाद संयम का चखा,
कैसी हितस्वी माँ, कैसी तपस्वी मा..
जनम दाता जननी...३

जिसे अपने पुत्र के सिर्फ एक ही जन्म की परवाह है
ऐसी माताएं तो आपको घर-घर में दिखेंगी।
परन्तु जो अपने पुत्र के अनन्त काल की चिन्ता करती है
ऐसी श्राविका हजारों में एक ही होती है।
उसके दर्शन भी हो जाएं
तो समझो कि आपका जन्म सफल हो गया।

143. संयम झंखना

(तर्ज – क्यारे बनीश हुं साचो रे संत)

कभी बनुंगा मैं तो सच्चा रे संत ?
कभी होगा मेरे भव का रे अंत ?

लाख चौराशी के, चौक में अब तक,
भटक रहा हूँ मैं, मार्ग गलत पर,
कभी मिलेगा मुझे मुक्ति का पंथ ?
कभी होगा मेरे...१

काल अनादि की, भूल छूटे ना,
बहुत मथु तो भी, पाप खूटे ना,
कभी तोड़ूंगा इन पापों का तंत,
कभी होगा मेरे...२

षड्काय जीव की हिंसा मैं करता,
पाप अठारह कभी ना मैं भूलता,
मोह माया का ही मैं रटता हूँ मंत्र,
कभी होगा मेरे...३

संत के पास जाकर आप संत ना बन सको
तो शांत तो जरूर बनना ।
जिसके जीवन में शाश्वत वसंत ,
बस उसका ही नाम है 'संत'।

सम्यक ज्ञान प्रचार प्रसार सहायक (भायंदर)

- मितेश कुंदनमलजी मुथा
- सूर्या बेन मेहता
- रुचिता मोहित शाह
- भार्गव s. शाह
- बगलाबाई देवीचंदजी नगोत्रा सोलंकी (नोवी)
- दर्शना बेन महेंद्रभाई शाह (पामोल)
- योग हसमुख रमेशकुमार मुथा
- मोसमबेन प्रकाशभाई गडा (बोरिवली)
- नीव अमितभाई शालवी
- महेंद्रभाई मोहनलालजी जैन (सेवाडी)
- तीर्थ मेहुलभाई बगडीया
- दिलीप भाई कांतिलाल शाह
- एक सद्गृहस्थ
- जोशना बेन रमेशभाई शाह
- डिंपल हर्षद शाह
- हितेश मोहनलालजी साकरिया
- प्रकाश भाई चंडालिया
- कल्पेश भाई चंडालिया
- अजय अमरचंद नाहर
- डिंपल विरल शाह
- हिमांशु प्रकेशभाई जैन

हमारी अन्य पुस्तकें

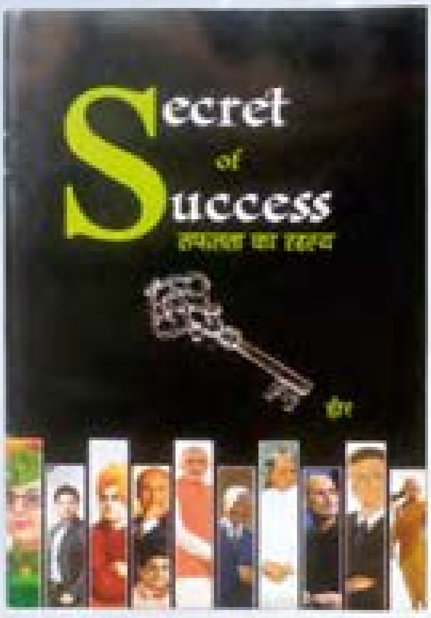

अगर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संपूर्ण सफलता प्राप्त करने के वास्तविक सिद्धांतों को सरलतापूर्वक समझना चाहते हो तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़े जिसका नाम है...

Secret of Success

सफलता का रहस्य

इस पुस्तक को Online download करने के लिए Log on करे...

www.Bhagwankajawab.com/sos.html

सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त करने के वास्तविक रहस्यों को बतानेवाली अद्भुत पुस्तक

Secret of Happiness

सुख का रहस्य

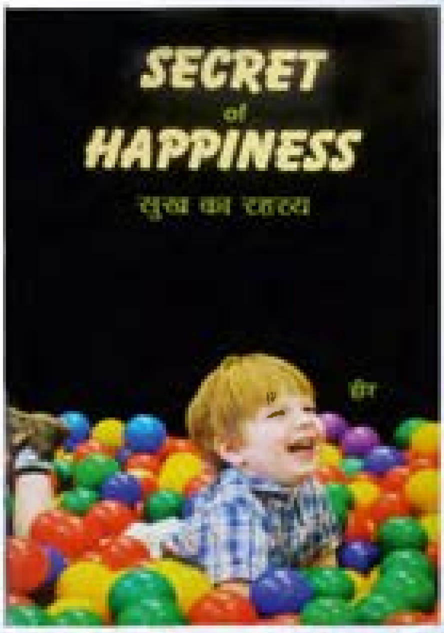

इस पुस्तक को Online download करने के लिए Log on करे...

www.Bhagwankajawab.com/soh.html

सौजन्य

श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

प्लाट नं. ९४, जी.आई.डी.सी. कोलोनी
उमरगाम, जिला – वलसाड (गुज.)

धर्मशाला, भोजनशाला, आयंबिलशाला
की सुविधा उपलब्ध है ।

संपर्क : 96027 79056

- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर - बीपी रोड, भायंदर (पूर्व)
- कांतिलाल तखतमलजी सिंघवी (भटार रोड, सुरत, बालोतरा)
- कुसुमबेन कीर्तिभाई शाह (उबलख)
- भवरीबेन वक्तावरमलजी तलेसरा (बिजोवा)
- संघवी मोहनलाल सोभागचंद परिवार (थराद)

इस पुस्तक में जो नवनिर्मित रचनाए है, उन्हें संगीत के साथ सुनना हो तथा Video के साथ देखना हो तो Youtube पर Bhagwan Ka Jawab चेनल अवश्य सर्च करें ।

Website : www.Bhagwankajawab.com

Bhagwan ka jawab

हमारे वोट्सएप ग्रुप से जुडने के लिये : +91 88663 55762 नंबर पर Join me in B.K.J. लिखकर मेसेज करें ।